CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

व्यापार-विज्ञान

ॐ

प्रथम भाग

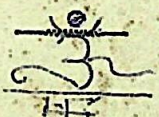

लेखक- दैवज्ञ शिरोमणि—
पं० विशुद्धानन्द गौड़ ज्योतिषाचार्यः
सम्पादक—'विज्ञान ज्योतिः' मासिक पत्र
खुरजा (बुलन्दशहर)

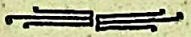

प्रकाशकः—
विज्ञान ज्योतिः कार्य्यालय,
नवलपुरा—खुरजा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

व्यापार-विज्ञान

प्रथम भाग

लेखक- दैवज्ञ शिरोमणि—
पं० विशुद्धानन्द गौड़ ज्योतिषाचार्यः
सम्पादक—'विज्ञान ज्योति' मासिक पत्र
सह सम्पादक—
कृष्णा कुमार गौड़

प्रथम बार
२१००

विक्रमी सं० २०१३

मूल्य
५)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाशक—
विज्ञान ज्योतिः कार्य्यालय
खुरजा
(बुलन्दशहर)

२०१३ विक्रमी

गुण-शशि-नभ-नेत्र-विक्रमे-वत्सरेऽस्मिन् ।
मम-वसतिरिदानीमत्र-खुर्जा नगर्याम् ॥
प्रथम-कुसुमकं-व्या-पार – विज्ञान ग्रन्थम् ।
समभवदिहपूर्णं श्रावणे-पूर्णिमायाम् ॥

सर्वाधिकार सुरक्षित
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* ग्रन्थकारपरिचयः *

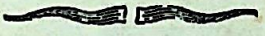

काश्यां स्वकीयगुणवर्धितचारुकीर्ते-
र्मिश्राभिधेयबलदेवगुरोः प्रसादात् ।
लब्धा मया गणितशास्त्रप्रधानविद्या,
हृद्या भवेद्धि विदुषां भुवि सद्य एव ॥१॥

यस्याङ्कुतैर्गुणगणैर्गणनाविशिष्टै
र्वाराणसीविबुधवन्दितवन्द्यभावा ।
सा भारती विजयते सुचिरं प्रसन्ना,
सोऽयं गुरुर्विजयतां बलदेवमिश्रः ॥२॥

पितामहोहोम विधानविज्ञो,
वेदान्तदान्तोऽपि चिरं रसज्ञः ।
विशिष्ट शिष्यैः प्रथितोरुकर्मा,
लेभे यशः श्रीबलदेवशर्मा ॥३॥

सुवासः 'कण्डेरा' लसति 'मयराष्ट्रे' ऽतिविदितः,
कुले धर्मज्ञानामजनि 'बलदेवो' ऽमरसमः ।
ततो जातास्तस्य प्रथितयशसः पञ्च तनयाः,
द्वितीयस्तन्मध्ये विमलगुणयुक्तो मम पिता ॥४॥

बहोरीलालपुत्रेण, तातपादोपजीविना ।
मया त्वलेखि विज्ञानं—विशुद्धानन्दशर्मणा ॥५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री हीरालाल जी
पो० धरंगधरा (सौराष्ट्र)

* प्रशस्ति और शुभकामना *

हीरालालो-धिमल-यशसा-राजतेऽसौ-गुणज्ञः ।
जीव्यादब्दं-भुवि-शतसमं-पण्डितानां-हितैषी ॥
विज्ञानस्य - प्रथमकुसुमं - सादरं -- ते -- करेषु ।
दत्वा--मोदात्प्रमुदित -मनाः-साधुवाददामि ॥१॥

समर्पकः—
विशुद्धानन्द गौड़, ज्यौतिषाचार्यः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समर्पण

प्रिय पाठक वृन्द !

प्रस्तुत पुस्तक व्यापार विज्ञान का प्रथम भाग हम श्री हीरालाल जी, मु पो० धरंगधरा सौराष्ट्र गुजरात निवासी महोदय के कर-कमलों में सादर समर्पित करते हैं, आप १० वर्ष से जब से विज्ञान ज्योतिः निकला है, तभी से पत्र की सफलता की बराबर कामना रखते हैं आप हमारे ज्यौतिष के सभी साहित्य को बड़े चावसे पढ़ते हैं और अनुराग रखते आये हैं अमेरिका स्थित ज्यौतिष के विद्वानों की समिति के भी आप सदस्य हैं, दक्षिण भारतीय ज्यौतिष परिषद् के भी जो बम्बई में स्थित है आप सदस्य हैं हमारी उत्तर भारतीय ज्यौतिष परिषद् जिसका कि मैं प्रधान मन्त्री हूँ और पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य सम्पादक श्री स्वाध्याय सोलन शिमला, महोदय जिसके सभापति हैं। इस परिषद् के भी आप सदस्य बन चुके हैं। हमारे ज्यौतिष सम्बन्धी प्रकाशन में भी आपका सहयोग रहता है। श्री स्वाध्याय को भी बल देने में आप ध्यान रखते हैं ऐसे गुण ग्राही विज्ञानानुरागी सज्जन की सेवा में यह व्यापार विज्ञान समर्पित करते हुये हमें प्रसन्नता इस वास्ते है कि आपके सहयोग से हमारा भावि प्रकाशन शीघ्र प्रकाशित होकर देश की सेवा करने जा रहा है। हमें आशा है कि आप जिस प्रकार देश के प्रसिद्ध विद्वान् ज्यौतिषाचार्य श्री मीठा लाल व्यास जी से अपना सम्पर्क बना चुके हैं और श्री स्वाध्याय तथा विज्ञान ज्योतिः को भी आदर दिएहैं। अब हमारे भावि प्रकाशन को भी पूरा बल देकर हमारा उत्साह बढ़ावेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो शब्द

प्रिय पाठक वृन्द !

यह प्रस्तुत पुस्तक "व्यापार विज्ञान" का प्रथम भाग है इसमें व्यापार सम्बन्धी योगों का वर्णन है जिनके द्वारा जानकारी से व्यापार में व्यापारी वर्ग अपना व्यापार सर्वथा लाभ का बना सकते हैं ज्योतिष शास्त्र में गणित विद्या द्वारा सूर्यादि ग्रहों की चाल वक्री, मार्गी अति चारि ग्रहणादि व्यवस्था को जानकर आगे के वर्षों में आगे के उत्पात शुभाशुभ योग तेजी, मन्दी, के चांस दुर्भिक्ष सुर्भिक्ष का ब्योरा समय की गति विधि जानकर मनुष्य अपने जीवन को एक प्रकाश में ले जाकर उन्नति के पथ पर अग्रगामी हों सकता है। आज का युग विज्ञान का ही युग है अपना भी जितना प्रकाशन है वह प्राचीन विज्ञान को आधुनिक युग के लिए उपयोगी बनाकर भारतीय विज्ञान को जनहित के वास्ते प्रकाश में लाता है।

धान्य-धातु-कपास-रुई-पाट-वारदाना-सरसों-अलसी-अन्डी किराना लोहे की चीजें, घृत, तेल, कपड़ा रेशम, अनेक प्रकार के व्यापार सम्बन्धी योगों को बताने वाले व्यापार विज्ञान का यह पहला भाग है अभी दूसरा भाग प्रकाशित नही हुआ है जब हम प्रस्तुत पुस्तक की रचना करने लगें तो अनेक योगों के बुद्धि के फैलाव से उपस्थिति होने पर इस समय तक जितना विषय लिखा गया है उसका नाम व्यापार विज्ञान प्रथम भाग रखकर पाठकों की सेवा में यह व्यापार विज्ञान लाया गया है वृष्टि-विज्ञान द्वारा व्यापार की जानकारी एवं अन्य भी ग्रहों के विचित्र योगों द्वारा व्यापार सम्बन्धी जानकारी का विषय अभी क्रमशः दूसरे तीसरे भागों में आना है अभी हम कुछ नहीं कह सकते हैं कि हमारी बुद्धि का घुमाव किस प्रकार के ज्यौतिष सम्बन्धी साहित्य का संकलन करेगा परन्तु यह निश्चित है कि अब क्रमशः अनेक वैज्ञानिक विषयों को सरलता के साथ हम जनता के सामने लाने का प्रयत्न कर रहे हैं जन साधारण से भी निवेदन है कि वे हमारे इस प्रकार के प्रकाशन में हमें सहयोग देने की कृपा रखते रहें। निवेदक—विशुद्धानन्द गौड़, ज्यौतिषाचार्यः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमिका

"व्यापार-विज्ञान" का यह प्रथम भाग बहुत ही उपयोगी विषय है। व्यापारी वर्ग के हितार्थ एवम् सर्व साधारण की जानकारी के वास्ते भी जो अपने जीवन में एक उपयोगी अर्थ लाभ कारी विषय है। उसकी उपयोगिता को सिद्ध करता है। लेखक विद्वान् पं० विशुद्धानन्द गौड़ ज्यौतिषाचार्य मेरे पुराने मित्र हैं। श्री राधा कृष्ण संस्कृत कालेज खुरजा के ज्यौतिष विभाग के आप १२ वर्ष तक अध्यक्ष भी रह चुके हैं अनेक ग्रंथों के रचयिता ग्रन्थकार ही आप केवल नहीं हैं बल्कि ज्यौतिष सम्बन्धी मासिक पत्र जोकि भारतवर्ष भर में हिन्दी में ज्यौतिष का एक मात्र प्रतिष्ठित पत्र विज्ञान ज्योतिः है उसको आप ११ वर्ष से बड़ी क्षमता के साथ चला रहे हैं। चिन्तादलन जंत्री भी १२ वर्ष से आपके द्वारा प्रगति के साथ चल रही है।

आपकी भाषण कला-एवम् ज्यौतिष शास्त्र सम्बन्धी अध्यापन कला वर्षों से प्रशंसनीय चली आ रही है असंख्य छात्र आप द्वारा अध्यापित होकर विभिन्न प्रान्तों में अपना ज्यौतिष का व्यवसाय बड़ी प्रतिष्ठा के साथ कर रहे हैं, संस्कृत जगत् ही आप की सेवाओं से न केवल परिचित है। अपितु समस्त भारत वर्ष का व्यापारी वर्ग भी आपके नाम से परिचित हैं। आपकी ज्यौतिष शास्त्र सम्बन्धी सेवाओं से प्रसन्न होकर अखिल भारत वर्षी संस्कृत प्रचारक मण्डल दिल्ली के सप्तम अधिवेशन पर मण्डल ने आपको लोक सभा के अध्यक्ष श्री अनन्त शयनम आयंगर महोदय द्वारा "दैवज्ञशिरोमणि" की भी उपाधि से विभूषित किया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेरे विचार से इस पुस्तक को और भी उत्तम बनाया जा सकता था परन्तु थोड़े से समय में जितना भी विषय बनाया जा सका है उसको प्रथम भाग के नाम से व्यवहृत करना इस वास्ते उपयोगी है कि समय बचेगा और जनता इस विषय से लाभ उठायेगी और बहुत बड़ा कलेवर भी अच्छा नही रहेगा।

प्रस्तुत पुस्तक में शास्त्रीय रचना श्लोक बद्ध कविता में ग्रन्थ को परिष्कृत करना विद्वान् लेखक की विद्वत्ता का पूर्ण परिचय कराती है। ऐसे उपयोगी ज्यौतिष के ग्रन्थों की देश को बड़ी भारी आवश्वकता है, आशा है आपके द्वारा अन्यान्य ग्रन्थ भी शीघ्र प्रकाशित होंगे। अब केवल इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि।

हेम्नः संलक्ष्यतेह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापिवा।
तं-सन्तः श्रोतुमर्हन्ति, सदसद् व्यक्तिहेतवः॥
(कालिदासः)

ब्रह्मानंद शुक्ल गौड़

१५-८-५६ ई०

व्याकरणालङ्कार शास्त्री,
काव्यतीर्थ, साहित्याचार्य, कविरत्न,
साहित्य विभागाध्यक्ष
श्री राधाकृष्ण संस्कृत कालिज खुर्जा, सी० टी०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुद्धि--पत्रम्

अशुद्ध —	शुद्ध —	पृष्ट	पंक्तिः
मर्णियदि	मणिर्यदि	४०	८
असन्नगो	आसन्नगो	४०	६
आंशो	अंशो	४३	७
धीमन	धीमन्	४७	८
शुभेच	शुभैश्च	४६	१२
बुधस्तेयुक्तो	बुधस्तेजोयुक्तो	५१	६
प्रपशयेत	प्रपश्येत्	५३	६
स्थतो	स्थितो	५३	१०
सुभिक्षम्	सुभिक्षम्	५८	५
क्षितिपान् तथापि	क्षितिपॉस्तथापि	५६	८
भवतीहमान्यम्	भवतीहमान्यम्	६२	१८
कापासस्य	कार्पासस्य	६६	१
महर्घम्	महर्घम्	६८	१
विचित्त्य	विचिन्त्य	६८	३
समघकम्	समर्घकम्	६८	६
कापीसस्य	कर्पासस्य	७१	५
समघम्	समर्घम्	७७	२
मजिष्टं	मंजिष्टं	७७	६
राशि	राशिं	८५	१०
यान्त	यान्ति	१०४	७
सदेव	सदैव	१०४	८
कपास-वस्तु	कपास-गोषु	१०८	१०
कुरुत्ते	कुरुते	११३	२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अशुद्ध —	शुद्ध —	पृष्ट	पंक्ति
पुष्प	पुष्पे	११५	५
चात्यनुराधा	चाप्यनुराधा	११६	६
समुनिते	समुदिते	११६	१३
पूर्व	पूर्वं	११६	१५
भवान्ति	भवन्ति	११७	८
महर्गभेव	महर्घमेव	११७	१६
द्वारे	द्वारे	११७	३
कायाम	कायाम्	१२०	४
सर्षष	सर्षप	१२६	१६
चूडामणिश्शुभु	चूडामणिश्शुभ्र	१३६	१५
सम्वत्सर २०१२	सम्बत्सर २०१४	१३७	५
निपाति	निहन्ति	१४४	७
अथोचोर्ध्व	अथश्चोर्ध्व	१४४	११
गति च	गतिं च	२१२	६
तुनायां	तुलायां	२१३	६
यदत्यान्ति	यदायान्ति	२१६	६
मतुल	मतुलं	२१७	२

प्रार्थनाः—

एतत्पत्रानुसारेण-सर्वं-संशोध्य यत्नतः।
प्रथमं-पाठ कैः प्रेम्णा - पठनीयमिदंततः ॥१॥
अन्या अपि प्रमादाद्वा-दृग्दोषात्-सन्त्यशुद्धयः।
विज्ञैस्ताश्चाँपि संशोध्या इति प्रार्थयते मुहुः ॥२॥

—सम्पादक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री गणेशायनमः

व्यापार-विज्ञान

काव्याटवीविहरणप्रिय मानसानाम्
लोकोत्तर प्रथित कीर्ति कलाभि भा जाम् ।१।
सन्मान से विहरिणि कवि कोकिलानाम्
वाग्देवता सपदि मे सुगिरं व्यनक्तु ॥ २ ॥

विपन्नाशकं तोषकं सज्जनानाम्
सुखंदर्शयन्तं सुधा मज्जनानाम्
सदा दुःखसंदोह दोलायमानाः ।
जनाः यंभजन्ते भजे तंगणेशम् ॥१॥

व्यापार-ज्ञापन-पराः वहु सन्ति-ग्रन्थाः ।
वाराह-गर्ग-भृगुरार्य-मुनि प्रणीताः ॥
आलोक्य-सुन्दर-मता न्यचिर-प्रवोधम् ।
व्यापार साधन परं-परितःप्रकाशम् ॥ ३ ॥

कुर्वेऽत्रग्रन्थ रचनां-सरलां सुवोधाम् ।
व्यापार--वोधनपरां--विदुषां--हिताय ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्येऽधु नात्र सफलं-स्वकृतं विशेषात्।
लाभो भवेद्यदि सतां-विणिजां-जनानाम् ॥४॥

अर्थः—व्यापार-ज्ञान को बताने वाले ज्योतिष शास्त्र में बराह। मिहिर-गर्गभृगु आदि आचार्यों के बताये हुये-अनेक ग्रन्थ है सभी ग्रन्थों के मुख्य मुख्य मतों को लेकर आधुनिक युग के अनुसार व्यापार के भविष्य को बताने वाले व्यापार विज्ञान-ग्रन्थ की रचना को विद्वानों एवं व्यापरियों के हित के वास्ते आरम्भ करता हूँ। और आशा करता हूँ। कि यदि व्यापारियों एवं विद्वानों का यदि इससे हित और लाभ हुवा तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा। सबसे मंद गति ग्रह शनि है जो ढाई बर्ष तक एक राशि पर रहता है यहाँ आरम्भ में शनि के सम्बन्ध से व्यापार सम्बन्धि योगों पर प्रकाश डालते हैं।

मेष आदि राशियों पर शनि व्यापार में क्या फल करता है

१- जब मेष राशि पर शनि आया करता है तो सोना, चाँदी ताम्बा धातु बाना सभी महंगे होते हैं। मोती पुखराज नीलम आदि रत्नों में, अच्छी तेजी के योग बना करते हैं। गल्ला, तिलहन पर भी तेजी के योग बना करते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परन्तु जब शनि मेष राशि पर उतरने लगता है वहाँ गल्ले और तिलहन में अच्छी मन्दियां आया करती हैं मेष राशि के आखिर के २॥ मास में मन्दियाँ होने पर गल्ला तिलहन का स्टाक अच्छा कर लेना चाहिये।

अश्विनी और भरणी तथा कृतिका के चरण की मेष राशि होती है अश्विनी नक्षत्र में शनि तिल तेल तथा धातु वा ने में तेजी करके १ मास बाद ही मन्दी करता है भरणी नक्षत्र में शनि राजाओं में विग्रह करता है कृतिका में सुभिक्ष कारक होता है इस वास्ते २॥ महिने आखीर के मेष राशि के शनि के मन्दी कारक होते हैं।

२ जब वृष राशि में शनि आता है तो पशुओं में काफी तेजी होती हैं घास और सातों धान्य और हर प्रकार की तिलहन में मोटी तेजीयाँ आया करती हैं। सातों धान्य रुई, पाट वारदाना भी अछी तेजी पकड़ते हैं परन्तु वृष राशि के शनि के आखीर ६ मासों में अच्छी मन्दीयां सभी जिन्सों में आ जाती है। शनि वृष राशि में आरम्भ के २॥ मास तक तो खास तेजी नहीं किया करता है बाद २॥ मास के सभी प्रकार के धान्य तेज होने लग जाते हैं वृष राशि में कृति का नक्षत्र के तीन चरणों में ही सुभिक्ष समझना चाहिए, रोहिणी और मगशिरा नक्षत्र का आधा भाग अछी तेजी में जाया करता है सोना चांदी में वस्त्रों में हाथी घोड़ों में अच्छी तेजी आती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३- मिथुन राशि पर शनि कुछ खराब हुआ करता है। दुर्भिक्ष कारक राज विग्रह कारक एवं व्यापार सम्बधि हरेक जिन्सों में तेजी के योग ज्यादातर बना करते हैं अच्छी घटा बढ़ी के योग हुआ करते हैं, मृगशिरा का आधा भाग आर्द्रा नक्षत्र में सम्पूर्ण पुनर्वसु के तीन चरणों में शनि वृष राशि में रहता है आर्द्रा नक्षत्र में सातों धान्य संग्रह करना चाहिये दूसरे तीसरे मास में ही दुगुना तिगुना लाभ हो, आर्द्रा के शनि में व्यापारिक जिन्सों की खरीद पुनः शनि में ही दुगना तिगुना लाभ देती है—पाट-वारदाना रुई में अच्छी तेजी होती है।

(४) कर्क राशि का शनि दक्षिण और मध्य देश के वास्ते हानिकारक हुआ करता है। अन्य देशों में केवल साधारण विग्रह ही हुआ करती है पुनर्वसु का चौथा चरण पुष्य श्लेषा येनक्षत्र कर्क राशि के होते हैं, पुष्य के शनि में तिलहन और गल्ला तथा पाट-वारदाना-रूई का स्टाक करना बहुत जरूरी है श्लेषा के शनि में वर्षा की खेंच हो जाती है मोटा नफा मिलता है व्यापारियों को यह चाँस नोट कर लेना चाहिये।

आश्लेषायाँ यदासौरिस्तदा वृष्टिर्नजायते।
धान्यानाँ पट्टवस्त्राणाँ तिल तैल महर्घता॥१॥

इस वास्ते पुष्प के शनि में माल का संग्रह करके श्लेषा के शनि में बेचने से मोटा लाभ हुआ करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(५) सिंह राशि पर शनि गल्ला-तिलहन में तो मन्दी के योग बनाया करता है परन्तु-गुड़-घृत-तेल के भावों में तेजी कारक रहा करता है मघा नक्षत्र पूर्वा फाल्गुनी उत्तर फाल्गुनी का प्रथम चरण सिंह राशि में है चतुष्पदों के व्यापार से लाभ होता है धान्यों को उत्पत्ति अच्छी होती है। अतः मन्दी के योग बनानेपर पूर्वा फाल्गुनी के शनि में धान्यों का संग्रह करके उत्तरा फाल्गुनी के शनि में बेचने से लाभ होता है।

(६) कन्या राशि में शनि वर्षा की खैंच किया करता है। वायु का वेग बढ़ता है कन्या राशि के नक्षत्र, उत्तरा फाल्गुनी के तीन चरण होते हैं और चित्रा का आधा भाग होता है जो कि पशुओं के वास्ते हानि कारक तृण का नाश करने वाले नक्षत्र है, वर्षा का अवरोध होता है।

(७) तुला राशि में शनि होने से देश में अग्नि काण्ड होते हैं धान्यों का संग्रह करना चाहिये। स्वाति के शनि में बेचने से नफा मिला करता है। स्वाति की अपेक्षा विशाखा के शनि में बेचने से मोटा नफा मिलता है, विशाखा नक्षत्र में शनि होने पर चावल, गेहूँ की फसल की खराबी हो जाती है इस वास्ते मार्केट अचानक तेजियाँ पकड़ जाते हैं। रुई, पाट, बारदाना भी काफी महंगा होता है वर्षा की कमी ही तेजी का कारण बना करती है यही धारणा रखकर व्यापार करना चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(८) वृश्चिक राशि के शनि में भी व्यापारिक जिन्सों में भावों में घटा बढ़ी अच्छी हुआ करती है। तेजियाँ ज्यादा होती हैं सभी व्यापारिक जिन्सोंमें तेजी के योग बना करते हैं धान्य प्रायः सभी महंगे होते हैं परन्तु चित्रा के दो चरणों में जब तक शनि योग रखताहै सभी जिन्सें मन्दी रहा करतीहैं उस समय माल खरीद लेना चाहिये वर्षा सुभिक्ष के योग बने रहते हैं उस समय मन्दे में खरीदना ठीक होता है। बाद में वृश्चिक के शनि में तूफान झंझावात वायु का वेग बढ़ा करता है। देश में उपद्रव भी हुआ करते हैं। अनेक कारण तेजियों के व्यापारिक जिंसों में जुटे बिना नहीं रहते हैं हर जिंस में तेजी के वातावरण बनते हैं। अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र पर शनि जब वृश्चिक राशि में चलता है तो पश्चिमी देशों में उपद्रव पूर्वी प्रान्तों में अति वर्षण एवं मध्य प्रदेशों में रोगोपद्रव हुआ करते हैं। परिणाम तेजियों का बना करता है।

(९) धन राशि में जब शनि आता है तो वर्षा की कमी किया करता है। घास और अनाजों में सातों ही धान्यों में तेजियाँ बना करती हैं। लकड़ी कोयला भी अच्छे तेज हो जाते हैं। रसादि पदार्थ सभी तेज हो जाते हैं। मूल तथा पूर्वाषाढ़ नक्षत्र एवं उत्तराषाढ़ा के प्रथम चरण में शनि रहने से धन राशि का ही रहता है जोकि १॥ वर्षों में ७ महीने आरम्भ के बड़ी तेजी में गुजरते हैं बाद में वर्षा के कहीं कहीं योग भी बन जाते हैं तथा देश में नहरों द्वारा ही सिंचाई के साधनों से कार्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधिक बनता है।

(१०) मकर राशि में जब शनि आता है तब आधा टाइम सुभिक्ष में आधा दुर्भिक्ष में गुजर जाता है। आरम्भ में श्रवण नक्षत्र पर शनि जब तक रहता है तब तक वर्षा सुभिक्ष बना रहता है। धनिष्ठा में और शत भिषा नक्षत्र अवर्षण तथा हर वस्तु के मार्केट अच्छी तेजी में हो जाते हैं। इस वास्ते सभी व्यापारिक जिन्सों का संग्रह आधे समय में श्रवण नक्षत्र में जब तक शनि रहे, कर लेना चाहिये बाद में बेचने से नफे होते हैं।

(११) कुम्भ राशि में शनि जब तक रहता है तब आरम्भ का १ वर्ष तो तेजी में गुजरा करता है बाकी डेढ़ वर्ष का समय हर व्यापारिक जिन्सों में मन्दी के चांसों में गुजरता है। पूर्वा भाद्र पदा नक्षत्र में शनि रहने से रुई, पाट, बारदाने में गल्ले तथा रसादि पदार्थों में तेजियां होती हैं, यहाँ यह ध्यान रखना चाहिये कि कुम्भ राशि का आखरी डेढ़ वर्ष मन्दी में जाकर जब मीन राशि के नक्षत्र में शनि प्रवेश करता है तो मन्दी की तरफ मार्केटों के रुख बनने लगते हैं।

(१२) जब मीन राशि में शनि पहुँचता है तो सुभिक्ष कारक होता है हर एक व्यापारिक जिन्सों में मन्दी का वातावरण बनता है। यह मन्दी केवल ६ मास तक ही रहती है। उत्तरा भाद्रपदा तथा रेवती में शनि वर्षा की कमी तथा देश में उपद्रव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अराजकता तथा जनता में रोगोपद्रव पीड़ा होती हैं। हर वस्तु के मार्केट तेजी में हो जाते हैं।

शनि का उदय व्यापार में क्या फल करता है

(१) मेष राशी पर शनि उदय होने से मंगल के घर में अपनी नीचराशि में शनिका उदय व्यापारिक जिन्सों में बड़ी उथल पुथल किया करता है वर्षा के योग अच्छे बना करते हैं मार्केट में अचानक मन्दियों का जोर बढ़ जाता है। सुभिक्षकारी होता है जनता में सुख की लहर फैलती है। याद रखियेगा कि मन्दी में हर वस्तु संग्रह करके बाद में बेचने से नफा देती है।

(२) वृष राशि पर शनि का उदय होने से खाण्ड, गुड़, शक्कर में ईक्षवादि पदार्थों में बड़ी तेजियां बना करती हैं। रसादि पदार्थ सभी तेज हो जाते हैं। गल्ले भी महंगे होते हैं। तृण, घास, लकड़ी चौपायों की महँगाई बढ़ती हैं।

(३) मिथुन में शनि का उदय अच्छी उत्तम वर्षा कारक होता है। जनता में नीरोगता वस्तुओं में मन्दापन एवं राजाओं में भी प्रेमबढ़ता है। सभी धान्यों में मन्दीं के योग बन जाया करते हैं। मन्दी में संग्रह करना ठीक है।

(४) कर्क में शनि उदय होने पर वर्षा की खेंच करता है। सभी व्यापारिक जिंसों में मार्केट अच्छी तेजी में पहुँचते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धान्यों में रसादि पदार्थों में अच्छी तेजी चमकती है। रुई, पाट, बारदाने में काफी तेजी बना करती है। जनता में उपद्रव अराजकता रोगोपद्रव होता है मिथुन के शनि के उदय के समय में सरसों का स्टाक तिलहन का स्टाक रुई, पाट, बारदाने का किया हुआ स्टाक यदि कर्क के शनि के उदय के समय में बेचा जाय तो बहुत नफा मिलता है।

(५) सिंह राशि में शनि के उदय होने से वर्षा की कहीं कहीं कमी और कहीं ज्यादा वर्षा होती है इससे फसलों में हानि के योग बन जाते हैं मार्केटों में अच्छी तेजियों के योग बनते हैं। जनता में अशान्ति का वातावरण बनता है।

(६) कन्या राशि में शनि का उदय वर्षा की कमी तथा व्यापारिक वस्तुओं की मांग बढ़ने से तेजियों के वातावरण बनते हैं। रसादि पदार्थ विशेषकर तेज हो जाते हैं। किन्तु धान्य मन्दे ही बने रहते हैं। शेयर्स, उड़द, तिलहन भी तेज होते हैं।

(७) तुला का शनि उदय हो वे तोकहीं २ वर्षा की कमी हो धान्य महंगे हों --रसादिपदार्थ तेज हों। घृत, तेल तेज हों।

(८) वृश्चिक में शनि उदय हो तो तेजियों के योग बनाता है तूफान खड़ा कर देता है अचानक मार्केट भड़क जाया करते हैं। रुई - पाट - बारदाना तथा गुड़ शक्कर गल्ले तथा तिलहन में तेजियां होती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(९) धन राशि में शनि उदय होने से जनता में रोगोपद्रव बढ़ता है। प्रजा में अशांति तथा व्यापारिक जिंसों में तेजियाँ होती हैं। सभी धान्य रसादि पदार्थ तेज होते हैं।

(१०) मकर में शनि का उदय होना भी तेजी कारक होता है। जनता में अराजकता बढ़ती है। धान्य भाव मन्दे होते हैं।

(११) कुम्भ के शनि में अच्छी वर्षा होने पर भी फसलों में कीड़ा लग जाता है। डिड्डियों के उपद्रव बढ़ जाते हैं। अतः धान्य कम सिकरने से तेजियाँ होती हैं।

(१२) मीन राशि में भी धान्य भाव महंगे होते हैं।

शनिग्रह की अस्तकालिक अवस्था

(१) मेष राशि पर जब शनि ग्रह अस्त होता है तो चावल सभी प्रकार के धान्यों में अच्छी घटाबढ़ी होकर तेजियां गल्ले व्यापार में बना करती हैं। रुई शेयर्स सोना-चाँदी-पाट-वारदाने में मन्दी के योग बना करते हैं। लोहे और सरसों तथा तिलहन एवं रसादि पदार्थ में भी तेजियां हुआ करती हैं यदि अस्त हो जाने से पहिले तिलहन में किसी और ग्रह के कारण तेजियां आ चुकी हों तो शनि के अस्त होने के बाद तिलहन का मार्केट मन्दी में और यदि अस्त होने से पूर्व तिलहन के मार्केट में मन्दियां आ चुकी हों तो शनि के अस्त होने के बाद तेजियां ही हुआ करती हैं, प्रायः शनि के अस्त काल में वर्षा, वायु,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तूफान भी हो जाते हैं जिससे फसलों की हानियां होने से तेजियों का अचानक ही वातावरण बन जाता है।

(२) वृष राशि में शनि अस्त होता है तब पशुओं में रोग वर्षा की कमी, तृण घास मँहगे, चाँदी सोने में अच्छी घटाबढ़ी होती है, श्वेत वस्तुओं में तेजी, रसादि पदार्थों में तेजी, व्यापारिक सभी वस्तुओं में अच्छी घटाबढ़ी के योग बना करते हैं। रुई, पाट बारदाने में तथा तिलहन में मिश्रित रुख बना करता है।

(३) मिथुन राशि पर शनि का अस्त होना सभी व्यापारिक वस्तुओं के भावों में मिश्रित रुख बनाया करता है, घटाबढ़ी काफी अच्छी होती है परन्तु दुतर्फा लाइन बनी रहा करती हैं एक तरफा लाइन कम बनती है।

(४) कर्क राशि पर शनि का अस्त होना सोना, चाँदी, रुई, पाट. बारदाने में तेजियों को बढ़ाता है, सातों प्रकार के धान्य तिलहन, रसादि पदार्थ, घृत, आदि सभी व्यापारिक जिन्सों में अच्छी घटाबढ़ी के साथ तेजी का रुख रहता है वर्षा की कमी से एवँ राजनैतिक वातावरण के विक्षुब्ध हो जाने से भाव मँहगे हो जाते हैं।

(५) सिंह राशि पर शनि अस्त होने से जनता में महामारी तथा रोग फैल जाया करता है सोने चांदी धातु वाने में शेयर्स

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में तेजियां आ जाती हैं हानियां तथा ह्रास वस्तुओं का होता है इस वास्ते व्यापारिक जिन्सों में तेजियों का हिसाब बन जाया करता है।

(६) कन्या राशि में शनि के अस्त होने से सोना चांदी शेयर्स तथा सातों प्रकार के धान्यों में तेजियों के योग बना करते हैं चतुष्पदों की भी तो तेजियां होती हैं रुई–अन्डी–विठूल बारदाने में अच्छी घटा बढ़ी के साथ तेजियों के रुख बनते हैं।

(७) तुला राशी पर शनि अस्त होवे तो वर्षा की कमी रहने से अन्न की उत्पति में भी कुछ कमी हुवा करती है। यदि वर्षा काल में शनि तुला पर अस्त होतो वर्षा अच्छी हो जाने से सुभिक्ष भी बन जाया करता है जब की शनि पापग्रहों के साथ योग नहीं कर रहा है जब शनि अस्त होते समय शुभ ग्रहों के साथ हो पापग्रहों का योग शनि के साथ नही होता है और वर्षा ऋतु का समय हो तो निः सन्देह हर प्रकार के व्यापार में अच्छी वर्षा के योग बन जाने से सुभिक्ष का ही वातावरण बन जाता है ऐसे मन्दी के वातावरण में हर व्यापारिक जिंसों का स्टाक तथा खरीद करने से वृश्चिक के शनि में बेचने से दुगुना तिगुना मुनाफा होता है।

(८) वृश्चिक राशि का शनि जब अस्त होता है तो वर्षा के योग भी बनते हैं परन्तु झंझावात तथा तूफान तेज वायु का चलना एवं ईति दोष बढ़ जाया करता है। टिड्डियों का उपद्रव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बढ़ जाता है। इसी कारण व्यापारिक जिन्सों में तेजियों के योग बना करते हैं।

(९) धन राशि पर जब शनि अस्त होता है वर्षा अच्छी होती है। सुभिक्ष बढ़ता है। धान्य सातों ही मन्दे हो जाते हैं। रुई, पाट, बारदाने में तिलहन में अच्छी मन्दी का वातावरण बन जाता है। सुभिक्ष में सस्ताई बढ़ती है।

(१०) मकर राशि पर शनि अस्त होवे तब तो लोहे की सभी जिन्सों के भाव तेज हो जाते हैं। धातुवाने तथा शेयर्स के भावों में काफी तेजियाँ होती हैं। तिलहन और तेल का मार्केट भी अच्छी तेजी में बनता है। वायु का वेग वर्षा की अधिकता से कहीं वर्षा का बिल्कुल ही अभाव हो जाया करता है।

(११) कुम्भ राशि पर शनि अस्त होवे तो भी वर्षा की कमी रहती है। शीत की वृद्धि हुआ करती है। पशु पक्षियों की हानियाँ होती हैं। व्यापारिक जिन्सों में अच्छी घटा बढ़ी के साथ तेजियों का रुख ही बन जाता है।

(१२) मीन राशि पर शनि अस्त हो तो राजाओं में विग्रह मनुष्यों में पीड़ा, चौपायों में तेजियाँ तथा व्यापारिक जिन्सों में भी तेजियों का ही रुख रहा करता है।

नोट :—ये फलादेश स्वतन्त्र शनि का ही अपने स्वभाव गुण प्रकृति के अनुसार जो बना करता है वह दिया गया है। शनि की वैदूर्य मणि के समान कान्ति होती है। निर्मल किरणों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाला अण्डे के आकार का यह ग्रह होता है। इस शनि के ग्रह की कक्षा बहुत ऊँची है, यह स्वयं पाप ग्रह है। वाण तथा अलसी के पुष्प जैसा काफी नीला होकर जब यह दिखाई देता है तो सुभिक्ष कारक मन्दी कारक ही बना करता है किन्तु जब यह लाल पीला, काला रुख एवं भयंकर रूप में जब यह दिखाई देता है तो दुर्भिक्ष कारक तेजी कारक ही हुआ करता है जैसा कि शास्त्र में इसके लक्षण आते हैं-

वैडूर्य-कान्ति-विमलः शुभ कृत्प्रजानाम्।
वाणातसी - कुसुम-वर्ण - निभश्चशस्तः ॥
यंचापि - वर्णमुपगच्छति - तत्सवर्णान् ।
सूर्यात्मजः क्षपयतीति मुनिप्रवादः ॥१॥

अर्थ साफ है कि दूर वीक्षण यंत्र से देखने पर अण्डाकार शनि नील वर्ण का दिखाई यदि देगा तो शुभ रहेगा। अन्यथा अशुभ उत्पात कारक ही बना करता है। यहाँ यह बात भी समझने की अवश्य है कि शनि, मकर और कुम्भ राशि में अपने घर का ही होता है। श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपदा इन नक्षत्रों में यदि उत्तर दिशा में उदय होकर दिखाई देता है तो भी सुभिक्ष कारक तथा कल्याण कारी तथा मन्दी कारक हुआ करता है। यदि दक्षिण दिशा में उपरोक्त अपनी राशि के नक्षत्रों से यदि उदय होकर दिखाई देवे तो प्रजा में दुर्भिक्ष तथा राजा प्रजा में हानि तथा व्यापारिक जिन्सों में तेजी कारक ही हुआ करता है। जैसा कि शास्त्र में कहा है :—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रदक्षिणं तुन्नृक्षस्य यदि याति शनैश्चरः ।
प्रजा-राजा-विवर्द्धेत-सुभिक्षं पृथिवीतले ॥१॥
अपसव्यं-स्वीय-नक्षत्रा-दुदयं यदि गच्छति ।
प्रजा-राजा -विपद्येत-दुर्भिक्षं क्षयमेव च ॥२॥

अर्थ साफ है कि अपनी राशि के उपरोक्त नक्षत्रों से उत्तर दिशा में उदय होना शनि का अच्छा है और दक्षिण दिशा में उदय होना खराब है। साथ साथ उत्तर दिशा में भी उदय होते हुए यदि रुक्ष तथा पीला, नीला, काला, दिखाई देगा तो भी विशेष सुभिक्ष कारी नहीं होगा। और दक्षिण दिशा में यदि उपरोक्त नक्षत्रों से उदय होते समय यदि अलसी कुसुम के समान नीला दिखाई देगा तो विशेष खराब नहीं होगा। ऐसी अवस्था में मिश्रित रुख हो जाते हैं।

वायदा व्यापार पर ध्यान की बातें

व्यापार आज के युग में दो प्रकार का ही यहां चल रहा है (१) वायदा व्यापार और (२) दूसरा तैयार माल का व्यापार, दोनों ही व्यापार समझदारी नहीं रखने से खतरे के हैं और दोनों ही प्रकार के व्यापार समझदारी से किये जाने पर सुख देने वाले हैं वायदा व्यापार बहुत आगे की कोई निश्चित मिति पर डिलिवरी लेने देने की व्यवस्था निश्चित करके चेम्बर द्वारा लेने देने के अवसर पर यह व्यापार चलता है, राजनैतिक,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामाजिक एवं सुभिक्ष दुर्भिक्ष सम्बन्धि अनेक घटनाओं का इस पर असर पड़ता है मनोवृतियां भी उपज, खपत, निर्यात, और आयात की परिस्थितियों से बदलती रहती है. मनोवृतियों के बदलने से खरीद और बेच में व्यापारी पड़ जाते हैं. जिधर का जोर ज्यादा पड़ता है उधर ही तेजियां अथवा मन्दियां चल निकलती हैं यह चाल भावि रुख को निश्चित बना सकती हैं कि रुख किधर जावेगा लाइन किधर की है फिर भी व्यापार के कुछ नियम भी ऐसे हैं कि मैं यह लिखना उचित समझता हूं कि उन को पालन करना ही व्यापार में नफे को ही प्राप्त करना है।

किसी भी व्यापार में लाभ प्राप्त करने के लिये उसकी जानकारी प्राप्त करना चारों तरफ की स्थिति को भी समझना अपनी आर्थिक क्षमता योग्यता पर ध्यान रखना भी बहुत ही जरूरी है अन्यथा हानि को ही प्राप्त करना पड़ेगा, फिर भी हानि से बुद्धि में वैषम्य आ जाने से स्थिति बिगड़ने में आ सकती है अतः-

(१) अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार थोड़ा ही व्यापार करना चाहिए, चाहे तैय्यार हो चाहे वायदा हो अधिक मार्जन आपके पास यदि रहेगा तो आपको थोड़े सौदे को नफे का ही बनावेगा। नुकसान आपको नहीं लगेगा।

(२) व्यापार चाहे तैय्यार का हो अथवा वायदा का हो वह थोड़ा ही होना चाहिए। अपने काबू का। हमारे कार्यालय में आने वाले व्यापारियों के पत्रों से हम अनुभव कर रहे हैं कि व्यापारी अपनी शक्ति के बाहर सौदाकर लेते हैं और जब उनके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मार्केट खिलाफ चला तो परेशान होते हैं। नुकसान से सौदा काटते हैं। सबसे पहिला नियम हमारा यही समझना चाहिये कि अपना सौदा व्यापारी उतना ही करें जो उसको संभाल सकें।

(३) व्यापारियों का यह कहना कि आपका सहारा तो इसलिये लिया जाता है कि थोड़े समय में अधिक रुपया नहीं लगाकर अधिक लाभ प्राप्त कर लिया जाय। इस प्रश्न के लिये उत्तर में यह भी व्यापारियों को समझना चाहिये कि हमारे द्वारा चाँस तभी सफलता में आवेगा जब व्यापारी को लम्बी अथवा सीधी लाइन हमारे द्वारा मिल भी जायेगी तो ज्यादा सौदा किसी भी भाव में किया हुआ होने के बाद भी खिलाफत देखने में आ सकती है। यह अवसर भी कभी कभी सही सध भी जाता है कि खिलाफत बिल्कुल भी न देखने में आवे और उसी टाइम से मार्केट फेवर में चलने लगती है मगर यदि सौदा थोड़ा और काबू का ही हो तो कुछ खिलाफत से घबराहट नहीं होती है इस वास्ते काबू का व्यापार होना चाहिये।

(४) वायदा व्यापार को अति रूप में हर समय उसी पर उतारू रहने के रूप में स्थान देना निश्चय ही धोखा खाना है। व्यापारियों को तो अपनी पूंजी का ख्याल रखकर उतना ही सौदा करना चाहिये जितना कि उन्हें मुनाफा लेने का ख्याल हो तो वह उससे कुछ ज्यादा उस सौदे में खिलाफत भी देख सकें, अन्यथा सौदा हो जाने पर खिलाफ मार्केट की स्थिति में सटोरियों की रस्सा कशी में उसका सौदा कट जावेगा और कटे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छोटे सौदों का होना फिर बड़ा मुश्किल हो जाता है यदि सौदा कर भी लिया जाय और अपनी धारणा के खिलाफ मार्केट चलने लगे और यह जच जाय कि इसमें मार्केट का दबाव हमारे खिलाफ ज्यादा ही बन सकता है तो कुछ नुकसान से भी सौदा काटकर अलग हो जाना बुद्धिमानी है। यदि सौदा काटना आप के बसका नहीं है तो उसमें कभी किसी भी अवस्था में खिलाफत में तो दड़ा मिलना तो बहुत ही मूर्खता होती है। उस अवस्था में डबल सौदा और भी जान को आ जाता है ऐसी अवस्था में नुकसान उठाना पड़ता है।

(५) जिस वस्तु का स्टाक पिछला भी काफी से ज्यादा हो जो देश की रिपोर्ट से भी ज्ञात होता है उस वस्तु के फायदा व्यापार में खरीद का काम और जिस वस्तु का स्टाक माँग की अपेक्षा बहुत कम हो उसका बेचान का काम बहुत ही कम करना चाहिये। साथ साथ यदि किसी अज्ञात अवस्था में आप सौदा कर भी लेवें और मार्केट सौदा करने के बाद ही आपके खिलाफ चलने लगे तो उसमें ।=) ।) फी मन पर तो रिस्क देखनी भी चाहिये क्योंकि मार्केट घटा बढ़ी तो लेता ही है। फिर भी मार्केट ज्यादा खिलाफत लेवे तो थोड़ा बहुत नुकसान ।।) ।।=) मन का ही लग जाने पर मार्केट से अलग ही हो जाना चाहिए। ज्यादा नुकसान उठाना भी गलती होती है। नुकसान का नहीं देखना भी गलती है। ज्यादा नुकसान बढ़ाते जाना भी गलती है जब कि आपकी गुन्जाइश ३) मन का नुकसान देखने की नहीं है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कभी कभी ऐसा भी होता है कि अपनी भी धारणा के खिलाफ भी मार्केट ज्यादा चला जाता है;

(६) यदि खरीदे सौदे में तेजी की और बेचे हुए सौदे में मन्दी की तरफ आपके माफिक बाजार चलने लगे तो सौदा अन्तर के साथ हिसाब से उस अवस्था में जरूर डबल कर देना चाहिए जबकि आप की धारणा अच्छी तेजी की अथवा अच्छी मन्दी की हो और मार्केट की रफ्तार भी उसी दिशा में बह रही हो जिस दिशा में कि आपका व्यापार है। उस अवस्था में डबल किये हुए सौदों को निश्चित तेजी अथवा निश्चित मन्दी जो आपको जची थी उससे पहिले ही अपना सौदा उठा लेना चाहिए क्योंकि तेजी और मन्दी का वक्र जल्दी से लौट भी जाया करता है।

(७) जब बाजार भाव वायदा के अच्छी तेजी ले चुके हों और मार्केट में तेजी ही तेजी में सबके दिमाग हों और मार्केट में खाऊँ खाऊँ की ही आवाज बुलन्द हो और ग्रह चाल के हिसाब से भी हमारी तेजी की लाइन खत्म होती हो उस समय जरा साहस के साथ माल बेचने में ही लाभ होता है और जिस समय मार्केट अच्छी और जरूरत से ज्यादा मन्दी ले चुका हों और चारों तरफ बेचूँ बेचूँ की ही आवाज बुलन्द हो तो ऐसे अवसर में माल जरूरी खरीदना ही चाहिए।

(८) हमेशा समय के साथ बाजार के रुख के साथ चलने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का भी ध्यान जरूरी रखना चाहिए समय भी व्यौपारी का साथ दे जाय तो व्यौपारी सफलता अच्छी ले लेता है।

(९) जब व्यौपारी सौदों में नुकसान पर ही नुकसान में ही आता रहता हो और ऐसे ही संयोग उसके जुटते जाते हों कि नुकसान ही आजाता है तो उसे उस समय काम बन्द कर देना चाहिए और कालान्तर में अपने शुभ समय को विचार कर अथवा हमारे कार्यालय से सम्बन्ध रखने वाले व्यौपारी को हम से दिन मान की सलाह लेकर अपने शुभ समय को निश्चित करके ही मार्केट की लाइन भी जब एक सिरे पर आ जावें तभी व्यापार आरम्भ करना चाहिये क्यों कि व्यापार का नुकसान व्यापार से ही निकलता है व्यापार चाहे वायदा का हो चाहे त्यारी का ही रहना चाहिये व्यापार ही।

(१०) लम्बी तेजी मन्दी की लाइन का ज्ञान व्यापारी को देश काल की परिस्थितियों से स्वयं अनुभव में भी आता रहता है। फिर भी हमारे विज्ञान-ज्योतिः मासिक पत्र से अथवा साल भर के व्यापार सम्बन्धी विचारों की किताब विज्ञान ज्योतिः के विशेषांक सम्वत्सर २०१३ के भविष्य फल से भी प्राप्त करें जिस का मूल्य भी डाक खर्च सहित १) ही है विज्ञान ज्योतिः कार्यालय से मंगाकर पढ़ें।

(११) हिन्दी जगत् में वायदा व्यापार पर साहित्य अभी पूर्णरूपेण उपलब्ध नहीं होरहा है किन्तु मानव स्वभावतः क्रियाशील

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राणी है इसके लिये चुप चाप बैठे रहना असम्भव है अतः मानव के अन्तस्तल पर व्यापार के दृश्यों का प्रभाव अङ्कित होने से उसने उसकी गति विधि का विश्लेषण कर बुद्धि रूपी तालिका से रेखा खींच कर उसके चित्र को चित्रित किया है। अतः वायदा व्यापार के वैज्ञानिकों की अपने हृदय के विचारों उद्-गारों तथा मूनो भावों को अभिव्यक्त करने की प्रबल उत्कंठा ने वाणी की वीणा पर मुखरित रहने के लिए वायदा व्यापार के मौलिक सिद्धान्तों का विश्लेषण किया है जिसका आंशिक रूप से क्रमानुसार विश्लेषण किया जा चुका है अस्तु।

(१२) अपने अन्तःकरण में यह विचार मत करो कि जिस दिन मार्केट में जाओ उसी दिन सौदा अवश्य ही करना है अपितु बाजार की चाल को भली भाँति समझकर जिस दिन आपकी लाइन पलटने का वक्र पड़ने का पूर्ण विश्वास हो जाय उस दिन ही सौदा आरम्भ करना चाहिये।

थोड़ा सा लाभ प्राप्त करके सौदा बराबर करने का स्वभाव नहीं डालना चाहिये अपितु लाभ में प्रतीक्षा करना और छोटे वक्रों [रीएक्शनों] के झंझट में न फंस कर अपने अनुकूल बाज़ार चलने पर सौदा बढ़ाते जाना और बड़े वक्र से लाभ उठाने का स्वभाव डालना चाहिये इस प्रकार सौदा करने पर अपने कुटुम्ब के पालनार्थ लाभ हो सकता है मुख्य बात यह भी स्मरण रखनी चाहिये क्योंकि बाजार में अच्छी घटाबढ़ी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नित्य प्रति नहीं चला करती है अपितु कई दिनों तक क्या कई सप्ताहों तक कई महीनों तक भाव एक सीमा के अन्दर घूमते रहते हैं। अतः यदि दस या १५ दिन में आप पांच सात सौ रुपया कमा लेते हैं इस लाभ से यह अर्थ न निकालें कि आपकी आमदनी का औसत इसी प्रकार रहा करेगी, इसलिए अपने रहन सहन के ढंग में बढ़ोत्तरी न करें और न ही फिजूल खर्ची में पड़ जाएँ नहीं तो बाद में पछताना पड़ेगा। क्योंकि यह हो सकता है कि मार्केट पंद्रह बीस दिन एक महीना खूब चलें और हजार पांच सौ रुपया प्राप्त कर लवें फिर दो तीन मास तक बाजार पड़ा रहे या आप बाजार की चाल को न समझ सकें, और इस वास्ते आमदनी न हो सके इस लिए रुपया प्राप्त करने पर अपने मन को अधीन रखना अहङ्कार का अपने पास फटकने नहीं देना फिर आवश्यकता पूर्ति के लिए अत्यावश्यक खर्च करके अपने जीवन के मन्तव्य को पूरा करने के मार्ग पर चलना ही इस व्यापार से सर्वदा लाभ प्राप्त करने का श्रेष्ठ मार्ग है।

(१३) बाजार के चलने के बारे में दूसरों की राय पर ध्यान नहीं देना चाहिए अपितु अपनी राय पर पक्का रहना चाहिये यदि बाजार अपने विचार से उलटा चलें तो अपने विचार को फिर दोबारा ठीक करना चाहिए किसी बड़े सटोरियों की लिवाली की ओर ध्यान देना किसी मोटे लाभ प्राप्त करने वाले व्यौपारी के सौदे की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ओर ध्यान देना किसी की सर्वदा ठीक निकलने वाली सुधाई से अपना विचार बदलना सर्वदा हानि देने वाला होता है। इस से व्यापार को समझने की स्वयं की समझदारी उत्पन्न नहीं होती, अपितु दूसरे के अधीन होकर हानि उठानी पड़ती है। अन्त में आम लोगों की तरह यही कहना पड़ता है कि वायदा व्यापार बड़ी खराब वस्तु है इससे दूर रहना ही अच्छा है।

(१४) वयदा व्यापार में मन्दी या तेजी चलने के सिद्धान्त के बारे में लिखने से पहिले एक बात भली प्रकार समझ लेनी चाहिये कि आज के समय में लाभ प्राप्त करने के दो ही बड़े साधन हैं एक है सांसारिक वस्तुओं को उत्पन्न करना जिनसे साँसारिक लोगों की आवश्यकता पूर्ति होती हैया इन वस्तुओं को उत्पन्न करने वालों की सहायता करना दूसरा प्रकार है कि दूसरों की विवशता से ही लाभ प्राप्त करना, यदि वस्तु की माँग होगी तो उस वस्तु को प्राप्त करने वाला अपनी विवशता के कारण ही अधिक मूल्य देने पर विवश होगा यदि मांग नहीं होगी तो मन्दे भाव पर भी खरीदने को उद्यत नहीं होगा इसलिए वस्तुओं के मूल्य अधिक या कम होते रहते हैं यदि व्यापारी लोग दूसरों की विवशता से लाभ न उठायें तो वह लाभ प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

(१५) आवश्यकता वालों को आवश्यक वस्तुएँ न देकर इनको नाश कर देना ही व्यापार का वर्तमान युग में सुवर्ण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In-Public Domain. Digitization by eGangotri

सिद्धान्त माना जाता है अमेरिका में गेंहूँ को इसलिए इंजनों में कोयले के स्थान पर फूँक दिया जाता है कि संग्रह अधिक न होकर भाव गिर न जायें। ब्राजील में कई बार कपास की फसल खड़ी इसलिये जला दी थी कि रुई के भाव गिरने से बचाये जा सकें। अतः मन्तव्य यह है कि व्यापार करने के लिए सब से सुन्दर प्रकार वायदा व्यापार का ही है इसमें न तो वस्तुओं में मिलावट करने की आवश्यकता है न झूँट बोलने की न थोड़ा तोलने की आवश्यकता है न किसी को उत्कोच (रिश्वत)देने की आवश्यकता है अपितु एक बार इसके मन्दी चलने के सिद्धांतों को समझ कर हृदयंगम करने की और सौदा करने के सिद्धांत को सम्मुख रख कर मामूली पूंजी से भी आम पढ़ा लिखा व्यक्ति अपना और अपने कुटुम्ब का पालन कर दूसरों की सेवा के लिये अधिक समय निकाल सकता है परन्तु यह तभी हो सकता है जब कि वायदा व्यापार को समझ जायें किसी श्रेष्ठ से श्रेष्ठ वस्तु का दुरुपयोग होने पर यह अधिक हानि कर सिद्ध हो सकती है अच्छाई बुराई किसी वस्तु या सिद्धांत में नहीं है अपितु उसके उपयोग करने के ढँग में है, अतः वायदा व्यापार का सदुपयोग किये जाने पर वह कभी बुरा नहीं हो सकता।

दैनिक तेजी मन्दी के कुछ सिद्धान्त और वायदा व्यापार

वायदा व्यापार में रुई, सरसों, अलसी, तेल, पाट बारदाना, काली मिर्च, गुड़, गुवार, बिनौला, चना, मटरा, अरहर, उड़द,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सोना, चाँदी, शेयर्स आदि वायदा सम्बन्धी वस्तुओं में जो भी उतार चढ़ाव होता है उस की चाल यद्यपि अपनी लम्बी धारणा और ग्रह चाल की स्थिति से तो बनती ही है वह तो एक लाइन पर कार्य करने की वस्तु है मगर बहुत से दलाल तथा छोटे २ और थोड़ी रिस्क से काम करने वाले साधारण व्यापारियों के वास्ते कुछ सिद्धान्त मैं प्रकाशित करता हूँ इन सिद्धान्तों से उन व्यापारियों को लाभ अवश्य होगा जो अपना व्यापार रोज का रोज खत्म कर देते हैं चाहे नफा हो या नुकसान अतः रोज का रोज नया ही कार्य करने वाले छोटे और गरीब व्यापारियों के वास्ते कुछ नियम और सिद्धान्त बनाकर छाप रहा हूं यदि साधारण जनता को इस से लाभ हुआ तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा।

(१) जब भी कोई व्यापारी वायदा की एक दो बीजकों की लौट पलट इस धारणा से करता है कि आज का व्यापार आज ही खत्म कर देना है तो उस को चाहिए कि वह पहिले दिन रविवार की तैयारी की उस वस्तु की धारणा और स्थिति पर पहिले ख्याल करें कि रविवार की धारणा मजबूती में थी या नर्मी में थी, जिस वस्तु का वह व्यापार करेगा उस की हालत रविवार की स्थिति पहिले समझनी चाहिए। यदि रविवार को किसी को किसी चीज में मँदी हो तो सोमवार को उसी चीज में तेजी होती है यदि रविवार को तेजी हो तो सोमवार को मन्दी होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रवौ समर्घता जाता भवेत्सोमे महर्घता ।
सोमे तदा समर्घः स्याद्रवौ भवेच्च महर्घता ॥

अर्थ साफ है कि यदि रविवार में मँदी हो तो सोमवार में तेजी होगी और यदि रविवार में तेजी होवे तो सोमवार में मँदा होता है, अतः रविवार की स्थिति को ध्यान में रखकर धारणा समझकर तब सोमवार में आप कार्य करियेगा. वायदा व्यापार रविवार में बन्द रहता है, । धारणा मात्र आप को ज्ञात होगी । तैयारी की पोजीशन से भी अन्दाजा आप रविवार में कर सकते हैं जिस वस्तु पर कार्य करेंगे यदि आप को रविवार में उस वस्तु की धारणा तेजी की ज्ञात हुई है तब तो सोमवार को बाजार खुलते ही यदि आप खरीद लेते हैं तो याद रखियेगा धारणा के मुताबिक आप को जो तेजी मार्केट में मिलेगी वह थोड़ी देर ही कायम रहेगी आप को अपने खरीदे सौदा में थोड़ा मुनाफा मिले तो लीजियेगा अन्दाजन ११॥ बजे १२ बजे बाद मार्केट का रुख सोमवार को बदलेगा ; ध्यान रखियेगा कि सोमवार को आपने धारणा जो पकड़ी थी उस की स्थिति में सोमवार को परिवर्तन १२ बजे बाद हो जावेगा ।

(२) यदि सोमवार को जो वस्तु मंदी हो तो मंगलवार को अवश्य तेजी होती है और सोमवार को तेजी हो तो मँगल को मँदी होती है ।

सोमे महर्घतायांतु भवेत्भौमे समर्घता ।

(३) और यदि मंगलवार को मन्दी हो तो बुधवार के १२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बजे बाद तेजी हो जाती है।

महर्घता यदि भवेद्धोमे कस्यापि वस्तुनः
तदा समर्घता वोध्या बुधे मध्यं दिनोत्तरम्॥

(४) वायदे व्यापार के अन्दर जिस मण्डी में जिस वस्तु का वायदा जोरदार चल रहा हो उस वस्तु की तेजी या मन्दी के भाव प्रायः सोमवार व मँगलवार को अथवा शुक्रवार या शनिवार को ही ऊंचे से ऊंचे या नीचे से नीचे भाव बना करते हैं।

(५) मान लो कि सोमवार में अचानक तेजी आवे तो मंगल के दोपहर तक ही वह तेजी रहेगी।

(६) मंगल का बाजार तेजी में जावे तो बुधवार को १२ बजे तक वह तेजी होकर बाद में मन्दी आ जाया करती है। इसी तरह:—

(७) गुरुवार को तेजी अथवा मन्दी चले तो वह शनिवार तक रहेगी।

समर्घत्वं महर्घत्वं यदि भवेद्गुरु वासरे।
तत्तथा वस्थितं ज्ञेयं शनिवार समावधि॥

(८) शुक्रवार में जो तेजी चले तो शीघ्र मन्दी और मन्दी चले तो शीघ्र तेजी हो जाती है इस प्रकार मन्दी तेजी हो जाती है। मन्दी तेजी शुक्रवार की स्थाई कम रहती है।

समर्घता स्थात् कस्यापि यदि स्याद्वा महर्घता।
साचाल्प कालिका वोध्या प्रवृताभृगु वासरे॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(९) और यदि शनिवार को तेजी चले तो एक सप्ताह तक तेजी और मन्दी चले तो एक सप्ताह तक मन्दी स्थाई बन जाया करती है।

शनौ समर्घता वापि महर्घता च भवेद्यदि ।
तदा साप्ताहिकीज्ञेया स्थितिः व्यवहार कोविदैः ॥

(१०) यदि गुरुवार तेजी में जावेगा तो शुक्रवार के दोपहर बाद फिर मन्दी अवश्य आवेगी फिर शनिवार में भी तेजी आ जाया करती है।

(११) शुक्र वार की भी तेजी मन्दी टिकाऊ नहीं होती। यदि शुक्रवार मन्दी में रहे तो शनिवार में तेजी। यदि शुक्रवार में तेजी ही तेजी रहे तो शनिवार फिर मन्दी में ही जाता है।

(१२) शनिवार से उठी हुई तेजी या मन्दी मंगल के १२ बजे तक समाप्त हुआ करती है। यदि और भी आगे चले तो शनिवार में ही जाकर समाप्त होती है।

(१३) शनिवार के दिन ऊंचे से ऊंचा भाव और नीचे से नीचा भाव जो हुआ हो उसे ध्यान में रख कर सोमवार के दिन ऊँचे से ऊँचे या नीचे से नीचा एक भाव अवश्य आवेगा जब व्यापार का वक्र तेजी वाला होता है तो शनिवार से सोमवार में ऊँचे भाव आया करते हैं यदि व्यापार वक्र मन्दी वालों का हो तो शनिवार के भाव से नीचे के भाव सोम[illegible] में बना करते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(१४) केनापि हेतुनासोमे यदि न स्यात् समर्घता।
भौमे स्थिति स्तदा दृष्ट्वा व्यवहार विधिः स्मृतः॥

अर्थात् किसी कारण से सोमवार में मन्दी नहीं आवे तो मँगल वार की स्थिति देख समझ कर तब व्यापार करना चाहिए।

(१५) निरन्तर व्यापार में अनुभव करने से विदित हुआ है कि सोमवार में एक दिन मँदा आवे और मँगल भी मँदी में रहे तो बुध के दोपहर तक मँदी होकर एक दम गुरुवार तक तेजी आ जाया करती है।

(१६) यदि मँगल वार तेजी में जावे और बुधवार में भी तेजी बनी रहे तो एक बार गुरु वार में थोड़ी तेजी आकर पीछे मँदी आया करती है।

(१७) गुरुवार को मंदी खत्म होकर यदि तेजी चल पड़े तो अच्छी तेजी आती है।

(१८) किसी किसी समय ऐसा भी बाजार चलता देखा गया है कि सोमवार से तेजी या मन्दी उठे तो बुधवार के दोपहर तक समाप्त हो जाती है।

(१९) मँगल वार की उठी हुई तेजी या मन्दी गुरुवार के एक बजे तक समाप्त हो जाती है।

(२०) बुधवार को चली हुई तेजी मन्दी शुक्रवार के बारह बजे तक प्रायः समाप्त हो जाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(२१) बहुत कम किसी समय सोमवार की चली हुई तेजी मन्दी गुरुवार तक और मँगल की चली हुई शुक्र वार तक शनि-वार की चली हुई तेजी मँगल वार तक शुक्र वार की चली तेजी मन्दी सोमवार तक समाप्त हो जाती है।

(२२) बुधे समर्घता भवेत् यदि कस्यापि चवस्तुनः।
तदा महर्घता बोध्या गुरौ तस्य गरीयसी॥

विशेष सावधानी की भी जरूरत है कभी २ जब बाजार में घटा बढ़ी चल रही हो तो ऊपर दी हुई मन्दी तेजी के नियमों के अनुसार ही मार्केट ज्यादा तर चला करती हैं परन्तु मार्केट में जब लम्बी तेजी और लम्बी लाइन की मन्दी चालू हो जाती है तो चालू तेजी की मजबूत लाइन से प्रति दिन तेजी ही ज्यादा आती रहती है और मन्दी साधारण रियेक्शन के रूप में ही आया करती है वहाँ मन्दी का कोई दिन निश्चित नही होता है इसी प्रकार मँदी की मजबूत लाइन बनने पर मन्दियाँ ही मार्केट में ज्यादा आया करती हैं तेजी रियेक्शन के रूप में ही उस अवस्था में आती है उस तेजी का भी वहाँ कोई दिन निश्चित नहीं होता है ऐसे अवसर में यदि पैसा कमाना हो तो बाजार के साथ उस अवस्था में रहना कोई बुरा नहीं है जब कि तेजी की लाइन बनने पर भाव बहुत ऊँचे नहीं पहुँच चुके हों अथवा मन्दी की लाइन होने पर भाव देश काल की मर्यादा से बहुत नीचे न पहुंच चुके हों रोजाना का काम करने वाले व्यापारी को इस अवसर में पैसा कमाने का एक यह भी अवसर अच्छा माना जाता है कि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेजी चल रही है खुद भी मार्केट के साथ हों और जब अच्छी।।) ≡) ।=) मन अन्दाज एक दिन में हीं आ जावे तो नफा कमाकर डबल माल बेचकर अगले ही दिन आधे प्रमाण में मन्दी आते हीं बिका माल उठा कर लाभ कमा लेना चाहिये । इसी प्रकार मन्दी आने पर डबल खरीदना और अगले दिन आधे प्रमाण में तेजी आते हीं मार्केट से हट जाना चाहिए ।

(२३) किसी २ समय जिस वार से तेजी या मन्दी उठती है उसी वार में जाकर प्रायः समाप्त होती है ।

पाट, वारदाना, कपास तथा रुई की तेजी मन्दी के योग

रुई-पाट-तथा वारदाना-हैशयन कपास की तेजी मन्दी के विषय में भी ग्रहों के वेध द्वारा-ग्रहों के उदय तथा अस्त द्वारा ग्रहों के राशि परिवर्तन द्वारा—नक्षत्र वेध एवं—राशि वेध तथा नक्षत्रों के चरण वेध द्वारा-ग्रह नवांश वेध को विचारते हुए भविष्य की कल्पना करनी चाहिये। ग्रह उच्च राशि में अपनी नीच राशि में अपने नवांश में शत्रु नवांश में अथवा शत्रु ग्रह की राशि में यदि होता है तो अपने—बक्री मार्गी—अस्त तथा उदय की परिस्थिति में मार्केट में जिस प्रकार परिवर्तन किया करता है यह सभी जिन्सों की तेजी मन्दी के वास्ते यद्यपि विषय है परन्तु पाट-वारदाना एवं कपास-रुई हैशयन के विषय में हम खास योगों का उल्लेख अपने अनुभव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिद्ध विचार से यहाँ विज्ञ व्यापारियों के लाभार्थ-विचार प्रकाशित करते हैं।

ग्रहों के उदय और अस्त का प्रभाव मार्केट पर बहुत पड़ता है उदय तथा अस्त की परिस्थिति दो प्रकार की होती हैं "सूर्येणऽस्तमनंसह" सूर्य के साथ ग्रह अपने अंशों से अस्त हो जाते हैं सूर्य से आगे अथवा पीछे चन्द्रमा १२ अंश से मंगलग्रह १७ अंश से, बुध ग्रह १४ अँश से, बृहस्पति ११ अँश से शुक्र १० अँश से, शनि १५ अन्श से अस्त माने जाते हैं और सूर्य की जो स्पष्टी होती है उसी स्पष्टी के समान यदि अन्य ग्रह की भी स्पष्टी होती है तो वह ग्रह परमास्त माना जाता है। उपरोक्त जो अन्श बताये हैं इस से ऊपर अँश होने पर ग्रह उदित होता है तभी ग्रह का उदय कहलाता है जैसा कि शास्त्र में सिद्धान्त तत्त्व विवेक में कमला कर भट्टाचार्य ने कहा है:—

द्विसप्त—वेदेन्दु खपञ्च भागाः ।
दिक्संयुताः काललवाः निरुक्ताः ॥
चन्द्रादिकानां भृगु सौम्य योस्ते ॥
द्विहीनिता व क्रगयोः स्वतन्त्रैः ॥ १ ॥

अर्थ साफ है कि दो-सात-चार-एक-शून्य-पाँच इन संख्याओं में अलग अलग दश जोड़कर जो संख्याएं बनती हैं उतने ही चन्द्रादि ग्रहों के कालांश होते हैं अर्थात् चन्द्रमा के १२, मंगल के १७, बुध के १४, बृहस्पति के ११, शुक्र के १०, शनि के १५, अंश कालांश होते हैं सूर्य के साथ इतने अंशों के अन्दर ही ग्रह अस्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होते हैं ये कालाँश आचार्यों ने अपने योगाभ्यास से विभिन्न ग्रहों के शास्त्रों में पठित किये हैं जो चन्द्रादि ग्रहों को अपने उपरोक्त अंशों में सूर्य के साथ रहने पर अस्त संज्ञा में बताये जाते हैं।

अतीन्द्रिय ज्ञैः किल काल भागा ।
स्ते लक्षिताः योगवशाद्विभिन्नाः ॥
तत्कल्पना युक्ति मिह स्वतन्त्रा ।
स्त एव जानन्ति हि नो तदन्ये ॥२॥

साथ साथ यह भी जानने की वस्तु है कि सूर्य के विम्ब के अस्त होने के १२ अंश बाद ही जब चन्द्रमा का विम्ब मनुष्य को दृष्टिगोचर होता है और इसी तरह अपने उपरोक्त अंशों से ही और भी ग्रह दिखाई देते हैं तभी उपरोक्त अश चन्द्रादि ग्रहों के कालांश के नाम से पठित किये गये हैं। दूसरी अस्त की परिभाषा यह है कि ग्रह

इनार्ध विम्बास्तमनाद पूर्व ।
शुक्लं नृदृश्यं मृगलांच्छनस्य ॥
स्थाद्येन कालेन च तस्य ते स्युः ।
कालांश का यावदिनं दृगिन्दोः ॥३॥
यदा प्रोक्तार्ध कैः काल भागैरर्कात् स्वदृग्ग्रहः ।
तदा विम्बं नृदृश्यं स्यादल्पैस्तैर्न कथं च न ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वीय कालांश तुल्येहि समयेऽर्कात्तः परम् ।
उदयात् प्राक् च सुव्यक्तं तदर्कासन्न बिम्बकम् ॥५॥

अतः उपरोक्त अंशों की स्पष्टी के अन्तर्गत ही चन्द्रादि ग्रहों के वास्ते ।

प्रोक्तं तेनाऽत्रनिर्णीतं दृग्ग्रहार्कान्तरं किल ।
प्रोक्त कालांशज क्षेत्र भागैस्तुल्यं भवेदिह ॥६॥

कालांश निर्णय करके आचार्यों ने पठित किये हैं ! अतः

सूर्यस्य तेजान्तरि तो ग्रहोऽपि ।
सोऽस्तं गतः स्या न्न च मूढ़ संज्ञः ॥
सम्मूढ़ संज्ञः किल सूर्य तुल्यः ।
कालांश वाह्ये ह्युदितः प्रदिष्टः ॥७॥

सूर्य के तेज के सामने ग्रह अस्त संज्ञा में ही आता है दिखाई नहीं देता है । अस्तं गत होने की वजह से ही उसकी मूढ़ संज्ञा होती है । और सूर्य की स्पष्टी के समान स्पष्टी ग्रह की होने से सम्मूढ़ संज्ञा होती है और जब वह ग्रह अपने उपरोक्त पठित कालाँश से ऊपर चला जाता है तभी वह ग्रह दिखाई दिया करता है अन्यथा नहीं ।

(२) ग्रहों के उदय अस्त होने के साथ उच्च नीच की परिभाषा भी, मित्र, शत्रु की जानकारी भी शुभ ग्रह पाप ग्रह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की पहचान भी करनी चाहिये यदि हम पारिभाषिक विषयों पर प्रकाश डालेंगे तो ग्रन्थ बहुत बढ़ जायेगा। साधारण तया संकेत में यहाँ लिख देते हैं विशेष जानकारी के वास्ते पारिभाषिक विषयों की जानकारी विज्ञ पाठकों को हमारे द्वारा लिखित सम्पादित "ज्योतिष विज्ञान" नामक ग्रन्थ से ही करनी चाहिये। यहां तो साधारण परिचय पारिभाषिक इस वास्ते हम दे रहे हैं कि जिससे वस्तुओं की तेजी मन्दी जानने में साधारण आवश्यक ज्ञान यहीं मिल जाने से समझने में कठिनता न पड़े।

(३) सूर्य मेष राशि का उच्च का होता है तुला का नीच का होता है। चन्द्रमा वृष का उच्च का होता है। वृश्चिक का नीच का, मँगल मकर का उच्चका होता है कर्क का नीच का, बुध, कन्या का उच्च का होता है, मीन का नीच का, बृहस्पति कर्क का उच्च का होता है मकर का नीच का, शुक्र, मीन का उच्च का होता है। कन्या का नीच का, शनि तुला का उच्च का होता है मेष का नीच का। इस प्रकार उच्च नीच की परिभाषा है।

(४) इसी प्रकार—शनि मंगल सूर्य और इनके साथ में बैठा हुआ ग्रह बुध और क्षीण चन्द्रमा ये पाप ग्रह होते हैं। शुक्र बृहस्पति पूर्ण चन्द्रमा और इनके साथ बैठा हुआ बुध ग्रह ये सब शुभ ग्रह होते हैं।

(५) सूर्य के मंगल, बृहस्पति और चन्द्रमा मित्र, बुधसम, शुक्र और शनैश्चर शत्रु होते हैं। चन्द्रमा के बुध और सूर्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मित्र, मंगल, बृहस्पति शुक्र और शनि सम होते हैं। चन्द्रमा का कोई शत्रु नहीं होता है। मंगल के चन्द्रमा बृहस्पति और सूर्य मित्र, बुध शत्रु, शुक्र और शनि सम होते हैं। बुध के शुक्र और सूर्य मित्र, चन्द्रमा शत्रु, बृहस्पति शनि और मंगल समान होते हैं बृहस्पति के सूर्य मंगल चन्द्रमा मित्र बुध और शुक्र शत्रु, शनि सम होता है। शुक्र के बुध शनिश्चर मित्र, चन्द्रमा सूर्य शत्रु, मंगल और बृहस्पति सम हैं, शनि के शुक्र बुध मित्र। सूर्य चन्द्रमा मगल शत्रु और बृहस्पति सम होता है।

मैत्री चक्रम्

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
मं. बृ. चं	सू. बु.	चं. बृ. सू	सू. शु.	सू मं. चं	बु.श.	बु. शु.	मित्राणि
बु.	मं.बृ. शु.श.	शु.श.	मं.बृ. श.	श.	मं.बृ,	बृ.	समाः
शु श	०	बु.	चँ.	बु.शु.	चँ.सू.	सू.चँमँ	शत्रवः

धात्वन्नरत्नौषधि जीवमूल।

वस्त्रादि कानामधिपाः ग्रहाःये।

तान्वीक्ष्य सर्वान्-शुभपापयुक्तान्।

शुभैः समर्घं-मशुभैः महर्घम् ॥८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उच्चस्थितो मित्रगृहोपयातः ।
शुभेनयुक्तः शुभदृष्टि मिश्रः ॥
ग्रहस्तदा पूर्णो समर्घकर्ता ।
वाच्यंग्रहैस्तत्र-शुभैः समर्घम् ॥९॥

जो ग्रह जिस वस्तु का अधिपति होता है अथवा यों कहिये कि जिस वस्तु पर जिस ग्रह का स्वभाविक अधिकार होता है यह समझ कर जैसे शनि से काली वस्तु—लोहा, सरसों, तेल उड़द, मंगल से लाल वस्तु—लाल धान्य, गुड़, पाट, वारदाना लाल वस्त्र आदि—चन्द्रमा से घृत, चाँदी, दूध, दही, चावल शुक्र से भी श्वेत वस्तु-श्वेत धान्य, आदि इस प्रकार समझकर धातु-अन्न-रत्न-औषधि तथा मूल से उत्पन्न पदार्थ जीव लता आदि वस्तुओं के स्वामि ग्रह का हिसाब लगाकर यह देखना चाहिए कि यदि ग्रह उच्च राशि में मित्र गृह में बैठा हो शुभ ग्रह से देखा जाता हो तो वह ग्रह जिस वस्तु का कि वह स्वामि है उस वस्तु के स्टाक को बढ़ाया करता है और स्टाक के बढ़ने पर माल की वृद्धि होने पर मन्दे के लक्षण हो जाते हैं। इसके विपरीत ।

नीच स्थितः शत्रु गृहोपयातः ।
पापैः समेतः सच पापदृष्टः ॥
शुभैरदृष्टश्च विनाशकारी ।
ज्ञेयं महर्घं च तदा गुणज्ञैः ॥१०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि ग्रह नीच राशि में स्थित हो शत्रु ग्रह के साथ हो पाप ग्रह से दृष्ट हो तो वह ग्रह जिस वस्तु का अधिकारी है शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं रहने पर वह ग्रह उस वस्तु की हानि करता है स्टाक को भी खराब करता है। और माँग बढ़ाता है। अतः वह तेजी कारक होता है।

चांस निकालने की विधि

(१) जब एकग्रह जिस वस्तुका किंवह स्वामि हो और उस का दृष्टि सम्बन्ध अथवा सहावस्थान सम्बन्ध दूसरे ग्रह से पड़ जावे तो दूसरा ग्रह उस प्रथम ग्रह का सहायक ग्रह माना जाता है और तीसरे ग्रह को भी सम्बन्ध बन जाये तो वह तीसरा ग्रह उप सहायक ग्रह होता है यदि सहायक और उपसहायक ग्रह शुभ ग्रह हों तो मन्दी का चाँस और यदि पाप ग्रह हों तो तेजी का चाँस बन जाता है।

(२) अब यहाँ रुई, पाट, वारदाने में चांस निकालने के प्रसंग में यह बात जानने की है कि रुई, कपास, पाट, वादाना मूल पदार्थ होते हैं श्वेत वर्ण इनका होता है। बुध ग्रह से प्रायः सम्बन्ध रुई पाट वारदाने कपास का होता है, मंगल ग्रह इन वस्तुओं का सहायक होता है मालिक नहीं अधिकारी नहीं होता है और सूर्य ग्रह उपसहायक ही हुआ करता है इस वास्ते विद्वानों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को चाहिये कि वे बुध, मंगल, सूर्य, इन तीन ग्रहों के द्वारा प्रधान तया चाँस साधने की दृष्टि रखे, रुई में शुक्र चन्द्रमा से भी सहायता ली जा सकती है। पाट वारदाने में केवल शुक्र चन्द्रमा को छोड़कर उपरोक्त ग्रहों का ही सूर्य, बुध, मंगल ग्रहों का ही प्रधान सम्बन्ध होता है।

(३) सौम्यो भवेद शुभ सूर्य ग्रहाल्प वेगी।
वक्रोपगो दिन कृतात्पुरतः स्थितोऽपि ॥
कूर्याच्चयोगमशुभाद शुभेत्थशालात्।
सूर्यात्सदा प्रकुरुते बहुधा महर्घम् ॥११॥

जब कभी भी बुध ग्रह वक्री होकर सूर्य से अपनी कम ही चाल अथवा गति रखता हुआ सूर्य से इत्थशाल करता हो तो वह रुई, पाट, वारदाने में तेजी कारक होता है। इसके विपरीत शुभ ग्रह से इत्थशाल होने पर मन्दी के चाँस बन जाते हैं पूर्ण अस्त कालिक अवस्था में भी मन्दी के ही योग बना करते हैं।

पुरःस्थिताद्भास्करतो बुधश्चेत।
यदीत्थशाली न शुभेत्थशाली ॥
तदामहर्घं शण सूत्र पट्टम्।
बुधो न सूर्येण समं यदिस्यात् ॥१२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि बुध ग्रह सूर्य से आगे हो और इत्थशाल करता हो किसी शुभ ग्रह से उसका सम्बन्ध न हो तो रुई, पाट, बारदाना तेजी हो जाते हैं यदि सूर्य के साथ ही बुध हो जायेगा और अंशों से भी यदि बराबर होगा तो पूर्णास्त कालिक अवस्था प्राप्त होने से कपास शण, सूत्र तथा पाट बारदाना हैशियन में अच्छी और मोटी तेजी आया करती है।

पश्चात्गतो बुध ग्रहः पुरतश्च शुक्रो ।
मध्येगतो दिनमणि यदि चैकराशौ ॥

असन्नगो भवति सोम्यग्रहः समन्तात् ।
भिन्नर्क्षगोऽपि नियतं कुरुते महर्घम् ॥१३॥

यदि बुध ग्रह जो कि पाट–बारदाना–हैशयन–कपास आदि वस्तुओं का सूत्रों का पूर्ण अधिकारी ग्रह है आगे हो और इन दोनों के बीच में सूर्य ग्रह हो अथवा अलग अलग राशियों में हो परन्तु होवे समीप में तो निःसन्देह पाट–बारदाना तथा हैशयन में मोटी तेजियां किया करते हैं। तथा च।

शुक्रादगतो यदि बुधात् पुरतश्च सूर्यो ।
योगं तथा च कुरुतो रविणा यदातौ ॥

शुक्रो यदा ब्रजति भास्करतोऽग्रयायी ।
ज्ञेयं बुधैः सततमाशु शणं महर्घम् ॥१४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध तथा शुक्र से सूर्य आगे होवे और बुध शुक्र दोनों ही ग्रह सूर्य से इत्थशाल करते हों, तथा शुक्र ग्रह सूर्य से आगे जाने की स्थिति में हो तो पाट–वारदाना तथा हैशयन में अच्छी तेजी के चांस बन जाते हैं।

मेषेऽलिगे क्षितिसुतश्च विलोमगामी।
सिंहेऽथवान्य भुवनेऽपिनिरीक्षमाणः॥
पापैश्चतत्र वलिभिर्नशुभेक्षितैर्वा।
वेद्यं सदा विविध सूत्रशणं महर्घम्॥१५॥

मेष—वृश्चिक तथा सिंह राशि में मंगल ग्रह वक्री होकर पाप ग्रहों से देखा जाता हो शुभ ग्रहों की वहाँ दृष्टि न हो तो हर प्रकार का पाट–हैशयन– सूत्र वारदाना तेज हो जाता है।

सूर्यो यदाक्षितिसुतेन–सितेनचापि।
सोमात्मजेनचसमं–सुकृतेत्थशालः॥
पापै र्विशेषवलिभिर्नशुभेक्षितैर्वा।
वेद्यं सदा विविध सूत्रशणं महर्घम्।१६॥

जब कभी भी सूर्य ग्रह–मंगल शुक्र बुध ग्रह के साथ अलग अलग इत्थशाल योग करता हो, अर्थात् सूर्य का मंगल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का इत्थशाल हो, सूर्य का बुध का इत्थशाल हो, सूर्य का शुक्र का इत्थशाल हो और तीनों ही इत्थशाल एक साथ होते हों—पाप ग्रहों के साथ इत्थशाल सूर्य का केवल हो शुभ ग्रह से दृष्टि सम्बन्ध नहीं हो तो इस प्रकार से पाट, बारदाने और हैशयन के भावों में अच्छी तेजी के चांस बन जाते हैं।

यद्यैक राशौ व्रजतोऽग्रगामी ।
भौमो भवेत्सूर्य कृतेत्थशालः ॥
शणं च पट्टं बहुधा-महर्घम् ।
पूर्णास्तकाले विपरीतभावाः ॥१७॥

जब कभी एक राशि में सूर्य से कुछ अंश आगे मंगल ग्रह यदि इत्थशाल करे तोपाट, बारदाना तथा बोरे, सन, शन ये चीजें तेज हो जाती हैं जब सूर्य और मंगल अँशों में भी बराबर ही हो एक राशि पर तो मंगल, सूर्य के साथ में रहने से अस्त संज्ञक होने पर पाट, हैशयन पर अच्छी मन्दी का चाँस बन जाया करता है।

इत्थशाल योग की पहचान

इत्थशाल योग तीन प्रकार का होता है भूत इत्थशाल वर्तमान इत्थशाल-भविष्य इत्थशाल तीनों प्रकार का इत्थशाल योग ग्रहों की स्पष्टी के आधार पर समझा जाता है।

सूर्य के १५, चन्द्रमा के १२, मंगल के ८, बुध के ७, बृहस्पति के ९. शुक्र के ७, शनि के ९, ये ही अंश होते हैं और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपने स्थान से १।३।४।५।७।९।१०।११ इन स्थानों में दृष्टि ग्रहों की होती है।

यहाँ इत्थशाल योग जानने के वास्ते जिन दो ग्रहों का इत्थशाल विचारना हो जो मन्द गति ग्रह हो उसका अँश ज्यादा हो और शीघ्र गति ग्रह का अँश कम हो। और शीघ्र गति ग्रह भी मन्द गति ग्रह को देखता हो, शीघ्र गति ग्रह के अँश में अपना उपरोक्त पठित ही आँश छोड़कर उन ही आँशों के अन्दर ही मन्द गति ग्रह का अँश पड़ जाये तो इत्थशाल योग हो जाता है। शीघ्र गति ग्रह मन्द गति ग्रह को अपना तेज देता है, ताजिक नील कण्ठी में इत्थाशाल योग की व्याख्या अच्छी की है जिन्हें इत्थशाल योग को ठीक समझना हो वे ताजिक नीलकंठी के षोडष योगों को देखें। यदि इत्थशाल हो रहा हो तो वर्तमान इत्थशाल जाने, जब पूर्ण इत्थशाल हो जावे तो उसे गतेत्थशाल समझना चाहिये। इत्थशाल होने से पूर्व अपनी बुद्धि से यह समझना चाहिए कि यह इत्थशाल कौनसा है इत्थशाल योग को जानकर तब तेजी मन्दी के योग मिलाने चाहियें।

बारदाना, हैशयन, कपास में मन्दी के योग

(१) चन्द्रमा, बुध, शुक्र, बृहस्पति इन ग्रहों के योगों के आधार पर मन्दी के चाँस बनते हैं। चन्द्रमा, शुक्र, बुध

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ये ग्रह जल मग बिम्ब होते हैं। जब भी यह ग्रह अपने अँशों में अथवा एक राशि में योग करें, मिले तो जल वृष्टि होती है लोक में शांति होती है, पैदावारी बढ़ती है तो इन योगों से पाट, वारदाना, हैशयन भी मन्दे ही होते हैं। यदि बुध तथा शुक्र ग्रह के बीच में यदि सूर्य तथा मंगल ग्रह नहीं हो तो जैसे बुध शुक्र समीप आते हैं वैसे वैसे पाट हैशयन बराबर मन्दे ही चलते रहते हैं।

(२) जब कभी भी एक राशि में अथवा भिन्न राशि में बुध शुक्र दोनों आ जावे इनके बीच में मंगल अथवा सूर्य न पड़ते हो, तो यहाँ भी जैसे जैसे बुध शुक्र दोनों ग्रह समीप आते जावेंगे वैसे २ मन्दी बढ़ती जावेगी।

(३) यदि बुध ग्रह मार्गी होकर सूर्य से आगे निकल जावे अथवा वक्री बुध सूर्य से पीछे रहे तो पाट, वारदाना, हैशयन अच्छे मन्दे होते हैं। बुध यदि सूर्य के साथ अपने अँशों में भी साम्यता रखेगा तो भी पाट, सन हैशयन, बोरा मन्दी में ही जाया करता है।

(४) जब भी मंगल ग्रह सूर्य से ग्रस्त हो जावे तो भी पाट, वारदाना, हैशयन मन्दा होता है। मंगल ग्रह वृहस्पति ग्रह से देखा जाता हो अथवा वृहस्पति के साथ हो तो भी पाट, वारदाना, हैशयन मन्दी में ही जाते हैं। मकर तथा कर्क के मंगल में भी पाट, वारदाना मन्दी में जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(५) बृहस्पति के साथ बुध. शुक्र का योग होने से भी पाट हैशयत्न मन्दी में जाता है मंगल गुरु के योग में भी मन्दी होती है गुरु की दृष्टि बुध, चन्द्रमा, शुक्र व मंगल पर पड़ती हो तो भी पाट, बारदाना, हैशयत्न में मन्दी के योग होते हैं।

जैसा कि शास्त्र में कहा है:—

भौमान्विते सुर गुरौ भवतीह मान्द्यम्।
चन्द्रान्वितेऽपि च गुरौ नियतं समर्घम्॥
शुक्रेण तत्र शशि जेन समन्वितेऽपि-
नित्यं भवेद् शुभखेटवशान्महर्घम् ॥१६

मंगल के साथ बृहस्पति ग्रह हो, चन्द्रमा के साथ बृहस्पति ग्रह हो, बृहस्पति शुक्र ग्रह के साथ हो अथवा बृहस्पति ग्रह बुध के साथ हो तो व्यापारिक वस्तुओं में मन्दियाँ होती हैं, परन्तु पाप ग्रह योग द्वारा तेजी कहनी चाहिए।

पाप ग्रह के वेध द्वारा तेजी योग

सूर्येण तत्र शशिजः परिपूर्ण दृष्टः।
पूर्णशशी-दिनकरादवलोक्य मानः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दृष्टि-विना-शुभखगस्य भवेन्मर्घम् ।
वेद्यं-शणं-विविध-सूत्रमेथापिपट्टम् ॥१७

सूर्य ग्रह को बुध पूर्ण दृष्टि से वेध करता हो तथा पूर्ण चन्द्रमा सूर्य से देखा जाता हो शुभ ग्रहों की दृष्टि का सम्बन्ध आपस में नहीं हो, तो हर प्रकार के पाट, वारदाने तथा शण के व्यापार में तेजी के योग बनते हैं।

शशी स्थानत्तः-सप्तमे वा त्रिकोणे ।
यदा-देव पूज्यो गुरु-वर्तमानः ॥
न-दृष्टो-न-युक्तो-दिनेशात्मजेन ।
तदा पूर्ण मन्दं शणं सूत्रकं च ॥१८

गुरु स्थानतः-पञ्चमेवाऽपि-केन्द्रे ।
यदा-यामिनीनायकं—वर्तमानम् ।
न-पापोंन-सौम्यः प्रपूर्ण-प्रपश्येत् ।
तदा-मन्दता-वै शणे-सूत्रकेच ॥१९

जब चन्द्रमा से सातवें अथवा पांचवें नवें बृहस्पति ग्रह पड़ा हो और वह शनि से न देखा जाता हो और न युक्त ही हो तो शण सूत्र में मन्दी होती है।

तथा बृहस्पति से यदि चन्द्रमा पाँचवे अथवा केन्द्र में हो और पाप ग्रह से देखा न जाता हो भी शण, सूत्र में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्दी के ही योग बना करते हैं। सौम्य ग्रह बुध पाप ग्रह के साथ पापी ही होता है अतः पाप ग्रह युक्त बुध से भी दृष्टि सम्बन्ध शुभ ग्रह का नहीं रहना चाहिये। तब भी पाट, वारदाने, हैशयन और रुई, कपास, में मन्दी के योग बना करते हैं।

शुक्र ग्रह के आधार पर मन्दी के योग

शुक्रेण-तत्र-राशि जेन-शशाङ्क योगात्।
चन्द्रात्मजेन-बलिनाऽपि-निरीक्षमाणः ॥
मान्द्यं-भवेद् शुभ-योग-विनाऽपित्थीमन्।
पट्टं-शणं-विमल तूलिकया-समेतम् ॥१०

जब शुक्र ग्रह के साथ बुध अथवा चन्द्रमा भी एक राशि में एक साथ योग करता हो अथवा शुक्र चन्द्रमा का ही योग हो बुध इस योग को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो पाट, वारदाना तथा कपास, रुई में रेशम और सूत में अच्छी मन्दी के योग बन जाया करते हैं, पाप ग्रह का दृष्टि सम्बन्ध शुभ ग्रह पर नहीं रहना चाहिये:—

न तेज युक्तो-रविणा-भृगुश्चेत्।
दृष्टो युतोवा-गुरुणा च शुक्रः ॥
सम्पूर्ण दृष्ट्या हिमरश्मि बिम्बम्।
माँद्यं च पश्चाच्छण सूत्रकं च ॥२१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जब शुक्र ग्रह सूर्य से इत्थशाल नहीं करता हो गुरु ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो ऐसा शुक्र ग्रह चन्द्रमा को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो पाट, बारदाना, तथा हैशयन मन्दे होते हैं। शुक्र ग्रह के साथ शुभ ग्रहों का वेध अथवा योग मन्दी का सूचक है।

जीवाद्गतो यदि भृगुर्ननुपृष्ठभागे।
जीवोऽग्रगश्शुभ खगो भृगुतो निजांशैः
योगे शणं नियतमत्र भवेत्समर्घम्।
शुक्रेऽग्रगे भवति सूत्र शणं महर्घम्॥२२

यदि शुक्र ग्रह बृहस्पति ग्रह से पीछे हो अथवा एक राशि पर भी अंशों करके शुक्र पीछे हो बृहस्पति आगे हो तो पाट, बारदाना हैशयन अच्छे मन्दे होते हैं जैसे जैसे शुक्र अपनी तीव्र गति द्वारा बृहस्पति के नजदीक आता जावेगा तेजी भी मार्केट में उसी प्रकार मार्केट में बढ़ती जाया करती है जब शुक्र आगे पहुँच जावेगा तो तेजी भी बढ़ जावेगी, कितनी तेजी कहाँ तक बढ़ेगी यह समझदार व्यापारियों को देश काल की परिस्थिति से ही जानकारी करनी पड़ेगी।

जीवोयदा पाप कृतेत्थशालः।
सूर्यास्त गोवाऽपि विलोमगामी॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रेऽपि ज्ञेयं सततं महर्घम्।
किंचित्समर्घं प्रथमं भवेच्च ॥२३

जब कि बृहस्पति ग्रह पाप ग्रह से इत्थशाल करता हो। अथवा सूर्य के साथ में रहने के कारण अस्त हो गया हो अथवा शुक्र ग्रह भी पाप ग्रह से इत्थशाल करता हो तो उस समय तेजी के ही योग बना करते हैं। सूर्य के साथ अस्त होने पर वक्री होने की अवस्था में मन्दी नहीं होती है। कुछ न कुछ तेजियां ही हुआ करती हैं।

विद्धो-यदा-चेद्गुरुणा-शशांङ्कः।
पापोऽपि वास्याद्गुरुणा प्रविद्धः॥
सोम्योऽपि विद्धोगुरुणा च पापो।
मांद्यं ग्रहैः वेधमयं शुभैश्च ॥२४

यदि बृहस्पति ग्रह चन्द्रमा से विद्ध हो अर्थात् पूर्ण दृष्टि से देखा जाता हो तो पाट, वारदाना मन्दे होते हैं पाप ग्रह भी यदि बृहस्पति से देखा जाता हो तो भी मन्दी पाट, देशावर की बन जाती है बृहस्पति के साथ मित्र ग्रह मंगल का वेध शुभ होता है इस वेध में भी अच्छी मन्दी आ जाती है; शुभ ग्रह, बुध, शुक्र, चन्द्रमा यदि कोई भी ग्रह बृहस्पति से विद्ध हो अथवा देखा जाता हो तो बहुत ही अच्छी मन्दी होती है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाप ग्रह के साथ वेध में कम मन्दी होती है, फिर भी मन्दी जरूर ही होती है । शुभ ग्रहों का वेध मन्दी कारक पाप ग्रहों का वेध बृहस्पति के साथ कुछ कम मन्दी कारक होता है ।

पापेन-विद्धो यदि - पूर्ण चन्द्रो ।
महर्घकारी-विबुधैः-प्रदिष्टः ॥
चन्द्रं-च हित्वा-शुभ-वेध-शस्तः ।
माद्यं सदा चन्द्रविना भवेत्सः ॥२५

पाप ग्रह के साथ केवल चन्द्रमा का वेध शुभ नहीं होता है यह योग मन्दी के योगों में अचानक तेजी लाया करता है । चन्द्रमा को छोड़कर और शुभ ग्रह का वेध यदि पाप ग्रह के साथ पड़ जाये तो मन्दी कारक हो जाता है मगर चन्द्रमा के शुभ ग्रह होने की अवस्था में भी पाप ग्रह का वेध तेजी कारक ही रहा करता है ।

पापेन-विद्धः-खलु-पापखेटः ।
सूर्येण विद्धश शनिभूमिपुत्रः ॥
चन्द्रोऽथवातीव-भवेन्महर्घम् ।
महर्घता स्यात् खल चन्द्र वेधात् ॥२६

पाप ग्रह के साथ पाप ग्रह का वेध तेजी कारक रहता है जैसे सूर्य से शनि मंगल आपस में वेध में पड़ते हों चन्द्रमा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के साथ किसी भी पाप ग्रह की विद्धावस्था तेजी कारक होती है, चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह के वेध की अवस्था बराबर तेजी कारक होती है। सूर्य के साथ बुध का वेध भी तेजी कारक होता है।

गुरुस्तेजोयुक्तो यदि भवति सूर्याद्भृगुरपि।
बुधस्तेयुक्तो रवि शशि महीपुत्र रविजाः॥
महार्घं विद्धाःस्युः गुरु शशियुतेनेक्षितवतः।
ग्रहाणां वीर्याढ्यै विविध शुभ योगाच्छुभफलम्॥२७

यदि बृहस्पति ग्रह तेज युक्तहो सूर्य से बुध, बृहस्पति शुक्र इत्थशाल योग करते हों, शुभ ग्रहो के साथ बुध, गुरु के साथ सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, शनि का योग हो तो तेजी कारक है। यदि गुरु चन्द्रमा से दृष्टि सम्बन्ध नहीं हो तेजी, पाप ग्रहों का केवल वेध से अच्छी तेजी कारक हो जाया करता है, यदि बुध, गुरु. शुक्र, तीनों अस्त हों सूर्य से उनका इत्थशाल सम्बन्ध नहीं हों तब मन्दी के ही योग बना करते हैं। यदि बुध, शुक्र अस्त न हों और न सूर्य के साथ इत्थशाल योग ही बनता हो तो ग्रहों का वेध खास तेजी मन्दी कारक नहीं हुआ करता है।

विद्धो यदा क्षिति सुतेन-बुधान्वितेन।
पापेन-तत्र-रविणा-शनिनाऽपि-चन्द्रो॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पट्टं शणं विविध-सूत्र-कपास तूलम्।
मूलं चधान्य-तिल-तैल घृतं महर्घम् ॥२८

जब मंगल से युक्त बुध तथा पाप ग्रह से युक्त सूर्य, शनि से युक्त बुध अथवा कोई भी पाप ग्रह चन्द्रमा से वेध करता हो। तो बुध, शुक्र सूर्य के इत्थशाल अथवा पाप ग्रह के चन्द्रमा द्वारा वेध में पाट, हैशयन, सूत्र, कपास, रुई, धान, तिल तेल घृत में अच्छी तेजियां आया करती हैं।

नवांश के आधार पर तेजी मन्दी

गुरोःभागतः-सप्तमेत्रा ऽपि-केन्द्रे
त्रिकोणे-खगश्चेच्छुभो-वर्तमानः ॥
यदा-यामनीशो-न पापेन-दृष्टः।
स्तदामन्दभावाः भवेयुः समानाः ॥२९

बृहस्पति ग्रह के नवाँश से केन्द्र में या त्रिकोण में शुभ ग्रह कोई भी विद्यमान हो पाप ग्रह से देखा न जाता हो तो समान भाव अथवा मन्दे भाव व्यापारिक जिंसों के होते हैं विशेष कर पाट वारदाना तथा हैशयन के भावों में अच्छा मन्दा होता है।

मार्गी ग्रह द्वारा मन्दी तेजी ज्ञान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मार्गी बुधोरविसुतात्पुरुत-स्थितश्चे
द्वक्री-बुधोऽपिचभवेद्यदि-पृष्ठगामी ॥
मांद्यं भवेद्विविध-सूत्र भवं-च पट्टम्
ज्ञेयं-नवांश-शुभ खेट-वशात्समस्तम् ॥३०

यदि मार्गी बुध ग्रह सूर्य ग्रह से आगे हो और वक्री बुध यदि पृष्ट गामी हो तो शुभ ग्रह के नवांश वेध से पाट वारदाना, हैशयन में अच्छी मन्दी के योग बन जाया करते हैं।

गुरोः शुक्र-योगात्-पुरोवाच-पश्चात्
दिनेशः - स्थितो-यामनीशं-प्रपश्येत्
बुधःशुक्रयुक्तोन-मध्ये-स्थितोऽर्कः ।
स्तदा मन्दता पाट संज्ञस्यसूत्रे ॥

गुरु शुक्र योग से आगे अथवा पीछे सूर्य स्थित हो और वह चंद्रमा को पूर्ण दृष्टि से देखता हो अथवा बुध से युक्त शुक्र हो उनके बीच में सूर्य स्थित न हो तो पाट, हैशयन में मन्दी होती है।

जीवाद्भवेद्यदि-शुभे-स्व नवांश भागे।
राशौ स्वकीयभवनेऽपि निरीक्षमाणः ॥
योगः सदा-मतिमतां-विदुषां च ग्राह्यः ।
मान्द्योद्भव-शुभ-नवाँश-वशाच्चवाच्यो ॥३२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो भी शुभ ग्रह वृहस्पति से अपने नवांश में अपनी राशि में स्थित हो तो यह योग विद्वानों ने मन्दी कारक बताया है वृहस्पति के सम्बन्ध से कोई भी ग्रह खास तेजी कारक नहीं हुआ करता है। शुभ ग्रह के नवाँश के आधार पर तो मंदी के ही योग बना करते हैं।

नोट—पाट, हैशयन, रुई, कपास, तथा सूत्र की तेजी मंदी जो निकाली जाती है वृहस्पति, शनि ग्रहों के द्वारा लम्बी धारणा और लाइन के चाँस निकाले जाते हैं। नक्षत्र वेध से अथवा चन्द्रमा के द्वारा तो दो दिन एक दिन के वास्ते ही चाँस निकलते हैं। नवाँश सूक्ष्म नवाँश से घंटे घंटे के भी चाँस बनाये जा सकते हैं।

वेध से राशि पर ग्रहों के परिवर्तन से एव नक्षत्र वेध से चंद्रमा के वेध द्वारा कई एक प्रकार से तेजी मंदी निकालने के हैं अधिकाँश प्रकारों जो तेजी के संकेत मिलें तो तेजी जाननी चाहिए तेजी की लम्बी लाइन में भी मंदियाँ और मंदी की लाइन में भी तेजियों के छोटे मोटे आते रहते हैं। ये सब योग समझदारी से समझने और पकड़ने के हैं।

यद्यपि हमारे द्वारा चालू मासिक पत्र विज्ञान ज्योतिः में भी बराबर जिंसों की तेजी मंदियाँ चलती रहती हैं और हर मास छपती रहती हैं व्यापारी बन्धु विज्ञान ज्योतिः मासिक पत्र को मँगाकर भी अपना ध्यान भी जान सकते हैं तो भी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वयं भी हमारे द्वारा लिखित इन विचारों से भी लाभ उठा सकते हैं।

वृहस्पति ग्रह द्वारा व्यापार में तेजी मन्दी के योग

वृहस्पति ग्रह देवताओं का भी गुरु है शुभ ग्रह है इसका अपना स्वभाव गुण प्रकृति व्यापार जगत् में मंदी का कारण बनती है जब जब वृहस्पति की दृष्टि अन्य ग्रहों पर पड़ती है यह शुभ फल देता है वृहस्पति का विम्ब काफी बड़ा निर्मल किरणों वाला. कुमुद के फूल जैसा श्वेत स्फुटिक मणि का सा चिकना होता है यदि अन्य ग्रहों के साथ इस ग्रह का युद्ध हो गया हो और यह पराजित हो चुका हो तो शुभ फल नहीं देगा बजाय मन्दे के यह तेजी कारक ही हो जावेगा। और यह अन्य ग्रहों से पराजित नहीं हुआ होगा।

गुरुयदि अन्य ग्रहों से उत्तर दिशामें निकलें तोहर प्रकार से शुभ फल दायक रहेगा वृहस्पति ग्रह मीन और धन राशि का स्वामि ग्रह है, धन तथा मीन राशि के नक्षत्रों से उत्तर दिशा में उदय हो तो सुभिक्षकारी है। दक्षिण में निकले तो अना-वृष्टि कारक-दुर्भिक्ष और तेजी कारक हुआ करता है।

(१) जब यह अश्विनी और भरणी तथा कृतिका के प्रथम चरण में मेष राशि पर भोग रखता है तो—सुभिक्षकारी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्दी कारक होता है।

मेषे-यदा सुर गुरुः क्षितिपाः प्रसन्नाः।
नीरोगकाश्च पशवो भरणीं च-ऋक्षे॥
सौख्यं-सुभिक्षमभितः कृतिके च साम्यम्।
ज्ञेयं बुधैः भुक्तिले बहुगोप्रसूतिः॥१॥

जब भी वृहस्पति ग्रह अश्विनी और भरणी इन नक्षत्रों में भोग रखता है तो राजाओं में परस्पर मित्रता बढ़ती है मनुष्य जीव जन्तु पशु सभी निरोग और सुखी होते हैं। समय पर वर्षा होती है व्यापारिक जिंसों में मन्दियाँ होती हैं, कृतिका नक्षत्र में कुछ अपेक्षा कृत तेजी हो जाती हैं मगर फिर भी ज्यादा तेजियाँ नहीं होती हैं भाव सामान्य से साम्यावस्था में ही बने रहते हैं परन्तु अश्विनी और भरणी के गुरु की स्थिति में मन्दी के चाँस ही ज्यादा सधने में आते हैं। कृतिका नक्षत्र में कुछ घटावढ़ी के साथ साधारण ही तेजी का रुख बन जाता है, मेष राशि का गुरु परिणाम में आधा वर्ष मंदी में और आधा उत्तरार्ध तेजी के योगों में बीतता है।

गुरु यदि मेष राशि में उदय होगा उस समय में मार्केट तेजी में बन जावेंगे, इस वास्ते यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वृहस्पति ग्रह एक राशि पर १ वर्ष तक बना रहा करता है। उसकी उदय और अस्त की अवस्था कब बनती है यदि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अश्विनी और भरणीमें रहता हुआ गुरुयदिउदय हो जाये तो मन्दी के वातावरण में अचानक तेजियां आ जाया करती हैं अधिक वर्षा होने से मार्केट तेज होते हैं, कृतिका के प्रथम चरण में बृहस्पति चल रहा है और उदय कृतिक में हो जाये तो तेजी बना करती है, और अस्त जब बृहस्पति होता है मेष राशि पर तो वृष्टि की कमी रहती है।

यद्यस्तमेति-जगतो-गुरुरल्प बृष्टिः ।
मेषे सदा वितनुते बहु मान्द्यमेव।
नूनं - गुरोरुदयनेत्वति-बृष्टिरेव ।
ज्ञेयं तदा बुध वरैः बहुधा महर्घम् ॥२॥

अर्थ साफ है कि बृहस्पति अस्त होकर भी वर्षा की कमी रखता है और उदय होने पर अति वृष्टि कर्ता है फिर भी उसका स्वभाव अश्विनी और भरणी नक्षत्र में रहते हुवे मन्दी कारक ही है, इसी विचार धारा को ध्यान में रखकर व्यापारी बन्धुओं को मार्केट की स्थिति की जानकारी करनी चाहिए।

(२) जब बृहस्पति ग्रह वृष राशि में पहुँचता है तो वर्षा की कुछ कमी रहती है प्रजा में साधारण पीड़ा रसादि पदार्थ बड़े तेज हुआ करते हैं। खाद्य पदार्थ विशेष तेज नहीं होते हैं, कृतिका नक्षत्र के तीन चरण रोहिणी और मृगशिरा का आधा भाग वृष राशि में होता है, कृत्तिका तथा रोहिणी में जब बृहस्पति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहता है तो वृष्टि मध्यम होती है धान्योत्पत्ति भी मध्यम ही रहा करती है, मृग शिरा के आधे भाग में सुभिक्ष तथा अच्छा मन्दापन हुआ करता है।

जीवो-यदा-वृषगतः कुरुते सुभिक्षम् ।
नाना विलास बहुसौख्ययुताः जनाःस्युः ॥
ज्ञेयं गुरोरुदयने वृषभे सुभिक्षम् ।
दुर्भिक्षमस्तगरतो-वृषभे महर्घम् ॥३॥

अर्थ साफ है कि वृषका गुरु सुभिक्षकारी हुआ करता है उदय होने पर भी मन्दी करेगा प्रजा सुखी रहेगी परन्तु जब वृष राशि पर अस्त होगा तब तेजियां व्यापारिक जिंसों में उदय और अस्त के समय की स्थिति को देखकर तेजी मन्दी कहनी चाहिये।

(३) जब वृहस्पति मिथुन राशि में होता है तो वर्षा की कमी होती है। प्रजा में अराजकता, व्यापारिक जिंसों में तेजियां होती हैं। राज विग्रह भी बन जाता है, मृग शिरा और आर्द्रा नक्षत्र और पुनर्वसु नक्षत्र के तीन चरणों में वृहस्पति मिथुन का होता है. मृग शिरा और आर्द्रा में वृहस्पति सुभिक्ष तथा वर्षा चाहता है परन्तु पुनर्वसु में वर्षा की ज्यादा कमी करता है।

अतः मिथुन के वृहस्पति से हर जिंस के व्यापार में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बड़ी उथल पथल होती है बड़ी मन्दी तेजियाँ हुआ करती हैं, अशान्त वातावरण बन जाते हैं अपने स्वभाव तथा गुण के अनुसार मिथुन का गुरु वर्षा की कमी करता है, तेजी बनाता और नक्षत्र भोग से शुभ फलदायक होता है, और मिथुन पर उदय होना उसका अच्छी तेजी चमकाता है जबकि अस्त होना भी बृहस्पति का तेजी कारक ही होता है।

जीवो-यदा-मिथुनगः कुरुतेऽल्प वृष्टिम्।
सृष्टि-क्षितौ क्षपयति-क्षितिपान्-तथापि॥
तैलं-घृतं च लवणं-पशु. शालि रत्नान्।
स्वावस्थया वितनुते सततं महर्घम्॥ ४॥

अर्थ साफ है कि अपने स्वभाव गुण के अनुसार मिथुन का गुरु तेजी कारक रहा करता है। बुध ग्रह मिथुन राशि का स्वामी है बृहस्पति की बुध से शत्रुता भी है वर्षा की कमी जनता का ह्रास रोग से राजा और प्रजा में पीड़ा रसादि पदार्थ तथा धान्य, रुई, पाट, बारदाना, तेल, घृत, लवण, पशु तथा धात्वादि रत्नों में सभी व्यापारिक जिंसों में मार्केट बहुत अच्छी घटा बढ़ी में चलते हैं व्यापारियों को मिथुन के बृहस्पति में अच्छे चांस निकलने से काफी नफे नुकसान होते हैं प्रत्येक व्यापारिक जिंसों का व्यापारिक रुख घटाबढ़ी के साथ तेजी का ही हुआ करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(४) जब बृहस्पति ग्रह कर्क राशि पर रहता है तो भी वर्षा की कमी और प्रजा और राजा में मत भेद तथा दुर्भिक्ष कारक योग बन जाते हैं। बाजार अनिश्चित अवस्था में चलते हैं, कर्क में गुरु के उदय होने से भी तेजी के ही योग होते हैं परन्तु जब बृहस्पति ग्रह कर्क राशि पर अस्त जिस समय होगा वहाँ वर्षा अच्छी होगी अचानक व्यापारिक जिन्सों में मन्दियाँ बनेंगी और सुभिक्षकारी समय बन जाया करता है।

कर्केगतः -सुर गुरुः कुरुतेऽल्प वृष्टिम्।
लोकाश्च विग्रहपराः-क्षितिपाः-सदोषाः ॥
ज्ञेयं महर्घम तुलं - रसधातु-धान्यम्।
कर्के गुरोरुदयने विपरीतमस्ते ॥५॥

अर्थात् जब बृहस्पति कर्क राशि में होवे वर्षा की कमी करें—प्रजा में विग्रह मत भेद अशान्तियां बढ़ें, रसादि पदार्थ तथा धान्यों में तेजी हो, बृहस्पति के कर्क राशि में उदय होने की अवस्था में ऐसा होता है और जब कर्क में बृहस्पति अस्त होता है तो वर्षा ठीक होती है व्यापारिक जिन्सों में मन्दियाँ हुआ करती है।

नोट—जब बृहस्पति कर्क राशि में गमनशील रहता है यदि वक्री हो जाय तो भी दुर्भिक्ष कारक तेजी कारक और त्रुटि कारक हुआ करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्क राशि गतो जीवो वक्रं याति च स्वोच्चगः।
राजानो विक्रियंयान्ति दुर्भिक्षं पृथिवीतले ॥१॥
राष्ट्रभङ्गं प्रजापीड़ा मेदिनी कलहान्विताः।
रसाः सर्वे महर्घन्ति रोगोपद्रव-शंकया ॥२॥
घृत तैल राण पट्टादौ तूलि कायां महर्घता।
यावद्भुक्ती भवेज्जीवो महर्घद्विगुणं भवेत् ॥३॥

अर्थ साफ है कि बृहस्पति की वक्रावस्था जब तक रहती है तब तक व्यापारिक जिंसों के भावों में तेजियाँ बनी रहती हैं। राजाओं में परस्पर भेद और पृथिवी में अराजकता तथा तेजियाँ होती हैं राज विग्रहः प्रजा पीड़ा और रोग उपद्रव तथा अनावृष्टि से मार्केट हर वस्तु की तेजी की तरफ रुख अपना बनाये रखते हैं, रस, घृत, तिल, तेल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई, कपास तथा खाद्यान्नों में तेजी होती है।

मार्गी बृहस्पति जब हो जाता है तब फिर मन्दी की तरफ मार्केट जाने लग जाते हैं ऐसा शास्त्रकारों का संकेत है।

(५) जब बृहस्पति सिंह राशि पर गमन करता है—तो वह सुभिक्षकारी हुआ करता है—मघा-पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का प्रथम चरण ही सिंह राशि में होता है। यह सुभिक्षकारी अच्छी वर्षा कारक तथा व्यापारिक जिन्सों में मन्दी कारक हुवा करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिंहे-गतः-सुर - गुरुः कुरुते-सुभिक्षम् ।
मेघाः क्षिपन्ति-सुजलं-क्षितिपाः प्रसन्नाः ॥
धान्यं-धनं-बहुविधं-बहुधा-सुभिक्षम् ।
ज्ञेयं गुरौ-समुदिते-विपरीतमस्ते ॥ ५ ॥

अर्थात् जब बृहस्पति ग्रह सिंह राशि पर पहुंचता है तो यह सुभिक्षकारक—मन्दी कारक तथा वर्षा कारक एवं राजा प्रजा में भी शान्ति और सद्भावना दायक ही होता है जब गुरु ग्रह सिंह राशि पर उदय होता है तो भी सुभिक्ष क्षेम—आरोग्यता दायक ही होता है और सिंह राशि पर अस्त हो जाने से विपरीत फल करता है अर्थात व्यापारिक जिन्सों में तेजियाँ हो जाती हैं।

नोट—सिंह राशि में वक्री बृहस्पति मन्दी कारक और मार्गी बृहस्पति तेजी कारक ही हुवा करता है।

(६) जब बृहस्पति कन्या राशि में जाता है तो भी सुभिक्षकारी मन्दी कारक तथा आरोग्यता देने वाला एवं शुभफल सूचक हुआ करता है उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के तीनों चरण तथा हस्त तथा चित्रा के दो चरण भी सुभिक्षकारी होते हैं।

कन्यां गते सुरगुरौभवतीदृमान्धम् ।
द्रोणी-रसैः घन-घृतादि समाकुलाऽपि ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वेद्यां-समर्घमतुलं-वितनोति-सौख्यम् ।
क्षेमं सुभिक्षमुदिते-विपरीत मस्ते ॥६॥

जब कन्या राशि में वृहस्पति ग्रह जाता है तो वह सुभिक्ष कारी मन्दी कारक वर्षा कारक होता है। भूमि, रस, धान्यादि से परिपूर्ण रहती है जो फल कन्या के गुरु का होता है वही फल उदय होने की अवस्था में होता है अस्त काल में कन्या का गुरु तेजी कारक हानि कारक होता है।

नोट—जब वृहस्पति ग्रह कन्या में वक्री हो तो मन्दापन मार्गी हो तो तेजी कारक जानना—

(७) जब तुला राशि में वृहस्पति ग्रह रहता है तो भी व्यापारिक जिन्सों में मन्दी कारक होता है मगर व्यापक मन्दियां तुला के वृहस्पति में नहीं होती हैं किसी देशों में तेजियों का वातावरण होता है प्रजा में रोग हुआ करता है। चित्रा के दो चरण स्वाति विशाखा के तीन चरणों की तुला राशि होती है।

विशाखाया मनुराधायां व्रजेच्चैव वृहस्पतिः ।
मध्यमैव भवेद्वर्षा-मध्यमैवचध्यान्यकम् ॥७॥

तौलि-गते-सुरगुरौ-ज्वरव्याधिदोषाः ।
रोषाकुला-नृपतयो-समतैव-ज्ञेया ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षीरं-च चन्दन फलादि-समस्तधान्यम् ।
लाभो - महानुदयने च सुभिक्षमस्ते ॥७॥

जब बृहस्पति ग्रह तुला राशि में घूमता रहता है तो जनता में ज्वरादि रोगोपद्रव तथा राजाओं में भी विग्रह तथा अशान्तियां होती हैं धान्य भाव सम रहते हैं। घृत, दूध, चन्दन, फल, रसादिपदार्थ, सातों प्रकार के धान्य तेजी में जाकर लाभ देने वाले होते हैं। तुला के बृहस्पति की उदय अवस्था में भी ऐसा ही फल होता है अस्त होने पर मन्दा रहा करता है।

नोट—जब तुला में बृहस्पति वक्री हो तो सातों धान्य तथा बर्तन पीतल तथा ताम्बा. कपास, रुई, पाट, बारदाना, नमक आदि सभी रसादिपदार्थों में तेजी आया करती हैं। यदि तुला में बृहस्पति अस्त होता है तो मन्दी के योग बनाया करता है। मार्गी होता है तो भी मन्दी कारक ही हुआ करता है।

(८) जब बृहस्पति ग्रह वृश्चिक राशि में प्रवेश करता है तो दुर्भिक्ष कारक तेजी कारक वृष्टि नाशक एवं उपद्रव कारक ही हुआ करता है। अनुराधा ज्येष्ठा नक्षत्र भी वृश्चिक राशि के गुरु के तेजी कारक ही है।

अलिगते-च गुरौहि-महर्घता ।
विविध धान्य विनाश-करीमता ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लवण-धान्य-कपास रसादिषु।
भवति लाभकारी-क्रय विक्रयात् ॥८॥

जब वृहस्पति वृश्चिक राशि मे रहता है तो व्यापारिक वस्तुओं की तेजी नाना प्रकार के धान्यों के व्यर्थ नष्ट हो ने से बढ़ जाती है और रसादि पदार्थ-लवण-धान्य-कपास रुई के सभी व्योपारों में लाभ होता है खरीद कर माल बेचने की अवस्था में ही लाभ होता है। तेजी के चांस ही ज्यादा हुआ करते हैं।

समुदिते च गुरावलि राशिगे।
विकृति गे ऽपि तथैव महर्घता ॥
द्विगुणिता-रस-शालि-कसादिषु।
नयन रोग करो विपरीतगः ॥९॥

जब वृहस्पति वृश्चिक राशि में उदित होता है तथा वक्री होता है तो भी व्यापारिक जिंसों में वह तेजी कारक ही हुवा करता है और दुगुना तिगुना लाभ रस कसादि वस्तुओं में होता है तथा अस्त होकर मार्गी होकर वृहस्पति मन्दी कारक ही रहा करता है विद्वानों को वृहस्पति की अवस्था को ध्यान में रखकर तेजी मन्दी कहनी चाहिए।

वृश्चिकं यदि संप्राप्य वक्रं याति बृहस्पतिः।
धान्यस्य सं ग्रहस्तत्र शालेश्चैव विशेषतः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्पासस्य घृता देर्वा-मार्गं शीर्षेतुविक्रये ।
द्विगुणों जायते ला भस्तदा संग्रह कारिणः ॥२॥

जब वृहस्पति वृश्चिक में पहुँच कर वक्री होता है तो धान्यों का विशेष कर चांवलों का संग्रह करके तथा कपास रुई पाट वार दाना घृत तेल का संग्रह करके मार्ग शीर्षि मास में बेचने से दुगुना तिगुना लाभ होता है मार्गी अवस्था में अथवा अस्तावस्था में ऐसा नही होता है अर्थात मंदी के योग बन जाते हैं ऐसी अवस्था में बुद्धिमान व्यापारियों को समझ कर व्यापार करना चाहिए ।

जब वृहस्पति धन राशि में पहुँचता है तो वर्षा काल में धान्य सातों ही तेज हो जाते हैं तथा तेल-घृत- गुड़ भी वर्षा काल में सस्ते ही रहते हैं रुई, पाट, वारदाने में भी तेजियां हो जाती हैं । वर्षा की कमी से ऐसा फल जो बना करता है वृहस्पति के धन राशि के उदय काल में वर्षा की कमी हवा करती है उड़द तथा मूंगफली की पैदायश बहत हुवा करती है।

धनगते चगुरौ हिमहर्घता ।
कस-कपास-शणान्न स्वर्णं के ।
घृत, गुड़, तिल तेल समर्घकम् ।
भवति-माष-तिलादिसमन्वितम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धन राशि में वृहस्पति कस कपास शन अन्न स्वर्ण आदि वस्तुओं में तेजी कारक होता है और घृत गुड़-तेल तिल उड़द मूंग में मन्दी कारक होता है उदय अवस्था में मंदी कारक होता है।

नोटः—धन राशि में जब वृहस्पति वक्री होता है। तो शीघ्र ही सातों प्रकार के धान्यों में ही मंदा पन हो जाता है तिल तेल घृत आदि में भी मंदा पन होता है मार्गी अवस्था में बजाय मंदे के तेजियां हुवा करती हैं विपरीत फल वक्री से मार्गी का हुवा करता है।

जब वृहस्पति ग्रह मकर राशि में पहुँचता है तो वह घोर दुर्भिक्ष कारक तथा विग्रह कारक और अशान्ति कारक हुवा करता है।

मकरगे चगुरौहि महर्घता।
क्षिति पतिर्वहु विग्रह कारकः॥
समुदिते मकरे च समर्घता।
शनिगृहेऽस्त गते तुमहर्घता॥१०॥

अर्थ साफ है कि जब वृहस्पति ग्रह मकर राशि में होवे तो तेजी कारक होता है राजा भी विग्रह कारक होते हैं जब मकर में यदि वृहस्पति रहता हुवा उदय हो जावे तो मंदी कारक और अस्त होने पर तेजी कारक ही हुवा करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मार्गी-करोति नियतं-हि-गुरु-महर्घम् ।
वक्री सदा मकरगः प्रकरोति मान्द्यम् ॥

इत्थं विचित्त्य सुधिया निजया धियातत् ।
वाच्यं महर्घम परं च समर्घं योगम् ॥११॥

मार्गी मकर का गुरु तेजी कारक वक्री मकर का गुरु मंदी कारक सुभिक्ष कारक हीं हुआ करता है जैसाकि शास्त्रान्तरों में भी स्पष्ट लिखा है ।

मकरस्थो यदा जीवो विकारं कुरुते यदि ।
आरोग्य सर्व जन्तूनां धान्यं स्यात्समघकम् ॥१२

अर्थ साफ है कि मकर राशि का बृहस्पति वक्री अवस्था में आरोग्यता दायक होता है धान्यों में मंदी का योग बनाया करता है। सुभिक्ष क्षेम कारी हुवा करता है।

जब वृहस्पति कुम्भ राशि में जाता है तो बादल कम वर्षा किया करते हैं। फिर भी पूर्वीय प्रान्तों में वर्षा अच्छी होती है । तिल तेल गुड़ में मंदी के योग बना करते हैं

कुम्भे गतो यदि गुरुः कुरुते ऽल्पवृष्टिम् ।
वृष्टिं करोति वहुलामपि पूर्व भागे ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धान्यं-महर्घं मुदिते ऽपि गुरौ-समन्तात् ।
अस्तं-गते भवति वृष्टि भवंसमर्घम् ॥

अर्थ साफ है कि कुम्भ राशि में जब भी देवगुरुः भ्रमण करते हैं तो पश्चिमी प्रान्तों में वर्षा की कमी रहती है पूर्वी प्रान्तों में वर्षा अच्छी होती हैं और जब वह कुम्भ में उदय होता है तो भी व्यापारिक जिंसों में तेजी कारक हवा करता है अस्तावस्था में वर्षा कारक सुभिक्ष और मंदी कारक ही हुवा करता है

वक्री अवस्था में कुम्भ राशि का गुरुः सदा आरोग्यता देने वाला सुभिक्षकारी तथा अन्नोत्पत्ति कारक होता है व्यापारिक सभी जिंसों का संग्रह किया हुवा भविष्य में लाभ देता है मार्गी अवस्था होने पर तेजियां बनती हैं

वक्री—सदा वितनुते परितः समर्घम् ।
कुम्भे गुरुः क्रय वशात् द्विगुणं करोति ॥
मार्गी यदा भवति विक्रयतो धनस्य ।
लाभो भवेत्सततमत्र विकार हेतोः ॥१२॥

अर्थ साफ है कि वक्री कुम्भ के गुरु में माल खरीद कर मार्गी कुम्भ के गुरु में माल बेचने से लाभ होता है यह प्रायः स्थिति धान्यों की तेल तिलहन में गुड़ -चावलों में होती है बृहस्पति ग्रह के विकार के हेतु तेजियाँ मार्केट में मार्गी होने पर ही आती है ऐसा देखा जाता है, रुई की खरीद पाट वारदा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने की खरीद भी यदि कोई व्यापारी स्टाक के रूप में यहां कुम्भ के वृहस्पति में करलेगा तो आगे मीन के गुरु में मोटा नफा प्राप्त करेगा।

मीन राशि में जब वृहस्पति आ जाता है तो वह तेजी कारक हुवा करता है प्रायः रुई-पाट-धारदाने गल्ला तेल तिलहन अच्छी तेजी में बन जाते हैं।

मीने-यदा-भवति-देवगुरुर्महर्घम्।
वर्षा ऽल्पिका नृपतयो बहु रागयुक्ताः॥
कार्पासपट्ट-शण-सूत्र-गुड़ं महर्घम्।
वक्री यते लवणतेल तिलादिकंम् च॥

अर्थ साफ है कि जब वृहस्पति मीन राशि में हो तो व्यापारिक जिंसों में वर्षा की कमी से तेजियां ही होती है और जब मीन का गुरु वक्री हो तो गुड़-शक्कर पाट बारदाना सरसों अलसी अंडी रुई लवण घृत तेल सातों धान्य बहुत ही तेज हो जाते हैं चौगुना तक लाभ हुवा करता है।

और जब मार्गी होता है जब मंदियां हुवा करतीं हैं मीन का गुरु बक्री होने पर रुई, कपास में बहुत मोटा नफा देता है चौगुने लाभ हो जाया करते हैं व्यापारियों को इस योग से लाभ उठाने के वास्ते कुम्भ राशि के गुरु की मंदी में ही स्टाक कर लेना चाहिए तभी मीन का गुरु वक्री होने पर चौगुना नफा कर देगा। जैसा कि शास्त्रान्तरों में भी लिखा है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मीनराशि गतो जीवो विकारं कुरुते यदा।
धान्यक्षयः प्रजानाशः चौराद्राजा ऽपि गेषितः ॥१॥
तुला-भान्डं-गुड़ंधान्यं-सर्वं चरसादिकम्।
लवणं-घृत-तैलादिसर्व-धान्य-महर्घता ॥१॥
पट्टानां-शालिवस्त्राणां-कार्पासस्य महर्घता
विकारे मीन राशिस्थे गुरौ ज्ञेया महर्घता ॥२॥

अतः मीन राशि के बृहस्पति की वक्री अवस्था तेजी कारक होती है।

मेषादि राशियों पर सूर्य संक्रमण का फल

मेष राशि पर जब सूर्य होता है तो वह अपनी उच्चारा-शि का हुवा करता है और मंगल ग्रह के घर का सूर्य मित्र क्षेत्री माना जाता है फिर भी यदि मेष की संक्रान्ति यदि १५ मुह-र्ती क्रूरवार में लगेगी तो तेजी कारक रहेगी और यदि ४५ मुहर्ती शुभवार में लगेगी तो मन्दी कारक होती है यदि क्रूरवार में हो तो ४५ मुहर्ती हो भाव सम हो जायेंगे यदि शुभवार में हो और १५ मुहर्ती लगे तो भी भाव सम ही जाया करते हैं ३० मुहर्ती सँक्रान्ति बराबर भावों को समानस्तर पर रखती है कभी २ सूर्य पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो जाने से फल में कुछ मन्दापन और पाप ग्रह की दृष्टि से कुछ तेजी का फल रहा करता है सँक्रान्ति की मुहर्ती स्थिति होना शुभवार या पाप वार में लगना शुभ ग्रह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाप ग्रह क सम्बन्ध सूर्य से रहना ये सब विचार मन्दी तेजी के अपनी बुद्धि से भी समझ कर आगे के वास्ते ध्यान निश्चित करना चाहिए। यहाँ मेषादि राशियों पर सूर्य अपनी स्वाभाविक गति से क्या फल किया करता है यही दिखाया जा रहा है।

मेष राशिस्थ सूर्य का फल

मेषेस्थितो-दिनमणिः कुरुते महर्घम्।
धान्येसु-माष-रस-शालि गुड़ादिकेषु ॥
तैलादिकेषु-भवतीह फलं समस्तं।
सौभ्यान्विते शुभखगे तुसमर्घमेव ॥१॥

मेष सँक्रान्ति-रविवार मँगलवार शनिवार में लगे तो अन्नादि तेज होते हैं गुरुवार सोमवार चन्द्रवार में लगने से मन्दापन बुधवार में लगने से श्वेत वस्तुओं में अच्छी तेजी होती है। रुई पाट वारदाने में भी अच्छी तेजियाँ मेष के सूर्य में चमकती हैं।

मेष राशि पर जब सूर्य देव गमन करते हैं, समस्त धान्य गेहूँ-चना-जौ-मटरा-अरहर उड़दमूंगादि चावलों में सस्तापन धान्य रुई-इक्षु विकार की चीजें-गुड़-खाँड-शक्कर चीनी आदि-तिल तेल घृत-आदि वस्तुओं में तेजियाँ होने लग जाती हैं, सरसों अलसी अंडी आदि तिलहन में भी तेजियाँ आया करती हैं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और यदि सूर्य परशुभ ग्रह की दृष्टि होती हो तो विशेष तेजी नहीं होगी उस अवस्था में भावों का रुख मंदी की तरफ आया करता है उस अवस्था में सम्वतत्सर का फल एवं अन्य भी विचारों को देश काल परिस्थिति वश समझकर तब फलादेश कहना चाहिए।

वृष राशिस्थ सूर्य फलम्

वृषराशौ स्थितःसूर्यो भवेत्सौख्यं समर्घकम् ।
गोरसाज्यं महर्घत्वं धान्यं चबहुलं भवेत् ॥

वृषि राशि पर सूय-आने से-सब प्रकार से प्रजा में सुख शान्ति होती है अन्न भी काफी पैदा होता है और मंदापन भी होता है दूध, घृत रसादि पदार्थों में तेजी की स्थिति बन जाती है धान्योत्पत्तिः अच्छी होती है यहाँ भी यह ध्यान रखना चाहिए कि वृष राशि की सन्क्रान्ति कितने मुहर्ती है शुभ ग्रह की दृष्टि वृष के सूर्य पर हों अथवा पाप ग्रह की दृष्टि सूर्य पर पड़ती है इन सब बिचारों को ध्यान में रख कर तेजी मंदी पर विचार करना च हिए।

वृष संक्रान्ति गुरुवार शुक्रवार में लगने से गल्ला मंदा शनिवार मंगलवार सूर्य वार में लगने से धान्य भाव तेज हो जाते हैं यहाँ ग्रह लाइन को भी ध्यान में रखना चाहिए।

मेषादि राशियों पर सूर्य संक्रमण फल

मिथुनगे च रवौ हि महर्घता ।
भवति तेल कपास गुड़ादिषु ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घृत तिलेषु च माष फलेषु, वां ।
शु भखगेषु युते ऽपिच मन्दता ॥३॥

मिथुन राशि में सूर्य के रहने से -रुई-पाट- वारदाना- कपास कन्द मूल फल-गुड़-खाँड देशी शक्कर चीनी -घृत तिल तेल उड़द मूँग-चावल गेहूँ चना मटरा अरहर आदि धान्यों में तेजी के योग बना करते हैं भावी ग्रहों के योग एवं दृष्टि सम्बन्ध से खास तौर पर तेजियाँ ही रहा करती हैं और शुभ ग्रह के योग से अथवा दृष्टि सम्बन्ध से मन्दी के योग बना करते हैं। देश काल की परिस्थिति को भी ध्यान में रखकर फला देश मिलाना चाहिए, फिर भी मिथुन में सूर्य अपने स्वभाव तथा गुण के हिसाब से जो फल किया करता है वही फल यहाँ दिया गया है यह मिथुन का संक्रान्ति यदि रविवार मंगलवार शनिवार को लगे तो फसल कम सिकरती है भावों का रुख तेजी की तरफ जाया करता है सोमवार, गुरुवार शुक्रवार में अच्छी घटा बढ़ी होती है भावों का रुख मंदी का बना करता है मिथुन में सूर्य मध्यम फल ज्यादा किया करता है

कर्क राशिस्थ सूर्य फलम्

कर्क राशि में सूर्य के रहने से धान्य किसी देश में तेज और किसी देश में मन्दे रहते हैं श्लेषा के सूर्य में वर्षा भी कहीं कहीं धान्यों की तेजियों को बनाया करती हैं।

कर्के गतोदिन मणिः कुरुते सुवृष्टिम् ।
सृष्टिं सदा सुखयतिश्लेषाशुभो न

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0: In Public Domain. Digitization by eGangotri

मान्द्यं सदा शुभदिने सति संक्रमे ऽपि
पापान्विते ऽशुभदिने च भवेन्महर्घम् ॥४॥

कर्क राशि में यदि सूर्य को संक्रान्ति लगे तो देश में अच्छी वर्षा से श्रावणी को फसल अच्छी होती है जनता सुखी और सुभिक्ष होने से हर वस्तु के मार्केट में मंदापन आया करता है पाट-बारदाना- रुई-कपास एवं गल्ला मंदी में जाते हैं मगर श्लेषा नक्षत्र में यदि वर्षा हो जाती है तो हर वस्तु के मार्केट में मंदी कम होती है श्लेषा की वर्षा शुभ नहीं मानी जाती है शुभ वारोंमें सोमवार गुरुवार शुक्रवार में संक्रान्ति मंदी कारक शनिवार मंगलवार में रविवार में तेजी कारक रहती है बुधवार में कर्क सँक्रान्ति लगने से दुतर्फा घटा बढ़ा रहा करती है, श्लेषा का सूर्य वृष्टि होने पर कहीं कहीं तेजी कारक ही हुवा करता है जैसा कि शास्त्रान्तरों में भी कहा है कि—

कर्करःशिस्थि तो भानुः श्लेषायां तत्र वर्षति
धान्यानि तत्रसर्वाणि क्वचित्कापि महर्घता ॥४॥

अर्थ साफ है कि श्लेषा की वर्षा कहीं कहीं प्रान्तों में धान्य भावों को तेजी में ही लाती है।

सिंह राशिस्थ सूर्य फलम्

सिंहे-गते-दिनपतौ विपणे महर्घम् ।
ईक्षवादि मिष्ट तिल तेल रसादिकेषु ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धात्वादि रत्न रजतादि स्वर्ण केषु ।
पापान्वि ते, सुरगुरो र्नहि पूर्ण दृष्टेः ॥५॥

सिंह राशि में जब सूर्य देव संक्रमण लेते हैं तो-गुड़ खाँड़ शक्कर तथा तेल- सरसों अल सी तथा अंडी के बीज- घृत आदि वस्तुओं में सोना, चाँदी, रत्न तथा शेयर्स में स्वर्णादि के भावों में अच्छी तेजी कारक होते हैं पापग्रह से यदि सूर्य युक्त होता है विशेष तेजी भी आजाती है जब कि शुभ ग्रह बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि सिंहस्थ सूर्य पर नहीं हो तो तेजी अच्छी होती है यदि शुभ ग्रह के साथ वह सिंह का सर्य हो अथवा बृहस्पति से पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध रखता हो तो पाट, वारदाना है शयन खाँड़ गुड़ शक्कर सातो धान्य आदि सभी जिंसों में मंदापन आ जाता है। यदि सिंह की संक्रान्ति मंगलवार, शनिवार रविवार में लगती है तो तेजी कारक होती है और यदि सोमवार बुधवार गुरुवार शुक्रवार, में होवे तो मंदापन होता है फिर भी देश काल का भी ध्यान रखना चाहिए सूर्य की सँक्रान्ति प्रायः दुतर्फी घटा बढ़ी के योग में को दिया करता है रुख अधिकाँश में मार्केट तेजी का ही लिए हुवे रहा करते हैं।

कन्याराशिस्थ सूर्य फलम्

कन्यां-गते-दिन पतौ-तिल तेल मिष्टम् ।
मंजिष्ट-काष्ट-शण-धान्य-रसं महर्घम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञेयं-शुभं--शुभदिने-सति-संक्रमेऽपि ।
धात्वादिकं-सकल-वस्तुभवेत्समर्घम् ॥

जब कन्या राशि में सूर्य की संक्रांति लग जाती है तो तिल तेल खाँड़-गुड़शक्कर मंजिष्ठ-काष्ट-शण-धान्य घृत-रसादि पदार्थ तेज हो जाते है शुभ दिन में संक्रांति लगने से शुभ ग्रह की दृष्टि कन्या राशि के सूर्य पर रहने से मंदापन सभी जिंसों में आता है धात्वादि में सोना चाँदी लोहा तांबा पीतल शेयर्स के भावों में मंदापन आता है। जैसा कि शास्त्रांतर में भी कहा है,

कन्या राशि गते भानौ-मंजिष्ठं मिष्टशर्करा
ना रिकेलं तिल तैलं सर्वस्यच महर्घता ॥६॥

अर्थ साफ है कि कन्या के सूर्य में नारयल-तिल-तेल-मंजिष्ठ आदि सभी जिंसें मंदी हो जाती है। शुभवार में संक्रान्ति कन्या की लगे तो अच्छा है पापवार में अच्छा फल नहीं रहता है फिर भी सातों वारों में कन्या संक्रांति के लगने से जो फल संभव हो सकते हैं दिये जा रहे हैं।

कन्या संक्रान्ति

(१) अगर रविवार की हो तो हर प्रकार का गल्ला अनाज, गेहूँ, जौ, चना, चावल, सोना और चाँदी तथा रसदार पदार्थ घी और तेल में घटा बढ़ी होती रहेगी, पाट-वारदाना भी तेज होना है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(२) यदि कन्या की संक्रान्ति सोमवार को लगे तो गेहूँ जौ, चना, मटरा, सूत लोहा रेशम तेज होंगे, चावलों के भावों में भी तेजी का रुख रहेगा, सोने में तेजी हो जायेगी चाँदी सस्तो सम भावों में रहेगी चावल तेल और घी सस्ते रहेंगे, सन, सूत जूट और पोस्त तेज रहेंगे, रुई का बाजार सस्त रहेगा मक्का बाजरा उड़द मूंग में तेजी रहेगी, नारियल, सुर्ख रंग हल्दी, मजीठ लौंग, जायफल और चावलों का भाव सस्ता रहेगा, तेल तिल, अलसी सरसों में तेजी रहेगी, लोहा ताँबा तेज रहेगा, खॉड सस्ती रहेगी, गुड़ का भाव तेज रहेगा, कोयला तेज रहेंगे गाय भैंस सस्ते रहेंगे।

(३) मंगलवार को हो तो हर प्रकार का गल्ला तेज रहेगा रुई कपास सन पाट-बारदाना विनौला, अलसी सरसों अंडा में मदी होगी मोटे नाजों में उर्द मूंग मसूर मकई अरहर चने ताँबा जस्ता लोहा नमक तेज हल्दी सभी प्रकार केरगधनियां और जीरे में तेजी रहेगी, फलदर पदार्थ नारियल जायफल इत्यादि सस्ते रहेंगे, घी दूध तेल भी सस्ता रहेगा सूत तथाऊनी देशी वस्त्रों मैंअच्छी घटा बढ़ी होती रहेगी मदी में व्यापारियों को कपड़े का स्टाक इकट्ठा करके रखना चाहिए। २ मास बाद नफा अच्छा रहेगा।

(४) कन्या संक्रांति बुधवार को लगे तो हर प्रकार का कपड़ा सस्ता रहेगा, श्वेत रंग के पदार्थ सस्ते रहेंगे, शेयर्स का भाव सस्ता रहेगा, कपास रुई पाट बारदाना सूत का भाव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सस्ता रहेगा कही कही पर पानी के अधिक बरसने से फसल नष्ट हो जायेगी, पश्चिमी भाग में संक्रांति के शुरू में कुछ तेजी दिखाई देगी, महीने के अन्त में मन्दा हो जाने कीसम्भावना है,

(५) यदि वृहस्पतिवार को यह संक्रांति लगे तो हर एक जिंस तथाधान्यों का भाव सम रहेगा रसदार पदार्थों में तेजी बनेगी १५ दिन बाद को भाव सस्ते हो जायेंगे गेहूँ,जौ, चना के भाव में घटा बढ़ी होती रहेगी चावलों का भाव में घटा बढ़ी होती रहेगी चावलों का भाव सस्ता रहेगी सुगंधित पदार्थों में तेजी हो जायेगी, इत्र और चन्दन तेज रहेंगे, मक्का ज्वार, बाजरा, उर्द मूंग उड़दमसूर सस्त रहेंगे धातुओं में सोना शेयर्स सस्ता रहेगा तांबे और लोहे का बाजार तेज होगा,

(६) कन्या संक्रांति यदि शुक्रवार को हो तो गल्ला अनाज चावल गेहूँ जौ चना के भाव में घटा बढ़ी अच्छी हो रुख मंदी का रहेगा सोना चांदी गुड़ शक्कर और सरसों अलसी अंडी का बाजार सम रहेगा, तांबा लोहा कोयला और खनिज पदार्थों का बाजार थोड़ा तेज होकर फिर मंदा हो जायेगा मक्का बाजरा ज्वार और उर्द मूंग के बाजार में घटा बढ़ी होती रहेगी रसदार पदार्थ तेज हो जायेंगे घृत और रस तथा तिल और मोटा अनाज का बाजार शुरू में मंदा रहकर अंत में तेज हो जायेगा कपास, रुई का बाजार तेज रहेगा, पाट और सन का भाव सस्ता रहेगा चौपायों हाथी, ऊंट भेड़ें सस्ता रहेगी कहीं कहीं पर ओलों के पड़ने की खबर सुनाई देगी नारियल जायफल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनियां लौंग और जावित्री बादाम कत्थे का बाजार तेज रहेगा।

(७) अगर कन्या संक्रांति शनिवार को आकर लगे तो हर एक पदार्थ का भाव सम रहता है चना, गेहूँ, जौ, मटरा अरहर भाव संक्रांति के अन्त में कुछ तेज हो जाता है और घी व दही खांड गुड़ शक्कर चावल संक्रांति के शुरू में तेज होकर फिर मंदे हो जाते हैं रसदा पदार्थ सभी तेज हो जाते हैं सोना चांदी लोहा तांबा आदि धातुओं का बाजार सम रहता है रुई कपास का भाव शुरू में सस्ता रहेगा फिर तेज हो जायेगा गुड़ और शक्कर का भाव सम रहेगा तथा महीने के अन्त में सम रह कर सस्ते हो जायेंगे।

तुला संक्रान्ति

(१) अगर तुला संक्रान्ति रविवार को लगे तो हर प्रकार के धान्यों में मंदाई और मीठा बाजरा, उर्द मूंग मक्का लोबिया चना का भाव सस्ता रहे रुई और कपास में घटा बढ़ी होकर रुख तेजी का हो लौंग जीरा धनियाँ जायफल इलायची नारियल का भाव तेज रहेगा, सोना चाँदी सूत में तेजी रहेगी सफेद रँग का कपड़ा तेज हो जायेगा रेशम ऊन भी तेज रहेगा, गाय बैल भेंस मैं तेजी होगी रसदार पदार्थ तिल तेल गुड़ घृत का भाव तेज रहेगा हल्दी धनियां जीरे में बाद में अच्छी तेजी रहेगी चावल सस्ते रहेंगे

(२) अगर तुला कीसंक्रान्ति सोमवार की लगे तो चावल चांदी घृत सस्ता होकर फिर तेज हो जायेगे गेहूँ चना तथा लकड़ी का भाव सम रहेगा सोना ताँबा जस्ता में घटा बढ़ी हो पोस्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रुई सूत सन पाट बारदाना कपास का भाव मँदा रहेगा मक्का बाजरा उर्द मूँग मोठ अरहर लोबिया का भाव सस्ता रहेगा। नारियल सभी रँग हल्दी मिर्च धनिये का भाव सस्ता रहे फिर कुछ तेजी आवे तिल तेल घृत अलसी अँडी सरसों का भाव सम रहेगा गुड़ खाँड शक्कर देशी खाँड तेज रहेंगे गाय भैंस का भाव तेज रहेगा ह थो ऊँट बकरी मदी रहेगी।

(३) अगर तुला की सँक्रान्ति मँगलवार की हो तो गेहूँ जौ चना चावल सोना चांदी का भाव कछ तज होकर बाद मँदी में जायेगा तथा घी तेल इत्र इत्यादि और मोटे अनाजों का भाव सम रहेगा यानी उर्द मूँग मक्का ज्वार बाजरा लोबिया का भाव सम रहेगा ताँबा लोहा सस्ता तेज रहेगा और किराने में नमक मिर्च धनिया हल्दी सस्ती होकर कुछ तेजी में जायेगी रँग जीरा धनियां में तेजी रहेगी फलदार पदार्थ में नारियल जायफल सेव आदि तेज रहेंगे घी दूध दही तेल सस्ते रहेंगे सूत कपास कपड़ा तेज होगा

(४) अगर तुला की सँक्रान्ति बुधवार को आकर लगे तो गेहूँ जौ चना मटरा अरहर चवल को मंदा करती है श्वेत रँग के पदार्थ और धातुओं का भाव भी सस्ता रहता है तिल तेल घृत और सुर्ख रँग के पदार्थ सभी तेज हो जाते हैं कोयला लकड़ी जूट पाट बारदाना सूत का भाव सस्ता रहता है सुर्ख मिर्च हल्दी केशर लाल चन्दन तेज रहते हैं बाजार तेज रहता गाय बकरी सस्ते और भैंस और हाथी बैल चौपाये तेज रहते हैं

(५) अगर तुला की सँक्रान्ति बृहस्पति को आकर लगे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो बाजार सम रहेंगे चांदी का भाव सस्ता हो जावेगा रुई सूत कपास पाट बारदाना के भाव आदि में कुछ तेजी रहकर अन्त में मदा आना है चावलों का भाव सस्ता रहेगा। बिनोलों में कुछ तेजी रहेगी फिर सस्ते हो जावेगें रसदार पदार्थ तथा अलसी तिल पोस्त तेज रहेंगे नारियल सोना ताँबा तेज रहेगा अफीम और पोस्तों के भाव में घटा बढ़ी होती रहेगी ऊनी और रेशमी कपड़ा तेज होगा। गेहूँ चना सम रहेंगे और रमास और लोबिया में कुछ तेजी होकर अन्त में मंदे हो जावेंगे।

(६) अगर तुला की संक्रान्ति शुक्र की आकर लगे तो गेहूँ चना जौ मटरा का भाव सम रहे चावल तेज हो चाँदी घृत सम रहे सोना तेज रहें गुड़ शक्कर और अलसी अंडी सरसों तेज रहे ताँबा लोहा खांड कोयला पत्थर का भाव तेज रहे मक्का ज्वार बाजरा उर्द मूंग लोबिया का बाजार मंदा रहे रसदार पदार्थ मंदे रहेंगें तिल तेल का भाव तेज रहेगा और लाल रंग मजीठ सुर्ख चन्दन का भाव तेज होकर कुछ मंदा होगा जूट और सन पाट बारदाना कपास का भाव तेज रहेगा।

(७) अगर तुला की संक्रान्ति शनिवार को आकर लगे तो गल्ले के भाव में घटा बढ़ी रहेगी गेहूँ चना जौ का भाव सम रहेगा संक्रान्ति के अंत में कुछ तेज होजायेगा घी मंदा गुड़ तेल शक्कर चावल तेज रहेंगे रुई कपास का भाव तेज होकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फिर मंदा हो जायेगा बिनौले का भाव सम रहेगा चौपायों में गाय बकरी हाथी तेज रहेंगे सोना चाँदी शेयर्स तेज होंगे

वृश्चिक राशिस्थ सूर्य फलम्

अलिगते-च रवौ हि महर्घता।
शशि गुरौ -कवि-वार वशाद्भवेत् ॥
शनि-कुजे चगते-ननु संक्रमे।
बुध वशाद्भवतीह महर्घता॥

यदि सूर्य वृश्चिक राशि का होवे तो स्वभाविक गति से मंदा करता है सोमवार गुरुवार शुक्रवार में संक्रांति वृश्चिक की लगने से मन्दापन होता है शनिवार मंगलवार बुधवार वृश्चिक की संक्रांति लगे तो तेजी कारक हुवा करती है। जैसा कि शास्त्रान्तरों में भी कहा गया है।

यदा र्कः वृश्चिके याति तदार्घं समतांमियात्।
ओर्णिकं सर्व द्रव्याणां स्वल्पार्घेण प्रदीयते ॥८॥

ऊनी वस्त्र सभी प्रकार के द्रव्य तथा धान्य भाव तेज हो जाते हैं।

तौलिं-गते-दिन पतौ शुभ संक्रमे च।
धान्यादिकं भवति स्वल्प तया समर्घम्॥
पापान्विते-शुभदिने तु भवेन्महर्घम्।
ज्ञेयन्वुधैः निजधियातुसमर्घ मर्घम् ॥९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जब सूर्य तुला राशि में प्रवेश करता है तो धान्यादि में मंदी लाया करता है यह तुला संक्रांति यदि पापवार में लगती है तो व्यापारिक जिंसों में तेजियां शुभ वारों में लगती है तो व्यापारियों को जिंसों में मंदियां आया करती हैं ये विचार तेजी के बुद्धिमान् व्यापारियोंको अपनी विवेक बुद्धि से ही जान लेने चाहिए फिर भी हम वार वशात होने वाली घटा बढ़ी का विवेचन करते हैं कितने मुहर्ती है कैसी स्थिति में है भक्ष्य संक्रान्ति का क्या है सब बातें देखनी चाहिए सामन्यतः शास्त्रान्तरों में तुला सँक्रान्ति के विषय में—यह लिखा है कि—

तुला राशि-यदा भानुः भवे च्चैव महर्घता
धान्यानां हेमद्रव्याणां कुंजराणा विनाशता

अर्थ साफ़ है कि सभी प्रकार के धान्यों में तेजी कारक है स्वर्ण हाथी घोड़े आदि में तेजी कारक है वार के हिसाब से संक्रान्ति का विवेचन करते हैं।

यदि ये सोमवार के दिन हो तो हवा अधिक चले सरदी अधिक पड़ने लगे कही पर ओला पड़े गेहूँ चना जौ मटर का भाव सस्ता हो जावे घी सस्ता तिल तेल कीतेजी हो चाँदी सस्ती बिके सोना और ताँबा लोहा तेज हो लकड़ी कोयला सन सूत बारदाना सस्ते हों कपड़ा ऊनी देशी वस्त्र और रेशमी दोनों प्रकार का सस्ता हो चावल और दूध घृत तेज हों सरदी का अधिक प्रकोप हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(२) अगर मंगलवार को संक्रान्ति हो मक्का ज्वार बाजरा के भाव सम रहे गेहूँ जौ चना मटर सस्ते हों उर्द मूंग का भाव सस्ता हो आद्रा नक्षत्र से विशाखा तक गल्ले की तेजी रहे बाद को मंदा रहे चौपायों में काले रंग के चौपाये तेज रहे गन्ने की पैदावार बहुत हो गुड़ शक्कर खाँड का भाव सस्ता रहे नारियल की बड़े किराने की पैदावारी बड़े मिर्च धान्य मजीठ सस्ता हों मक्खन घी का भाव तेज हो

(३) अगर बुधवार को आकर पड़े तो गल्ले का भाव मध्यम रहे गेहूँ सस्ते रहें बाद में फिर कुछ तेज हो जाँय चना जौ सम रहें चावल तॉबा सुर्ख रंग की चीजें तेजी हों ऊन और रेशम का बाजार सम रहे जायफल लौंग नारियल सस्ते हैं अग्नि का भय रहे फोड़ा फुन्सियों का रोग हो प्रजा में बेचैनी लकड़ी कोयला का बाजार सम रहे जस्ता शीशा रांग का भाव सम रहे ऊनी कपड़ा तेज हो रूई कपास में घटा बढ़ी होगी।

अगर वृहस्पति को संक्रान्ति आकर लगे तो गल्ले का भाव सम रहेगा गेहूँ चना जौ कपास में कुछ घटा बढ़ी रहेगी सोना चाँदी ताँबा जस्ता आदि धातु शुरू में कुछ तेज होकर फिर मंदे हो जायेंगे गुड़ शक्कर खाँड तेज हो। अलसी सरसों अंडी तिल तेल सस्ते हों फिर बाद में कुछ तेजी हों रस पदार्थ तेज हों मक्खन घृत तेज रहे लाल पदार्थ सुर्ख चन्दन गेरू लाल मिर्च तेज हों सन जूट का भाव सम रहे फल पदार्थ नारियल जायफल धनियाँ मजीठ तेज रहें कोयला पत्थर का भाव सस्ता रहे मोटे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनाज मक्का ज्वार बाजरा मसूर अरहर सस्ती रहे ऊनी रेशमी कपड़ा तेज होकर सस्ता हो। गाय बैल भैंस सस्ते रहें।

(५) अगर यह संक्रान्ति शुक्रवार को आकर लगे तो गेहूँ जौ चना का भाव कुछ तेज रहेगा सोना चाँदी शेयर्स तेज होकर मंदा हो रुई कपास सूत का भाव तेज हो श्वेत कपड़ा तेज रहे तिल तेल सुर्ख रंग के पदार्थ तेज होकर सस्ते हों चावल का भाव सस्ता रहे बाजरा मक्का मटरो बेझड़ तेज रहें लोबिया रमास सस्ते हों उर्द मूंग का बाजार तेज रहें लौंग इलायची जायफल के भाव में घटा बढ़ी रहे सूत में तेजी हो ऊन रेशम में घटा बढ़ी रहे दूध दही घृत का भाव सम रहे अलसी अंडी सरसों का भाव मंदा रहकर बाद में तेज हो जाये।

(६) अगर शनिवार को संक्रान्ति आकर पड़े तो गल्ले का भाव पहले तेज बाद में सस्ता रहेगा गेहूँ जौ चना कपास के भाव में घटा बढ़ी होकर बाद में मंदा हो जायेगा सोना चाँदी सस्ती रहे रुई सूत का भाव तेज हो तिल तेल का भाव सम रहे। मक्का ज्वार बाजरा तेज रहे लौंग इलायची जायफल धनियाँ हल्दी का भाव मंदा रहे।

(७) अगर रविवार को संक्रान्ति आकर पड़े तो गेहूँ जौ चना कपास के भाव में तेजी रहें और अलसी अंडी सरसों गुड़ शक्कर में तेजी हो सोना चाँदी का भाव मंदा रहे नमक हल्दी मिर्च तेज रहे घी दूध तेल बेजिटेलबि का भाव तेज होकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सस्ता हो सन पाट बारदाना का भाव मदा रहे ऊनी सूती कपड़े मंदे रहें लोहा तॉबा जस्ता का भाव तेब रहे।

धनु संक्रान्ति

यदि यह संक्रान्ति रविवार को लगे तो गेहूँ चना बौ मटर बाजरा चावल और अरहर उड़द तेब रहेंगे मोटा गल्ला ज्वार बाजरा इत्यादि में डयौढ़े हो जाते हैं गुड़ शक्कर खॉड का भाव सम रहता है तिल तेल मूंग और मसूर के भाव में घटा बढ़ी होती रहती है और सोने का भाव कुछ तेब हो जाता है पाट अधिक होने के कारण मंदा रहता है सूती कपड़ा सफेद रंग तेज होगा ऊन और रेशम के भाव में घटा बढ़ी रहती है गुड़ गल्ला मंदा हो जब धन संक्रान्ति सोमवार को लगे तो अनाज पिछली संक्रान्ति में खरीदा है धन की संक्रान्ति में बेचें तो उनके रुपये में आठ आने रह जायेगे। चाँदी सोना और सूत सन तथा चावल सस्ते रहेंगे तिल तेल और गल्ला घृत में तेजी रहेगी मोटा गल्ला मक्का ज्वार बाजरा उर्द और मूंग का भाव सम रहेगा वृश्चिक की संक्रान्ति देखने से धन की संक्रान्ति हानिकारक है।

(३) जब धन संक्रान्ति मंगलवार को लगे तो मोटा अनाज तेज होगा पौष में गल्ले में दुगना फ़ायदा होगा रस पदार्थ घी तिल तेल अलसी सरसों अंडी में तेजी हो जायेगी चाँदी का भाव तेब हो जायेगा चावल रुई सूत कपास में तेजी होगी लाल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रंग के सभी पदार्थ तेज हो सोना चांदी ताँबा लोहा सम। अरहर मूंग मटर और चना का भाव सस्ता रहेगा जो ब्यापारी कार्तिक के महीने में माल खरीद कर इस महीने में बेचते हैं. वे क फी मुनाफा उठाते हैं पहिले ही यह देखना चाहिये कि पाप वारों में संक्रन्ति आ रही है तो पहले ही स्टाक कर लें।

(४) जब यह संक्रान्ति बुधवार को लगे तो गल्ले का भाव मंदा रहे इस में माल खरीद कर इकट्ठा नहीं करना चाहिए क्यों कि आने वाली संक्रान्ति में और मंदा होने की संभावना रहती है उर्द मूंग का भाव सस्ता रसदार पदार्थ घी तिल सरसों अलसी का भाव सम रहे सूत श्वेत कपड़ा सन में तेजी हो जावेगी चौपाये मंदे हों घास सस्ता रहेगा किराने में नारियल मेवा किशमिश और छुआरों का भाव शुरू में सस्ता रह कर फिर तेज हो जावेगा

(५) यदि यह संक्रान्ति बृहस्पति को लगे तो गेहूँ जौ चना मटर सस्ते रहें अरहर उर्द मूग और चावलों में तेजी हो चावल की तेजी अधिक रहे हाथी गाय भैंस सस्ते रहें कोयल लकड़ी और सन का भाव सस्ता होकर फिर तेज हो जाये लौंग नारियल लौंग मिर्च के भाव में घटा बढ़ी रहे रुई और रेशमी कपड़ा पाट वारदाना कुछ सस्ता होकर बाद में तेज हो जाये।

(६) यदि संक्रान्ति शुक्र को लगे तो गेहूँ चना जौ मटर कपास का भाव सम रहे सोना चाँदी धातुओं का भाव तेज

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुड़ तेल, शक्कर, अलसी अण्डी के भावों में मन्दा रहे। मटरा अरहर, लोबिया, रमास चना सस्ते रहें, गेंरू, सुर्ख रंग सुर्ख चन्दन, इत्यादि वस्तुओं में तेजी रहेगी। मक्का, ज्वार बाजरा का भाव सम रहे, लोहा तथा जस्ता पीतल के भावों में घटा बढ़ी रहेगी, सूत, सन, जूट का भाव तेज रहै, गन्ने की पैदावार कम होगी। गुड़, शक्कर तेज हो गेंहू, चना, बेझड़ मटरा अरहर तेज हो।

(७) यदि यह संक्रान्ति शनैश्चर को लगे तो गल्ला तेज हो जाता है, किसी किसी का ऐसा भी मत है कि यदि यह संक्रान्ति रविवार या शनैश्चर वार को लगे तो गुड़-शक्कर में तेजी हो तिलहन का स्टाक यहां तेजी में बेच लेना चाहिये। इस महीने में चावल खरीदने वाले व्यापारी को छः महीने बाद अर्थात् अषाढ़ के महीने में तिगुना फायदा हो जावेगा।

मकर संक्रांति

(१) अगर यह संक्रान्ति रविवार को लगे तो गेहूँ चना, जौ, मटर में घटा बढ़ी होकर तेजी हो जावे, गुड़, तेल, अलसी, अन्डी सरसों तेज हो, रूई, पाट वारदाना कपास बिनौलों का भाव तेज रहे, मक्की, अरहर, ज्वार, बाजरा तेज रहे, घी, तेल मक्खन का भाव सस्ता रहे, सोना, चान्दी में घटाबढ़ी रहे, ऊनी, सूती, रेशम वस्त्र तेज रहे, चावल का भाव मन्दा रहे। सो खरीदना ठीक है कहीं कहीं पर गन्ने की फसल कमती हो। जूट, पाट वारदाना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में मन्दा रहे, और नमक, मिर्च, किराना छुहारे, गोला खोपा इत्यादि सस्ते होकर तेज हों,

(२) अगर यह संक्रान्ति सोमवार को लगे तो, गेहूँ चना जौ, कपास पहिले तेज हो, बाद में भाव मन्दा हो, गुड़, शक्कर मन्दी रहे, अलसी, सरसों, अन्डी मेथी तेज रहे, रूई, कपास, सूत का भाव तेज रहे, मक्का, अरहर, ज्वार, बाजरा, मसूर का भाव तेज रहे, घी, तेल, तेज रहे, सोना, चान्दी सस्ती रहे खरीदना ठीक रहेगा और चावल, चना तेज हो जाये, ऊनी, सूती कपड़ा सस्ता हो, सुर्ख वस्तुयें तेज रहें, जैसे सुर्ख रंग, सुर्ख चन्दन, केशर इत्यादि दूध, दही घृत सस्ता रहे, भाव तेज रहेगा, नमक मिर्च किराना सस्ता रहेगा,

(३) अगर यह संक्रान्ति मंगल को लगे तो गेहूँ, जौ चना, मटर गल्ला तो सस्ता रहे परन्तु सोना, चाँदी, गुड़, तेल, अण्डी अलसी, सरसों तेज रहे, चावल, सूत, कपास में घटा बढ़ी रहे सुर्ख पदार्थ मन्दे रहें, मोटा गल्ला ज्वार, बाजरा, मक्का तेज रहे घी मक्खन का भाव सम रहे, हलदी, तांबा, जस्ता पीतल तेज रहे किराने के भाव में घटा बढ़ी रहे, नमक मिर्च तेज हो कर मन्दी हों, दूध, दही तेज रहे, मूंग, उर्द, अरहर, मसूर मटरा, दाल मन्दी हो।

(४) यह संक्रान्ति बुध को लगे तो गल्ले का भाव सम रहे, रस पदार्थ तेज हों, कपड़ा, सूत पर तेजी हो, सोना, चाँदी धातु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेज हो धान्य चावल सस्ता रहे, अरहर, हल्दी, जायफल, लौंग इलायची, जावित्री सस्ती होकर फिर तेज हो जाये। घृत का भाव सस्ता रहे, इस संक्रान्ति में घी खरीद कर वैशाख में बेच ने से अच्छा फायदा हो ऊनी सूती रेशम कपड़े का भाव तेज रहेगा, किराने में नारियल बादाम जीरा और कत्था मन्दा रहेगा। मेवा जात किशमिश और पिस्तों का बाजार तेज रहेगा।
चौपायों में गाय और बकरी सस्ती रहेंगी। ऊंट और बैल तेज रहेंगे, ऊन, रेशम का भाव तेज रहेगा।

(५) यदि धन संक्रान्ति वृहस्पति को लगे तो चना मक्का ज्वार, बाजारा मन्दा रहे, गेहूँ मक्की अन्डी जौ, मटर का भाव सम रहे घृत का भाव भी मन्दा रहे, गुड़, खांड, चीनी शक्कर भी मन्दी रहे अलसी अन्डी और पोस्त अफीम तेज होकर फिर सस्ते हो जावेंगे, सूत का भाव तेज रहेगा। सूती कपड़े तेज रहेंगे, उन के व्यापारियों को अधिक फायदा होगा। पाटजूटबोरों का भाव तेज रहेगा, तेल, और घृत वेजिटेबिल में अच्छी मन्दी रहेगी। पैदा अच्छी रहेगी, कपास में तेजी। बिनौला पश्चिमी प्रान्त में तेज बिकेंगे। तृण घास का भाव तेज रहेगा, शीत अधिक पड़ेगी, घृत का स्टक करना ठीक है लाभ होगा।

(६) यदि मकर संक्रान्ति शुक्रवार की लगे तो गल्ला मन्दा हो, मकर की संक्रान्ति केवल घृत चावल खरीद कर वैशाख के महीने में बेचने से दूना लाभ होगा मक्का, ज्वार बाजरा तेज रहें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सरसों, अलसी, अन्डी पोस्तदाना तेज रहेंगे, तेल का भाव तेज मजीठ तृण, लकड़ी का भाव तेज रहेगा। सोना चाँदी में तेजी का रुख रहेगा, लोहा, जस्त पीतल रांगा तेज होकर मन्दा हो जायेगा, गुड़ शक्कर खाँड सस्ता रहेगा। ऊन, सूती रेशमी वस्त्र तेज होते हैं यहाँ स्टाक बेच लेना ठीक है, अलसी, सरसों अन्डी तेज रहें, दूध दही का भाव सम रहेगा और सिंघाड़े का भाव मन्दा रहेगा सिंघाड़ा यहां खरीद कर वैशाख में बेचने से नफ़ा देगा। सुर्ख मिर्च, चन्दन सस्ता रहेगा, खरीदना ठीक है।

(७) यदि मकर संक्रान्ति शनिवार को लगे तो गेहूँ, चना, जौ मटर आदि गल्ले में घटा बढ़ी के साथ तेजी रहे और फिर कुछ सोना चादी तेज रहे लोहा ताम्बा सूती पाटी बारदाना तेजी में रहे गुड़, तेल शक्कर का भाव मन्दा रहे और मक्का ज्वार बाजरा, तेज रहे, मिर्च हल्दी सुर्ख चन्दन तेज रहे और बाद में कुछ मन्दा हो राँगा जस्ता पीतल ताँबा में घटा बढ़ी रहे, चवल, चना सिंघाड़ा तेज हो कर फिर मन्दा हो पोस्त अफीम का भाव सम रुई कपास बिनौले में घटा बढ़ी हो ऊनी रेशमी वस्त्र तेज हो,

कुम्भ संक्रान्ति

(१) यदि कुम्भ संक्रान्ति रविवार को लगे तो गेहूँ, चना, जौ मटरा में घटा बढ़ी रहेगी, मोटा अनाज मक्का, ज्वार, बाजरा सस्ता रहेगा, गुड़, शक्कर चीनी देशी खांड सस्ती रहेगी। सोना, चान्दी का भाव तेज रहेगा। सरसों, अलसी अन्डी तेज हो कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फिर मन्दी हो जावेंगी । ऊनी, सूती, रेशमी कपड़े सस्ते हों, जस्ता, लोहा, ताम्बा सस्ता रहे । किराना मन्दी में जावें ।

(२) यदि कुम्भ संक्रान्ति सोमवार की हो तो गेहूँ, चना, जौ मटरा, सस्ता रहे, कपास, रूई सूत में तेजी हो मक्का, ज्वार, बाजरा में घटा बढ़ी रहे । गुड़, शक्कर का भाव सम रहेगा और नमक, मिर्च, किराना, मेवा छुहारे तेज रहें जस्त, ताम्बा, पीतल का भाव सम रहे. सोना चांदी सस्ते रहें, अलसी, अन्डी, सरसों राई तेज रहे ऊनी सूती रेशमी वस्त्र मन्दा रहे, चावल, चना सस्ता रहे. नारियल, जावित्री जायफल धनियां जीरा तेज होकर मन्दे हो जावें तेल, घी लाल वस्तु मन्दी होकर कुछ तेज रहें, किराना गेरू, नीला थोथा, हल्दी-लालमिर्च का स्टाक करना ठीक है चावल भी खरीदना अच्छा है, सस्ता रहे ।

(३) यह संक्रान्ति मंगल वार की हो तो तेजी रहे,गेहूँ,चना, जौ मटर तेज रहें, सोना चान्दी, जस्त, रांगा, पीतल तेज हो कपास रूई, सूत पाट वारदाने के भाव में तेजी रहे श्वेत कपड़ा कुछ तेज होकर फिर सस्ता हो, तिल, तेल, सुर्ख रंग के पदार्थों का भाव सम रहे, चावल, चना कुछ तेज रहे, मोटा अनाज मक्का ज्वार बाजरा, अरहर. लोबिया, रमास, मसूर सस्ते रहें उर्द, मूग में तेज रहें, लौंग हलदी जीरा इलायची, जायफल, कालीमिर्च, धनियाँ का भाव मन्दा रहे सूत, कपास में कुछ तेजी रहे, ऊन घृत का भाव तेज रहे, अलसी सरसों, राई का भाव तेज रहे,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(४) अगर कुम्भ संक्रान्ति बुधवार की हो गेहूँ चना, जौ मूंग मटर मन्दे हो, कपास सूत, तेज होकर मन्दी हो जाये, सोना, चांदी में घटा बढ़ी रहे, रूई पाटबारदनों का भाव सस्ता, तिल तेल, सुर्ख रंग का भाव तेज रहे, मक्का, ज्वार बाजरा बेभड़ तेज होने के बाद मन्दा हो, ताम्बा, लोहा, जस्ता, पीतल का भाव तेज रहेगा, लौंग इलायची, जीरा हलदी लालमिर्च, खटाई सस्ती रहे चौपाया सस्ता रहे।

(५) यदि यह संक्रान्ति गुरुवार की पड़े तो रूई, सोना चाँदी का भाव सस्ता रहे, मोटा अनाज मक्का बेभड़ ज्वार, बाजरा मूंग मोठ, लोबिया, रमास सस्ता रहे ताम्बा, पीतल जस्ता, हल्दी सस्ती रहे, दूध दही घृत तेल का भाव सम रहे चना गेहूँ जौ का भाव कुछ तेज होकर बाद में मन्दा ही ऊन रेशम कुछ तेज रहे।

(६ अगर यह संक्रांति शुक्रवार की हो तो गल्ले में कुछ तेजी रहेगी गुड़, शक्कर चीनी का भाव तेज रहे, गैंहूँ, जौ, चना का भाव पहले मन्दा होगा, फिर बाद में तेज हो जावेगा, सन जूट, पाट बारदाने का भाव सम रहेगा सफेद कपड़ा कुछ तेज रहेगा, सुर्ख चन्दन तेज रहेगा, कपास और सूत, रूई पाट बारदाने में घटा बढ़ी के साथ हल्दी जीरा धनियां तेज रहे।

(७) यदि कुम्भ संक्रांति शनिवार की हो तो गेहूँ, चना, जौ, मटर, मक्का सस्ता होकर कुछ तेज हों, गुड़ शक्कर, कोयला, लकड़ी का तेज भाव भी रहे, नमक, मिर्च, तेज रहें, सिंघाड़े भी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेज हों, रूई, कपास. पाट बारदाना सूत, में घटा बढ़ी रहे, दूध, दही, घृत, तेल मक्खन तेज रहे, ऊन, सूत, रेशमी कपड़े तेज हो कर कुछ मन्दा हो, जस्ता, ताम्बा पीतल, सोना, चान्दी के भाव में घटा बढ़ी रहेगी, अलसी, राई. सरसों, का भाव सस्ता रहेगा

मीन संक्रान्ति

(१) यदि मीन संक्रांति रविवार की पड़े तो गेहूँ, चना, जौ कुछ तेज रहेगा। अलसी, अन्डी, सरसों, तिल, तेल का भाव मन्दी की तरफ जावेगा मोटा गल्ला, मक्का ज्वार, बाजरा, मसूर तेज रहे, मूंग, अरहर, उर्द, में घटा बढ़ी रहे, कपास, रुई, सूत, का भाव तेज रहेगा, सोना, चांदी धातु बाना मन्दा हो, गुड़, खांड शक्कर, तेल, खटाई सम रहेगी, कोयला, लकड़ी, पत्थर, तेज रहें दूध, दही, घी का भाव सम रहेगा, चौपाओं में बीमारी हो, झगडा फिसाद का भय, काली चीजों में मन्दा रहेगा, शक्कर, खांड का भाव सम रहेगा।

(२) यदि मीन की संक्रान्ति सोमवार की पड़े तो धान्य-भाव सस्ता रहेगा। जौ, गेहूं, चना, मटरा, अरहर, भुस में तेजी रह कर बाद में मन्दा हो, मोटा, गल्ला ज्वार, बाजरा भी तेज बाद में सस्ता रहे, मूंग, अरहर, मसूर, उर्द दालों का भाव कुछ तेज रहेगा, तेल, तिल. अलसी, सरसों अंडी राई का भाव कुछ मन्दा रहेगा, कपास, रूई, सूत का भाव सम रहेगा, इस संक्रांति में माल खरीद करअगली संक्रांति में बेचे से अच्छा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फायदा होगा, सोना चांदी का बाजार तेज रहेगा, लोहा, ताम्बा जस्ता में घटा बढी रहकर, भाव से मन्दो गुड़ शक्कर का भाव सम रहेगा, दूध, दही, मक्खन घृत-तेल बेजिटेबिल तेज रहे, कलह, विद्रोह का भय रहे चौपायों को खरीदने से भायदा रहेगा,

(३) अगर मीन संक्रांति मंगलवार को आवे तो प्रजा में असंतोष रहे, घर घर कलह विद्रोह रहें, गेहूं, जौ चना का भाव तेज रहे, कपास, सूत, का भाव तेज, नमक, मिर्च, किराना का भाव सम रहें, लौंग' जायफल, नारियल कुछ तेज रहें, सुर्ख पदार्थ सुर्ख चन्दन, सुर्ख रंग, सुर्ख मिर्च, केशर इत्यादि, खाण्ड गुड़, शक्कर-चीनी मन्दी रहकर बाद में तेजी हो। कपास, रूई, सूत पाट बारदाना का भाव तेज रहे, सोना, चांदी, जस्ता,लोहा, रांगा पीतल तेज होकर बाद में मन्दी रहे। किराना, धनिया, जीरा, हल्दी, बादाम, किसमिस, कपूर का भाव कुछ मन्दी में रहें। उर्द मूंग,, अरहर, मसूर, लोबिया, रमास पर कुछ तेजी रहे, मक्का ज्वार, बाजरा, का भाव सम रहे, दूध,दही, घृत, मक्खन तेज रहे सरसों, अलसी, राई, का भाव तेज रह कर मन्दा हो पोस्त, अफीम भी कुछ तेज हो।

(४) अगर संक्रांति बुधवार की लगे तो गल्ला, गेहू, जौ, चना मेंा भाव सम रहे, चना, कपास में डटा बढ़ी रहेगी, गुड़, शक्कर पहले तेज हो कर बाद में मन्दा हो जावेगा। अगर माल को फौरन खरीद कर फरोख्त कर दिया जावेगा तो कुछ फायदा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो जावेगा। सोना, चांदी-ताम्बा शेयर्स तेज रहे, बाद में कुछ सस्तापन रहे लोहा, ताम्बा, जस्ता लाल रंग सस्ता रहे और रूई सूत कपास-पाट-बारदाना का बाजार सम रहेगा मिर्च हल्दी, जीरा, नमक, गोला, किराना, छुआरा इत्यादि में घटा बढ़ी रहेगी मोटा अनाज मक्का, ज्वार बाजरा का भाव मन्दी में रहेगा लौंग, कालीमिर्च, नारियल, जायफल, जावित्री का भाव कुछ सस्ता रहे, बाद में कुछ तेज हो, सुर्ख चन्दन का भाव सम रहे। दूध, दही का भाव सम रहे, तेल घृत कुछ तेज रहें, सरसों राई, अलसी, तेज चौपाये मन्दे।

(५) यदि यह संक्रान्ति गुरुवार को लगे तो मन्दी हो। जो व्यापारी माल भर लेगे और अगली संक्रांति में बेचेंगे तो फायदा रहे, गेहूँ, जौ चना का भाव पहिले मँदा बाद में तेज रहे, मक्का ज्वार, बाजरा का भाव सम रहे, उर्द, मूंग, मटर, तेज रहे, किराना नमक, मिर्च, धनियां, हल्दी का भाव तेज रहे, ताँबा, पीतल, जस्ता, गिलट, लोहा कुछ तेज रहे, सोना, चांदी का भाव सस्ता रहे. कपास तेज हो, रुई, सूत के भाव में घटाबढ़ी रहे, नारियल, बायफल, मन्दे रहें, तिल, तेल, अलसी तेज रहेगी, अण्डी, अलसी, सरसों का भाव मन्दा रहे, खोपा, गोला, केशर, छुवारे का भाव मन्दा रहे, इलायची, बादाम, किराना हल्दी तेज हो।

(६) यह मीन संक्रांति शुक्रवार की हो तो गल्ला, गेहू, चना,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जौ, मटर, चावल, शक्कर, गुड़, तेज रहेगा। तेल, मक्खन, घी, का भाव तेज रहेगा, रुई, कपास, सूत, पाट, बारदाना, बोरा का भाव घटता बढ़ता रहे रुख तेजी का ही रहे, नमक, मिर्च, लौंग, इलायची तेज रहें, सौंफ, सौंठ, जीरा, हल्दी, धनियाँ, का भाव मंदा हो, अलसी, अण्डी, सरसों, मेथी तिलहन तेज हो, तिल, तेल का भाव सम रहे, तांवा, पीतल रांग, गिलट पर मन्दी होकर फिर तेजी आवे, सोना, चांदी, कुछ तेज हो, जस्ता मँदा रहे।

(७) यदि मीन सँक्रांति शनिश्चर को आवे तो धान्य भाव तेज रहे। गेहूँ, जौ, चना, में घटावढ़ी के साथ तेजी का रुख रहेगा, मक्का, ज्वार, बाजरा, तेज हो, लोबिया, रमास, का भाव सम रहे, सोना तेज रहे चाँदी सस्ती रहेगी, शक्कर, गुड़ खांड, चीनी का भाव सम रहें, घृत, तेल, मक्खन तेज रहे, हल्दी, धनियाँ, जीरा, इलायची, लौंग सस्ती रहें। राई, अण्डी, सरसों, मेथी, अलसी तेज, तिल तेल का भाव कुछ सम रहे, हींग, जीरा भी तेज होवे, सुर्ख रंग, सुर्ख चन्दन तेज हों, नारियल जायफल, मन्दा रहे, चौपाये सस्ते रहें।

धन राशिस्थ सूर्य फलम्

यद्यपि संक्रांतियों का वार वशात् जो फल होता है वह भी दे दिया गया है परन्तु बीच का धनादि सँक्राँति का फल भी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूल ग्रँथ का यहाँ दे रहे हैं।

धनगते – भवतीहसमर्घता ।
दिनमणौ–शुभवार-समन्विते ॥
तिल-रसादि-कपास-शणादिकम् ।
भवति-पाप-युते च-महर्घकम् ॥६

धन राशि में जब सूर्य जाता है तो वह सुभिक्षकारी मन्दी कारक ही होता है शुभवार में धन की संक्रांति लगने से तो खास तौर पर मन्दापन हुआ करता है परन्तु पाप ग्रह के बारे में संक्रांति लगने से तिल, तेल, रसादिपदार्थ, कपास, शण, धान्य, सभी महंगे हो जाते हैं।

मकर राशि के सूर्य से तेजी मन्दी

मकर राशि में जब सूर्य पहुंचता है तो खांड, गुड़ शक्कर, में तेजी धान्य भाव सस्ते हों घृत, तेल में भी तेजियां होती हैं, बारदाने में मन्दापन होता है—सोना, चांदी शेयर्स में मन्दी का रुख होता है।

मकरगे–च-रवौ–हि–महर्घता ।
घृत-कपास-तिलादिषु-सर्वथा ॥ २
भवति-धान्य-सुवर्ण कपासकम् ।
शुभदिने–मकरे–ऽपिच मन्दता ॥१०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मकर संक्रॉति यदि शुभवार में लगी होगी तो मन्दापन ला सकती है स्वाभाविक धर्म उसका घृत, कपास, तिल, तेलादि में तेजी फरता है।

मकर संक्रांति फलम्

सूर्यो-यदा-मकरगः- कुरुते-महर्घम् ।
तैलादिकेषु-रस-पाट-घृतादिकेषु ॥
धान्येषु-शालि-चणकादिषु-तत्-समर्घम् ।
वारे शुभे-शुभफलं-नहि-पापवारे ॥१०॥

अर्थ साफ है कि मकर राशि की जब संक्रांति लगती है तो तेल, रस कस, घृत में तेजी आती है अतः स्टाक आरम्भ में ही कर लेना चाहिये। मकर सँक्रांति लगने के बाद धीरे धीरे तेजियां ही आया करती हैं गेहूँ, चना, जौ, मटरा, चावल का भाव मन्दा होता है, शुभवारों में सँक्रांति लगने से तो खास तोर पर मन्दी हो जाती है, पाप वार में मकर संक्राँति का लगना विशेष शुभ नहीं है फिर भी अलग अलग वार में फल लिखते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुम्भ राशिस्थ सूर्य फलम्

कुम्भेगते - दिनमणौ - भवतीहधान्यम् ।
मान्द्यं -घृतं - गुड़-कपास-तिलादिकञ्च ॥
वारे -- शुभे--शुभ--फलं--लवणं --घृतं--च ।
तैलं, - महर्घमधिकं - सतिपापवारे ॥११

यदि कुम्भ राशि की सँक्रांति शुभवार में लगे तो व्यापार सम्बधि सभी पदार्थों में मँदापन और यदि पाप वार में कुम्भ की संक्रांति लगे तो व्यापारिक जिंसों में तेजियां ही बना करती है यहाँ भी प्रसँग वश कुम्भ की सँक्रांति का फल वारादिवश सँभव होता है वह लिखते हैं।

कुम्भे- गतोदिनमणिः - कुरुते - सुभिक्षम् ।
धान्यं - भवेत्सपदि - तूलिकया समेतम् ॥
माँद्यं -तिलं - च-लवणं-घृत -माषमुद्गः ।
पट्टं -शणं-शुभदिने च शुभे महर्घम् ॥११॥

जब कभी कुम्भ राशि में सूर्य प्रवेश करते हैं धान्य भाव मन्दे हो जाते हैं और रुई, पाट, बारदाना में भी मन्दापन ही आता है तेल, लवण, घृत, उड़द, मूँग, तिल, तेल सभी चीजें मन्दी होती हैं। शुभवार में कुम्भ सँक्रांति मंदापन लाती है। पाप वार में लगने से तेजी का स्वर ही मार्केट लेते हैं अब

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रविवासरादि में सँक्रांति लग जाने से जो भी फल सँभव हो सकते हैं उनका उल्लेख करते हैं।

मीने गते दिनपतौ - सततं - महर्घम्।
धान्यं-स्वर्णं - रजतादि - भवं - महर्घम्॥
पश्चात्करोति - सकलेषु - पदार्थ केषु।
ग्रीष्मेषु तत्र तिलजेषु भवेत्समर्घम्॥१२॥

मीन—राशि में जब सूर्य लगता है तो ग्रीष्म ऋतु के धान्यों में वह पहिले तेजी करता है शुभवार के सम्बन्ध से मन्दापन पापवार के सम्बन्ध से तेजियां भी अधिकांश में हुआ करती हैं।

शुक्र ग्रह की स्थिति और व्यापार पर शुक्र का प्रभाव

शुक्र ग्रह सामान्य गति से एक मास में एक राशि पर चलता है। और इस ग्रह का वर्ण दही के समान, कुमुद पुष्प जैसा सफेद चन्द्रमा जैसा निर्मल तथा सफेद स्फुट किरणों वाला उत्तम प्रकाश वाला—साफ और प्रकाशवान किरणों का बड़े बिम्ब वाला चमकीला ग्रह है, जब यह शुक्र ग्रह पूर्व दिशा में अस्त हो जाता है तो पूर्व में अस्त होने के दो मास बाद ही पश्चिम में उदय होने के बाद ८ मास पीछे वक्री हुआ करता है, फिर वक्री होने के बाद २२ दिन पीछे पश्चिम दिशा में ही अस्त हो जाता है, फिर ८ दिन में ही वह पूर्व दिशा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में उदय हो जाता है, पूर्व दिशा में उदय होने के २२ दिन बाद मार्गी होता है फिर ८ महीने में पूर्व दिशा में अस्त हो जाता है। इस प्रकार से शुक्र ग्रह का आवागमन बना रहता है।

(१) अश्विनी, मृगशिरा, रेवती, हस्त पुष्य पुनर्वसु—अनुराधा-श्रवण-स्वाति ये नौ नक्षत्र देवतागण होते हैं।

(२) उत्तराषाढ़ा-पूर्वाषाढ़ा-उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपदा आर्द्रा-भरणी रोहिणी ये नौ नक्षत्र मनुष्य गण के हैं।

(३) कृतिका-मघा-श्लेषा-विशाखा शताभिषा-चित्रा-ज्येष्ठा धनिष्ठा-मूल ये नौ नक्षत्र राक्षसगण के हैं।

शुक्रो यदा - समुदयं - व्रजतीह- खेटो।
देवे -गणे - च कुरुते-नियतं महर्घम्॥
धात्वादिकं रसयुतं भुवि सस्यनाशो।
रोगाकुला जनपदो बहु विग्रहोऽपि॥१॥
देशे कलिंग मरु भूमि भवे समन्तात्।
सौराष्ट्र - पन्चनद - गुर्जर - खर्वटेच॥
दुर्भिक्ष पीड़ित जनाः कलयन्ति कालम्।
कोलाहलं भुवितदा पशु पक्षिणोऽपि॥२॥

जब देवतागण में शुक्र उदय होता है—सोना, चाँदी, रुई, कपास, पाट, वारदाना, धातु आदि सभी व्यापारिक वस्तुएँ तेज हो जाती हैं खाण्ड, गुड़, शक्कर, घृत तेल भी तेज होजाते हैं राजाओं में विग्रह, प्रजा में अराजकता। कलिंग मारवाड़,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सौराष्ट्र गुजरात पंजाब, गुर्जर खर्वट, मध्यभारत, आदि देशों में मनुष्य जीवजन्तु, पशु पक्षी सभी जीव दुर्भिक्ष से पीड़ित हो जाते हैं और चिन्ता तथा परेशान होकर इधर उधर के अन्य देशों में भी चले जाते हैं।

शुक्रो -यदा नर -गणे -समुदेति -खेटो ।
लोकाश्च – विग्रह पराः पशवोऽपि दग्धाः ॥

यान्तिक्षितौ-क्षति–पराः–विपरीत–भावाः ।
नित्यं – महर्घम – तुलं तनुते – सदव ॥३॥

नक्षत्रे राक्षस गणे शुक्रस्याभ्युदयं गदि ।
वस्तू जातं महर्घ–स्यात् दुर्भिक्षं भुविमण्डले ॥

कार्पासं पट्टसूत्रं च धान्यं रससंक्षयम् ।
महर्घं विग्रहो देशे हानिश्चैव प्रजायते ॥५॥

राक्षसगण के नक्षत्र में शुक्र उदय होने से दुर्भिक्ष, उत्पात राज विग्रह, व्यापारिक वस्तुओं में बहुत अधिक तेजियां बन जाया करती हैं, सिन्ध देश में विग्रह हो जाता है।

शुक्र के अस्त अवस्था का फल

(१) देवता गण में यदि शुक्रास्त होता है तो गुजरात सौरा मध्यभारत, मालवा, हैदराबाद, के प्रान्तों में अराजकता होती है धान्य भाव महंगे होते हैं। बाद में मन्दापन आया करता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है, शुक्रास्त के समय में वर्षा हो जाती है तो सभी प्रकार की व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी के योग बन जाते हैं।

(२) मनुष्य गण में यदि शुक्रास्त हो तो विदेशों में भी हानियाँ होती हैं। उत्तर दिशा में भी त्रुटियां होती हैं, पहिले व्यापारिक जिंसों में तेजियां बनकर बाद में मन्दी आ जाती हैं, फिर सुभिक्ष हो जाता है अस्त के समय में वर्षा होने से तो सुभिक्ष रहेगा।

(३) यदि शुक्र राक्षस गण में अस्त हो जावे तो पश्चिम देशों में दुर्भिक्ष अराजकता होती है अन्न सभी महंगे होते हैं, धातुवाने में रुई, पाट, बारदाने में भी अच्छी तेजी के योग बन जाते हैं। सभी प्रान्तों में अन्य विलायतों में राक्षस गण पर शुक्रास्त हो जाने से अराजकता और महंगापन होता है।

संक्रान्ति की मुहूर्त्त स्थिति पर तेजी मन्दी निचार

समं - मृदु - क्षिप्र - वसु - श्रवोऽग्नि।
मघात्रि - पूर्वास्रपभं - बृहत्स्यात् ॥
ध्रुवर्द्धि - दैवादितिभं - जघन्यम्।
सार्पाम्बु - पाद्रानिल - शाक्रयाम्यम् ॥१
जघन्यभे - संक्रमणे - मुहूर्ताः।
शरेन्दवो - बाण - कृता - वृहत्सु ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खराम - संख्या - समभे - महर्घम् ।
समर्घ - साम्यं - विधु - दर्शनेऽपि ॥२॥

मृदुसंज्ञक-(मृगाशीरा-रेवती-अनुराधा चित्रा) इन नक्षत्रों में तथा क्षिप्रसंज्ञक (अश्विनी-अभिजिन-पुष्य और हस्त) इन नक्षत्रों में, धनिष्ठा-श्रवण-कृतिका-मघा-तीनों पूर्वा और मूल इन १५ नक्षत्रों की सम संज्ञा है, और ध्रुव संज्ञक (रोहिणी और तीनों उतरा), विशाखा और पुनर्वासु-इन छ नक्षत्रों की वृहत् संज्ञा है, तथा श्लेषा - शतभिषा - आर्द्रा-स्वाति - ज्येष्टा - भरणी इन छ नक्षत्रो की जधन्य संज्ञा है ।

(१) जधन्य संज्ञक नक्षत्रों में संक्रान्ति लगे तो १५ मुहर्ती होती है।

(२) वृह त्संज्ञक नक्षत्रों में संक्रान्ति लगने से ४५ मुहर्ती होती है।

(३) समसंज्ञक नक्षत्रों में संक्रान्ति लगने से ३० तीस मुहर्ती होती है।

फलम्:—

जिस महीने की संक्रान्ति में १५ मुहर्ती होते हैं, उस महीने में अन्न महंगा और जिस महीने की संक्रान्ति में ४५ मुहूर्त होते हैं उस महीने में अन्न सस्ता होता है और जिस मास की संक्रान्ति में ३० तीस मुहूर्त होते है उस महीने में अन्न का भाव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम रहता है। इसी प्रकार अधन्यसंज्ञक नक्षत्रों में चन्द्रमा उदय होवें तो अन्न महंगा होगा क्योंकि १५ मुहर्ती चन्द्रदर्शन होने से पैंतालीस मुहुर्ती चन्द्र दर्शन मन्दी कारक होता है। सम संज्ञक नक्षत्रों में चन्द्र दर्शन ३० मुहर्ती-समभाव धान्यों में किया करता है।

प्रकारान्तरेण संक्रान्ति वश तेजी मन्दी

संक्रान्ति-ऋक्षं-तिथिवार-युक्तम्।
धान्याक्षरंमिश्रित-राम भक्तम्॥
एके न - वृद्धिः समता-द्वितीये।
शून्येन-हानिः स्फुटमर्घ कांडम्॥ २॥

संक्रांति का नक्षत्र तिथि और वार जोड़ देना। और धान्य के जितने अक्षर हों उतने अंक उसी में जोड़ देना उसमें तीन का भाग लेना, एक शेष बचे तो मंदा जानना। दो शेष बचे तो सामान्य भाव बने—तीन शेष बचे तो महंगाई जाननी चाहिये।

सूती-वैठीं-खडी संक्रांति विचार।
स्यातैतिले-नाग-चतुष्पदेरविः॥
सुप्तो-निविष्टस्तु -गरादिपन्च के।
किंस्तुघ्न -उर्ध्वःशकुनौ-सकौलवे।
ऽनिष्टःसमः श्रेष्टदहार्घ -वर्षणो॥३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थ—तैतिल, नाग चतुष्पद इन करणों में सोते हुवे गर वणिज, बिष्टि और वालव इन करणों में बैठे हुवे। और किंस्तुघ्न शकुनि और कौलव इन करणों में उर्ध्व स्थित होकर अर्थात् खड़े होकर सूर्य देव अपनी सँक्रांति को ग्रहण करते हैं, सोते हुए यदि सूर्य देव संक्रांति को प्राप्त करे तो अन्नादि महंगे हों वर्षा की कमी रहती है। बैठे हुवे सूर्य सम और खड़े सूर्य अन्नादि का भाव सस्ता और अच्छा करे तथा वृष्टि कारक होते हैं।

सुप्ता-सदा-रस-कसादिषु-स्यान्महर्घी।
धान्यादिकेषु-तिल-तेल-कपास-वस्तु॥
उर्ध्व-स्थिता-वितनुते-सततं-समर्घम्।
साम्यं-करोति-नियतं-सति-त्रा-स्थिताऽपि॥४

अर्थ-सुप्ता संक्रांति सदा-रस-कसादिको में सातों ही अनाजों में तिल, तेल, कपास, रुई, पाट, बारदाने में तेजी कारक ही हुवा करती है और खड़ी हुई सँक्रांति सदा ही उपरोक्त वस्तुओं में मन्दा किया करती है और बैठी हुई संक्रांति सदा सम भाव किया करती है।

मेषादि बारह राशियों पर शुक्र का फल

(१) जब मेष राशि में शुक्र होता है तो धान्यों में तेजी रहै, पाट, बारदाने, गुड़, शक्कर, चाँदी में घटा बढ़ी होकर तेजी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का रुख रहे, घृत, तेल, सरसों, अलसी, अण्डी में भी तेजी होती है। वर्षा की कमी हो वायु ज्यादा चले।

(२) जब शुक्र वृष राशि में पहुंचे तो सुभिक्षकारी होता है असाढ़ी धान्यों की पैदावारी काफी सिकरती है जनता में विग्रह हो सकता है।

(३) मिथुन राशि में शुक्र के आ जाने से गेंहूँ, जौ, चना चावल आदि धान्यों महंगे होते हैं अरहर और गुवार में मँदी में मंदी आती है गुड़, घृत में अच्छी घटाबढ़ी होती है रुई, पाट, वारदाना, अण्डी में भी मंदियों का रुख होता है तेल, तिलहन में भी रुख मंदी का बन जाता है। केवल धान्य भाव तेज रहा करते हैं।

मिथुने च गतः शुक्रो महर्घ तेलघृतादिकम्।
यव गोधूम चणकाः शालिश्चैव गुड़ादिकम्॥

अर्थ साफ है कि मिथुन राशि का शुक्र तेल, घृत, जौ, मटरा, गेहूँ, चना, अरहर, मोटा अनाज, गुड़, चावल, सरसों, तथा अलसी आदि वस्तुओं में तेजी कारक होता है।

कर्क राशिगत शुक्र फलम्

(४) जब शुक्र ग्रह कर्क राशि पर आता है वह भी रसादि-पदार्थों में तेजी कारक होता है वर्षा कारक योग बना करते हैं। गल्ला तेल, तिलहन में मंदापन रहा करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्के यदा व्रजति दैत्य गुरु र्महर्घम्।
तैलादि शर्करगुड़ादि रसादिकेषु ॥
धान्यादिकेषु कुरुते च समर्घमेव
सृष्टेः सुखं च षिवलान् पशु पक्षिणश्च ॥

अर्थ साफ है कि कर्क राशि पर जब शुक्र ग्रह पहुँच जाता है तो वह रसादि समस्त पदार्थों में तेजी कारक हुवा करता है, तैल, घृत, शक्कर, खाण्ड, गुड़ आदि में तेजी के योग बना करते हैं मगर वर्षा के ठीक हो जाने से किसानों को पूर्ण संतोष होता है पशु पक्षि भी सुख का अनुभव करते हैं धान्य भाव गेहूँ चना, जो, मटरा, अरहर में मंदियों का योग हुवा करता है।

(५) जब शुक्र ग्रह सिंह राशि पर पहुंचता है तो वायु का वेग बढ़ता है वर्षा की कमी हुवा करती है।

सिंह शुक्र जो होय भवानी।
चले पवन वर्षे कम पानी ॥१॥

सोना, चांदी, धातुवाना, लाल वस्तु पशु तथा धान्य सभी प्रकार के बहुत महंगे हो जाते हैं वर्षा कम होती है। जैसा कि शास्त्रान्तर में भी कहा है कि—

यदा दैत्य गुरुः सिंहे स्वर्णं रौप्य चतुष्पदः।
आरक्तं सर्वधान्यानि महर्घाणि भवन्तिहि ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थ साफ है कि जब शुक्र सिंह के होगा तो सोना, चांदी ताम्बा तथा पशुओं में तथा लाल रंग की चीजों में धान्यों रसादिपदार्थों में तेजी का योग हुवा करता है। वर्षा की कमी रहती है।

(६) कन्या राशि में जब शुक्र होता है अपनी नीच राशि का शुक्र भी तेजी कारक ही हुवा करता है चावल तथा गेहूँ चना जौ, मटरा का भाव तेज किया करता है।

कन्यां गतो यदि च दैत्य गुरुः समन्तात्।
धान्यादिकं सकल वस्तु युतं महर्घम्॥
पापान्विते च सततं रसधातु सर्वम्।
सौम्यान्विते भुवितलेतुसुभिक्षमेव ॥ ६ ॥

अर्थ साफ है कि कन्या राशि का शुक्र यदि पाप ग्रह सें युक्त होगा तो सभी पदार्थों में तेजी लावेगा शुभ ग्रहों से युक्त अथवा उष्ट रहने से सुभिक्ष कारक मंदी कारक होता है।

(७) जब शुक्र ग्रह तुला राशि में पहुंचता हो तो वह अपनी राशि का होता है तो भूमि पर वर्षा कारक तथा धान्यादिको में मंदी लाया करता है।

तोलिं गतो यदि च दैत्य गुरुःस्वगत्या।
क्षेमं करोति नियतं क्षितिपाः प्रसन्नाः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षोभं तनोति क्षितिपेषु च पाप दृष्टः।
सोम्यान्वितश्शुभफलं–शुभदृष्टियोगात् ॥७

शुभ ग्रह के दृष्टि सम्बन्ध अथवा योग द्वारा शुभ फल तुला राशि के शुक्र में हुवा करते हैं पाप ग्रह के योग से अराजकता राजाओं में मत भेद और क्षोभ हो जाता है व्यापारिक जिंसों में भी पाप ग्रह योग से तेजी शुभ ग्रह योग से मंदा हुवा करता है।

(८) जब शुक्र ग्रह वृश्चिक राशि का हो तो मंदी कारक सुभिक्ष कारक हुवा करता है।

वृश्चिके च गतः शुक्रः सर्व धान्य समर्घम्।
लोकाश्च सुखिनोज्ञेयाः सुभिक्षं पृथिवीतले ॥८॥

अर्थ साफ है कि वृश्चिक राशि का शुक्र मंदी कारक है। सुभिक्षकारी है शुभफल देने वाला है शुभ ग्रह के सम्बन्ध से तो अच्छी मन्दियां व्यापारिक जिन्सों वृश्चिक राशि के शुक्र में आ जाती है पाप ग्रह के सम्बन्ध में ज्यादा तेजियाँ नहीं होती है।

(११) जब कुम्भ राशि में शुक्र ग्रह होता है तो यह अच्छी घटाबढ़ी व्यापार में किया करता है। श्वेत वस्तुओं में रसादि-पदार्थों में मन्दापन होता है धान्य भी सभी मंदे में जाने लगते ज्येष्ठ वायदों के सौदों की बेच कुम्भ के शुक्र में व्यापारियों को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करनी चाहिए।

कुम्भ राशि गतः शुक्रः सुभिक्षं कुरुते सदा।
सर्वधान्य समर्घस्याल्लोकाः सर्वेनिरामयाः ॥११

अर्थ साफ है कि कुम्भ राशि का शुक्र अच्छी मन्दी के योग व्यापारिक जिन्सों में बनाया करता है। ऐसी अवस्था में मंदी से लाभ उठाना चाहिये यदि पाप ग्रह से युक्त शुक्र होगा तब भी तेजी विशेष फिर भी नहीं होगी।

(१२) मीन राशि में जब शुक्र ग्रह आता है तो वह भी सुभिक्षकारी एवं मन्दी कारक हुवा करता है।

मीनराशिगतेशुक्रे - सुभिक्षं - पृथिवीतले
धान्ये - च - तिल - तैलादौ - भवेच्चैवसमर्घता ॥

मीन राशि के शुक्र में मन्दापन आता है धान्य सभी प्रकार के मन्दी में जाते हैं। तिलहन, तेल, सरसों, अलसी, अण्डी आदि सभी मन्दी में जाते हैं।

शुक्र का नक्षत्र के आधार पर उदय का फल

(क) आश्विनी नक्षत्र में शुक्र उदय होने से अलसी, अण्डी सरसों, तिल, तेल, घृत, गुड़ आदि रसादिपदार्थों में अच्छी तेजी आया करती है उड़द तथा जौ की पैदावार कम होती है,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रुई, चांदी में अच्छी तेजी के योग बनते हैं।

शुक्रोऽश्वजि - प्रथमभे - तिलसर्षपादौ।
नित्योदितः प्रकुरुते - नियतं-महर्घम् ॥
तैलेषु - माष - गुड़ - शालि - यवादिकेषु।
कार्पास - स्वर्णरजतादिषु वा - भरण्याम् ॥१॥

अर्थ साफ है कि अश्विनी में शुक्र का उदय तिल, सरसों, उड़द, जौ, चना, मटरा, अरहर में तेजी कारक होता है तेल, गुड़, चीनी, चावल भी तेज हो जाते हैं। कपास, रुई, पाट, बारदाना, सोना, चांदी, तांबा आदि धातु में भी तेजी होती है। भरणी में भी तेजी कारक योग ही बना करते हैं। धान्यों में अच्छी तेजी के योग होते हैं।

(ख) शुक्रोदितश्चकृतिकाषु - सदामहर्घम्।
माषाःभवेयुरधिकाः तिल - सर्षपाद्याः ॥
धान्याधिकत्वमुदिते - सतिरोहिणीजे।
नैरोग्यकं मृगशिरोदयने महर्घम् ॥ २ ॥

शुक्र ग्रह जब कृतिका नक्षत्र में उदय होता है तो तेजी कारक हुवा करता है। व्यापारिक जिन्सें तेज हो जाती है। यदि भरणी नक्षत्र में शनि उदय हो तो सरसों, उड़द, मूँग तथा धान, चावल आदि कम उत्पन्न होते हैं। माँग ज्यादा बनती हैं अत- भाव तेज हो जाते हैं। रोहिणी नक्षत्र में शुक्र उदित

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होने से जनता में निरोगता और सुभिक्ष देता है मृगशिर में उदित होने से सभी प्रकार के सातों धान्य तेज हो जाते हैं।

रौद्रे - सिते - समुदिते - सति - चाल्पवृष्टिः।
धान्यादिकं - मधु - यवान्न - रसं - महर्घम्॥
पुष्य - सिते - समुदिते - ऽपिफलं - तथैव।
सार्पेऽल्प - वृष्टिमथवा - कुरुते - महर्घम्॥३

अर्थ साफ है कि आर्द्रा में शुक्र उदित हो तो वर्षा की कमी करता है। धान्य, शहद, चावल, जौ तथा रसादि पदार्थ सभी तेज हो जाते हैं। पुर्नवसु में और पुष्प में भी व्यापारिक जिंसों में तेजियां आया करती हैं श्लेषा में उदित शुक्र वर्षा की कमी और व्यापारिक जिंसों में तेजियां किया करता है।

(ग) मघा पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुवी इन तीन नक्षत्रों में यदि शुक्र का उदय हो जावे तो जनता मे अशान्ति रोगभीति पशुओं में पीड़ा होती है, उस समय रोग की शान्ति के वास्ते सामूहिक हवन, अन्न दान करके गरीबों को अन्न वितरण करके गांव अथवा शहर की पशु पीड़ा को हटाना चादिए।

(व) हस्त नक्षत्र में शुक्र का उदय श्रेष्ठ माना गया है वर्षा अच्छी होती है, सुभिक्ष होता है अन्न की पैदावारी बढ़ती है। जनता, राजा, प्रजा, सभी सुखी होते हैं।

हस्ते - सदा - समुदितः - प्रकरोति - शुक्रः।
सौख्यं - समर्घमतुलं - भुवि - पूर्ण - वृष्टिः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चित्रां - गतो - वितनुते - भुवि - रोग - शोकम् ।
स्वात्यां - तथैव - तनुते - बहुधा - सुभिक्षम् ॥४॥

अर्थ सोफ है कि जब शुक्र ग्रह हस्त नक्षत्र में उदित होगा तो जनता में सुख शांति को देगा। वर्षा कारक व्यापारिक सभी जिन्सों के भावों को मँदी में लावेगा। चित्रा में उदित हुवा शुक्र तेजी कारक और जनता में भी रोग, शोक को बढ़ाता है, स्वाति में मंदी कारक सुभिक्षकारी माना गया है।

विशाखायां महर्घस्यादुदिते च सिते सदा ।
ज्येष्ठे-चात्यनुराधायां - स्वाल्प वृष्टिः प्रजायते ॥५

विशाख में शुक्र के उदित होने से तेजियां होती हैं। अनुराधा तथा ज्येष्ठा में भी कम वर्षा होने से तेजियों का वातावरण ही बना करता है।

मूले - सिते - समुनिते - भवतीह - मोन्द्यम् ।
धात्वादिषु — क्षितितेले — बहुवर्षणंस्यात् ॥
पूर्वेतथोत्तर - गते - प्रथमेऽपिपादे - शुक्रे —
सदा - समुदिते - सति - सौख्यमेव ॥ ६ ।

मूल नक्षत्र तथा पूर्वाषाढ़ा एवं उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के प्रथम चरण में धन राशि का शुक्र उदय होने पर सर्वत्र सुख, शांति कारक, व्यापारिक जिंसों में मंदी कारक होता है परन्तु यहाँ शुक्र वृहस्पति के घर में धन राशि में शुक्र का उदय कहीं कहीं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहुत ज्यादा वर्षा से भी फसलों की हानि भी करा दिया करता है। फिर भी सुभिक्षकारी ही शास्त्रकारों ने बनाया है।

श्रवणे च धनिष्ठायां - महर्घ - कुरुतेसदा।
शतभिषायां च - पूर्वायां - मुत्तरा - भाद्रपदेऽपिच ॥

श्रवण-धनिष्ठा-शत.भषा-पूर्वा-भाद्रपदा उतरा भाद्रपदा में उदित शुक्र तेजी कारक होता है।

रेवत्यां— मुदितः सौख्यं - समर्घं कुरुतेसितः।
कार्पासादीनि -सर्वाणि-महर्घिणि भवन्तिहि ॥७॥

रेवती नक्षत्र में उदित हुकर शुक्र सस्ती कारक होता है। सदा वह रुई, कपास. सूत पाट वारदाने में तो तेजी करता है अन्य जिंसों में वह तेजिया किया करता है।

तिथि के हिसाब से शुक्रोदय का फल

सौख्यं— भवेद्भुवितले - प्रति - प च्चतुष्के।
चौरोदयः क्षति करो, ऽपि- पुनश्चतुष्के ॥
भूपाल - विग्रह करो नवमी चतुष्कात।
शुक्रोदितोऽन्यतिथिगोऽपिमहर्गमेव ॥ ८ ॥

जब शुक्र ग्रह प्रतिपदा आदि चार तिथियों में उदय होता है। भूमि में सुख कारक होता है बाद की पञ्चमी से लेकर चार तिथियों में उदय होता है तो चौरादिश भय कारक है, नवमी आदि चार तिथियों में भी राज विग्रह कारक होता है शेष तिथियों में भी तेजी कारक और हानि कारक होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्ले - सितःसमुदितोऽस्तगतोऽपिपक्षे ।
कृष्णेऽपिकेवलमुदेय - दिवास्तमेति ॥
क्षोणि-तदा-क्षिति भुवैः क्षतिगाऽपिधीमन् ।
ज्ञेया च विग्रहवती - रुधिर प्रपूर्णा ॥९

जिस किसी भी मास में शुक्र ग्रह यदि एक ही पक्ष में चाहे वह कृष्ण पक्ष हो, अस्त होकर एक ही पक्ष में उदय हो जाये, जो कि ८ दिन का शुक्र का उदय कहलाता है वह एक पक्ष के अन्दर ही अन्दर उदयहो जावे तो वह भी अशुभ होता है राजाओं में विग्रह तथा अशान्ति एवं हानि कारक होता है भूमि रुधिर से परिपूर्ण होती है।

अस्तमेति यदा शुक्रः प्रथमे च दलेयदि ।
उदितश्च शुभोज्ञेयो द्वितीये च दले सदा ॥१०॥

एक मास में एक पक्ष में अस्त होकर दूसरे मास में दूसरे पक्ष में उदय अथवा किसी भी मास के एक पक्ष में अस्त होकर दूसरे पक्ष में उदय हो तो ही शुभ फलदायक शुक्र होता है ऐसे अवसर में ज्यादा तेजियां मार्केट में नहीं होती हैं।

किसी किसी आचार्य का ऐसा भी मत है कि शुक्ल पक्ष में यदि शुक्र उदय या अस्त हो तो राज विग्रह कारक होता है, शुक्ल पक्ष में केवल उदय होना मात्र अथवा अस्त होना मात्र भी क्षति कारक होता है परन्तु मेरा मत ऐसा नहीं है मेरा अनुभव यही है कि एक किसी भी मास के किसी भी पक्ष में अस्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होकर उसी पक्ष में उदय होना ही विग्रह कारक होता है और मार्केट उस अवस्था में हर जिन्स के तेज होजाते हैं ।ए क पक्ष में अस्त होकर दूसरे पक्ष में उदय होना जब की तेजी कारक नहीं होता है।

शुक्र ग्रह का नक्षत्र द्वार योग

शुक्र ग्रह का उदय और अस्त होना नक्षत्र द्वार के हिसाब से भी सुभिक्षकारी सस्ताई कारक और तेजी कारक हुवा करता है।

(१) भरणी नक्षत्र से लेकर आठ नक्षत्र शुक्र ग्रह के मेघद्वार के नाम से प्रसिद्ध होंते हैं। मेघद्वार में शुक्र का अस्त अथवा उदय होना सुभिक्ष कारक–मन्दी कारक वर्षा कारक होता है। धान्यभाव सस्ते हो जाते हैं प्रजा में निरोगता और आनन्द होता है।

(२) मघा नक्षत्र से पॉच नक्षत्र लगातार के शुक्र ग्रह के धूलि द्वार कहलाते हैं। धूलि द्वार में शुक्र का उदय अथवा अस्त होना शुभ नहीं हुवा करता है वायु का वेग- धूल उड़ना एवं वर्षा की कमी होने से मार्केट तेजी में रहा करते है।

(३) स्वाति आदि सात नक्षत्र शुक्र के राज द्वार के कहलाते हैं, राजद्वार में शुक्र का उदय अथवा अस्त होना राज विग्रह कारक हानि कारक होता है। मार्केट राजद्वार में भी उदय अथवा अस्त होने से तेज ही होते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(४) श्रवण नक्षत्र से सात नक्षत्र स्वर्ण द्वार के हुवा करते हु जो सुभिक्षकारी वर्षा- कारक- मन्दी कारक होते है।

द्वारे-शुभो हित करो भवतीह मेघे।
हानिं-सदा-प्रकुरुते-बहु-धूलिकायाम॥
स्वर्णे-सुख-मम्बु दितोऽस्तगतोऽपि शुक्रः।
द्वारेनृपे-नृपभयं-कुरुते जनेषु॥६॥

अर्थ साफ है कि मेघ द्वम में शुक्र का अस्त अथवा उदय होना शुभ, और धूलिका द्वार में अशुभ और स्वर्णद्वार में शुभ और राज द्वार में शुक्र का उदय वथवा अस्त होना भी अशुभ ही हुआ करता है। इन द्वार योगों से मी बुद्धिमान व्यापारियों एवं विद्वानों को व्यापार का जिन्सों में तेजी मन्दी के योगों का का ज्ञान प्रप्त करना चाहिए।

राजा की मृत्यु हो, मेधों का नाश हो, प्राणियों में विकलता हो अशान्तिया बढ़े, पर स्वर वैर कलह वढ़ें, राजधानी में हानि के योग बनें, जब तक शनि, तुला, वृश्चिक धन इन राशियों में रहते हैं कोई न कोई दैविक संकट, उत्पात, उपद्रव, जन, धन सँहार कारक योग बनता रह सकता है यह अनुभूत योग है।

सम्वत्सर २०१४ में भी वृश्चिक राशि में शनि रहेगा सं० २०१४ के फागुन में शनि धन राशि में आवेगा अतः व्यापा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रिक जिन्सों में अच्छी घटावढ़ी उपरोक्त जिंसों में बनेगी।

नोट

धन राशि का शनि सम्वत्सर २०१४ के फागुन वदी सप्तमी को होता है और यह वक्री अति चारी मार्गी चाल से सम्वत्सर २०१७ के फागुन वदी दौज तक धन राशि पर ही चलता रहेगा करीब तीन वर्ष तक धन राशि पर रहेगा जिसकी स्वाभाविक गति २॥ वर्ष की एक राशि पर होती है अतः शनैश्चर में वृश्चिक धन के शनि के समय में रोगोपद्रव, राजविग्रह आदि उपद्रवों से आधी जनता का ह्रास तो होना संभव है।

यदि शुक्र ग्रह स्वाति विशाखा अनुराधा नक्षत्रों पर पूर्व दिशा में दिखाई देवे तो वर्षा की खेंच ही करता है और पश्चिम में उदय होने से अच्छी वर्षा कारक होता है, मघा पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा फाल्गुनी हस्त चित्रा इन नक्षत्रों में उदित हुवा दिखाई दें तो वर्षा कारक हुवा करता है, जैसाकि शास्त्रकारों का मत है।

स्वातित्रये – समुदितः प्रकरोति - पूर्वे।
शुक्रश्च शोषयति – वारि मतीव वृष्टिम्॥
पश्चात्सदा समुदितः पितृपञ्चकेप्राक्।
वृष्टिं विनाशयति–द्राक् दिशिपश्चिमायाम्॥१६

अर्थ साफ है कि स्वाति से तीन नक्षत्रों में पूर्व में उदय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होना शुक्र का वर्षा की खैंच करता है जब पश्चिम दिशा में दीखना इन्ही नक्षत्रों में वर्षा कारक है मघादि पॉच नक्षत्रों में पश्चिम में उदय होंना वर्षा की कमी कारक पूर्व में उदय होना शुभ है वर्षा कारक है।

ग्रहण प्रकरण

ग्रहण संसार में प्रसिद्ध पर्व होता है, सूर्य चन्द्रमा जब एक राशि में होते हैं तो अमावस्या का पर्व होता है, सूर्य को चन्द्रमा एक राशि में रहने से अपने कक्षान्तरों से मेघ के समान आच्छादित कर लेता है तो सूर्य का ग्रहण होता है और पूर्णमासी में जब चन्द्रमा को भूमि की छाया ढक लेती है तो चन्द्रमा का ग्रहण होता है जैसाकि शास्त्र में लिखा है।

"छादयत्यर्कमिन्दुर्विधुं भूमिभा" अर्थ सूर्य को चन्द्रमा का विम्ब ढक लेता है और विधु को भूमि की छाया ढक लेती है तब क्रमशः सूर्य तथा चन्द्रमा के ग्रहण होते हैं।

अभावसानं - दिवसे रजन्या-
मन्तो-यदि-स्यात्-सित-पञ्चदश्याः।
तदोपरागो-गणितादरम्याः
स्पष्टः-शुभे-कर्मणि चापिसाध्यम् ॥१॥

जब अमावस्या दिन में ही समाप्त हो जाती है और प्रतिपदा लगति है तो सूर्य ग्रहण का मध्य काल होता है और जब रात्रि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में पूर्णिमा समाप्त होकर प्रतिपदा लगती है तो चन्द्र ग्रहण का मध्य काल होता है यह पर्व के मध्य स्थिति होती है यदि सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण की उपपति के विषय में यदि प्रकाश डाला जावेगा तो ग्रन्थ बहुत बढ़ जायेगा हमें तो प्रस्तुत में सूर्य, चन्द्रमा के ग्रहण का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह विषय दिखाना है।

जब जिस नक्षत्र पर सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण पड़ता है और ६ मास तक उसका प्रभाव रहता है यहाँ तक कि उस नक्षत्र को शुभ कार्यों में ६ मास तक भी ग्रहण नहीं करते हैं जिस नक्षत्र में कि ग्रहण होता है तो भी फिर ग्रहण का प्रभाव क्यों नहीं वस्तु यात्र पर पड़ेगा।

शास्त्र में कहा है अर्थात् देवताओं की चार घड़ी हमारे लिए वही ६ मास के बराबर होती हुई सूर्य चन्द्रमा के वेलागत नक्षत्र से खराब और अशुभ मानी गई है अर्थ साफ है कि जिस नक्षत्र पर ग्रहण हुवा वह ६ मास तक अच्छी नहीं अर्थात् ग्राह्य नहीं होता है, सम्पूर्ण शुभ कार्यों में भी सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण का फल मनुष्य जीव जन्तु सभी पर पड़ता है व्यापारिक जिन्सों में भी उसका घटाव बढ़ाव देखा जाता है। यह बातअवश्य विचारणीय होती है कि यदि ग्रहण पूर्ण खग्रास होता है तो उसका प्रभाव ६ मास तक रहता है कमी की अवस्था में कम समय तक प्रभाव रहेगा जैसा कि—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृत्स्ने-विपादे शकलेऽधिृतुल्ये-
क्रमाद्रवीन्द्वो ग्रहिणे सुकार्यम् ॥
कार्यं नगैः पञ्चभिरर्ण वैश्च-
रामैर पास्यैव मितान्यहानि ॥३॥

अर्थात् सूर्य तथा चन्द्रमा के सम्पूर्ण ग्रहण में सात दिन को छोड़ कर प्रथम करना चाहिये इसी प्रकार तीन हिस्से ग्रहण में ५ दिन छोड़ कर दो हिस्से ग्रहण में चार दिन, चौथाई ग्रहण में तीन छोड़कर शुभ कार्य करना जैसे अनुपात द्वारा बताया गया है व्यापारिक जिन्सों में भी सम्पूर्ण ग्रहण का प्रभाव ६ मास तक तीन हिस्से ग्रहण का पॉच मास तक आधे हिस्से में चार मास और एक हिस्सा ग्रहण से तीन मास तक फल मानना अनुभव सिद्ध योगों से समझा गया है।

सम्पूर्ण-पाद - ग्रसि ते ग्रहणे - रवीन्दोः ।
ज्ञेयं-फलं बुध-वरै-र्भुवि-मास-षट्कम् ॥
पादे-तृतीय - लसिते - सति-पञ्चमासम् ।
अर्धे-तु तूर्यमथवा-प्रथमे त्रयं स्यात ॥४॥

अर्थ साफ है कि सम्पूर्ण ग्रहण का असर ६ मास तक त्रिपाद का ५ मास तक आधे ग्रहण का फल तीन मास तक रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेषादि राशियों पर ग्रहण का फल

मेषे–यदा – भवति – सूर्य - कृतोपरागः ।
पीडाजनेषु–शिशु–गोऽश्व– गजादिकेषु ॥
काम्बोज–सान्ध्र–परतश्च–किरात–मध्याः ।
पांचाल – पीडनपराः - प्रभवन्तिदेशाः ॥

मेष राशि पर जब-सूर्य का ग्रह होता है तो मनुष्यों में बच्चों में गाय बैल घोड़ा हाथी आदि पशुओं में पीड़ा, रोग बढ़ जाता हैं काम्बोज आन्ध्र-किशन-मध्य प्रदेश-पंजाब आदि देशों में पीडा तथा अरा जकता बढ़ जाती है। और व्यापरिक जिन्सों के मार्केट भी तेज हो जाते हैं यह ग्रहण प्रायः तेजी कारक ही रहा करता है। ग्रहण से पूर्व जिन व्यापारिक जिन्सों के भाव मन्दे होते हैं उनमें ग्रहण के बाद तेजियां आया करती हैं। यदि चन्द्रमा का ग्रहण मेष राशि में होता है तो स्वर्ण-चांदी-रुई,कपास शेयर्स के भावों में तेजियां हो जाती हैं गुड़, घृत में सरसों एवं रसादि पदार्थों में तेजियां हुआ करती है। चन्द्रमा का ग्रह हो या सूर्य का हो मेष राशि पर यह तेजी कारक ही ज्यादा हुआ करता है।

(२) मेष राशि में-अश्विनी- भरणी तथा कृतिका का एक चरण होता है; अश्विनी नक्षत्र में सूर्य ग्रहण पड़े तो घृत-तेल गुड़ खांड-वेजीटेबिल रसादि पदार्थों में अच्छी तेजी हो जाती है जबकि चन्द्रमा का ग्रहण अश्विनी नक्षत्र में रसादि पदार्थों में मन्दी २ मास के अन्दर ही किया करता है व्यापारि बन्धुओं को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह ध्यान रखना चाहिये कि चन्द्रमा का ग्रहण अश्विनी नक्षत्र पर रसादि पदार्थों में मन्दी कारक दो मास के अन्दर होता है।

(२) भरणी नक्षत्र में ग्रहण सूर्य अथवा चन्द्रमा का कोई दो, अनाज सब प्रकार के तेज हो जाते हैं, रुई पाट वारदाने में धातु बाने में भी तेजियां होती हैं। रसादि पदार्थ भी साधारण तेजियां लेते हैं।

(३) कृतिका नक्षत्र में जवाहरात-सोना चांदी-धातु बाना तेज होते हैं।

सूर्यस्य—चेद्ध्रुवति – चन्द्रमसश्चगागो ।
ज्ञेयोवृषे – सुखि – मनुष्य - गणेषुपीडा ॥
गोपाश्च - तत्र पथिकाः -पशवोऽपि-सर्वे ।
शोकाकुलाः -नृपतयो -वहुधा-महर्घम् ॥२॥

जब वृष राशि पर सूर्य अथवा चन्द्रमा का ग्रहण आकर पड़ता है तो पशु पक्षि मनुष्य-गोपी जन-मार्ग में चलने वाले पथिक सुखी मनुष्यों को शोका कुल और पीड़ा कारक होता है राजा भी चिन्तित हो जाते हैं व्यापारिक जिन्सों के भावों में तेजियां हो जाया करती है।

(१) कृतिका के तीन चरण वृष राशि में आते हैं, कृति का नक्षत्र का फल बताया ही जा चुका है।

(२) रोहिणी नक्षत्र में सूर्य का ग्रहण हो तो रुई-कपास,पाट

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वारदाना, सूत, सभी प्रकार के धान्य नमक तेल किराना तण. काष्ट तथा घृत. मूंग, तृण, उड़द का संग्रह करना ठीक है चन्द्र ग्रहण में रोहिणी के नक्षत्र में अपनी उच्च राशि का चन्द्रमा मन्दी कारक ही होता है।

(३) कृतिका नक्षत्र में सूर्य ग्रहण-सोना चाँदी मणि-माणिक्य जवाहरात धातु बाने में तेजी होती है शेयर्स के भावों में भी तेजियां ही हुआ करती हैं, रसादि पदार्थों के भाव भी सामान्य घटा बढ़ी में रहते हैं रुख तेजी का ही हुआ करता है। चन्द्रग्रहण में मन्दी के योग होते हैं।

(४) रोहिणी नक्षत्र में सूर्य के ग्रहण में व्यापारिक जिन्सों में तेजियां चन्द्र ग्रहण में मन्दियाँ ही होती हैं।

(५) मृग शिरा नक्षत्र में-सोना चांदी शेयर्स में तेजियाँ खांड गुड़, घृत, तेल, चावल-गेहूँ, के भाव सूर्यग्रहणके होने से तेज होते हैं। जबकि मृग शिरा के आधे चरण में चन्द्रमा के ग्रहण से मन्दा और शेष आधे चरणमें तेजी के योग हुआ करते हैं।

मिथुनगे - च-दिवा - कर पीडने ।
शशिग्रहे ऽपि - भवेद्धि महर्धता ॥
भवति - धान्य रसादि - समाकुला ।
वहुधनं लभते - रस-विक्रयात् ॥३॥

अर्थ साफ है कि मिथुन राशि में सूर्य अथवा चन्द्रमा का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहण सातों धान्यों में रसादि सभी पदार्थों में तेजी कारक हुआ करता है २ मास के अन्दर ही लाभ हुआ करता है शास्त्रान्तरों में तेजी का ही संकेत मिलता है।

सूर्य चन्द्रमसो ग्रासे-मिथुनेच कुलाङ्गना।
पीडयन्ते वन्हि का लोका-यमुना तट वासिनः ॥४

मिथुन के सूर्य चन्द्रमा के ग्रहण में वान्हिक देश निवासी जन और यमुना तट वासी जनों को पीड़ा होती है। व्यापारि बिन्सों के भावों में तेजियाँ होती है।

(६) मृग राशि का आधा चरण बाद का मिथुन राशि में है। मृगराशि का फल लिखा ही जा चुका है।

(७) आर्द्रा नक्षत्र में घृत, तेल, लोहा आदि धान्य सभी तेज होते हैं,

(८) पुनवर्सु में रुई, कपास पाट बारदाना-चावल, धान्य, गेहूँ चना, जौ, मटरा, अरहर, का संग्रह करदेने से ३ मास में ही अच्छा लाभ होता है।

कर्क राशि में सूर्य चन्द्र ग्रहण फलम्

चेत्कर्कटे-भवति सूर्य-कृतोपरागः।
चंद्रस्य वा- दिशति- गो वृष-गर्दभानाम्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संपीड़नं,-घृत गुड़ादि-तिलादि-कानाम् ।
तैलादि-संग्रह क्षते-द्विगुणं फलं-स्यात् ॥४॥

अर्थ साफ है कि जब चन्द्रमा तथा सूर्य का ग्रहण कर्क राशि पर होता है तो-बैल,भैंस, गौ, गदर्भ ऊंट आदि चौपाथों में पीड़ा होती है तथा घृत, दूध, दही, गुड़, तेल, धान्य, चावल जौ गेहूँ, आदि का भाव तेज हो जाता है। व्यापारिक वस्तूओं का संग्रह दो मास बाद बेचने से अच्छा नफा मिलता है।

(१) पुष्य नक्षत्र में ग्रहण होने से-धातु वाना शेयर्स, सोना, चाँदी, ताम्बा अच्छे तेज होते हैं गेहूँ का भाव भी तेज होता है

(२) श्लेषा नक्षत्र में ग्रहण, धान्य आदि के भावो में गुवार बाजारा, जुवार, गेहूँ, चना, हल्दी धनियां, मबीट, ताम्बा सोना चांदी गुड़ आदि के संग्रह में लाभ दिया करता है।

सिंह राशि में ग्रहण का फल

सिंहे-भवेद्यदि-शशिग्रहणं-खरांशोः ।
स्यात्पीड़नं-बनवतां-मनुजां- नृपाणाम् ॥
धान्यादि-सर्षष-कपास-तिलादि—कानाम् ।
ज्ञेयं-महर्घमतुल-भुवि-सद्य-एव ॥५॥

सिंह राशि में यदि सूर्य चन्द्रमा का ग्रहण हो पशुओ का बनो वासियों एवं मनुष्यों एवं राजाओं को पीड़ा होती है धान्यादि सात पदार्थ सरसों, अलसी अन्डी, कपास रुई, तिल, तेल सभी तेज

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो जाते हैं यह निश्चय जानिये।

सिंह राशिके नक्षत्रोंमें मघा पूर्वा फाल्गुनी में भी यही होता है

कन्याश्रितं-भवति-चेन्द्ग्रहणं-रवीन्दोः।
पीड़ां-तनोति-नियतं-कवि लेख कानाम्॥
मानं-धनं-हरति-दोष शतानि कूर्यात्।
धात्वादि-मूल-जनि-तानि- महर्घकानि॥२

जब कन्या राशि में सूर्य अथवा चन्द्रमा का ग्रहण पड़ता है तो कवि लेखकतथा गायकों को पीड़ा होती है कन्या राशि वाले मनुष्यों के मान और धन की भी हानि किया करता है। अनेक दोष होते है और धातु मूल,सम्बन्धि वस्तुओं में अचानक तेजियां आजाया करती हैं। व्यापारिक जिन्सो में अच्छी घटा बढ़ी के साथ मार्केट चलते हैं रुख तेजी के ही परिणाम में बना करते हैं।

तुलायामुपरागश्चे-त्साधवो यान्ति विक्रियाम्।
वृश्चिकेऽपि भवेद्दुःखं-पृथिव्यां- सर्वजन्तुषु॥१
चापे चोपरागश्चेत्तदा-मध्य प्रदेशकम्-
इन्द्रप्रस्थंच-पाञ्चालं-वैश्याः शुद्राश्च दोषजाः।२

अर्थः—यदि तुला राशि में सूर्य चन्द्रमा का ग्रहण आजावे तो साधु सन्यासियों को पीड़ा होती है वृश्चिक राशि में ग्रहण प्रत्येक राशि को ही कुछ न कुछ हानि कारक होता है। धन राशियों को मध्य प्रदेश और पाञ्चाल देश वासियों को हानि कारक हुआ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करता है शूद्र और वैश्य दोनों ही त्रुटियों में आजाते हैं। व्यापार सम्बन्धि जिन्सों में भी काफी घटा बढ़ी होती है ग्रहण से पूर्व जिन व्यापारिक जिन्सों के मार्केट तेज हो लेते हैं उन में मंदिया होनी आरम्भ हो जाती हैं जिन व्यापारिक जिंसों में ग्रहण पर मन्दियां हो जाती हैं उनके भावों में ग्रहण बाद सुधार ही होता है।

मकरे च भवेत्पीड़ा-जल-जन्तुषु गोषुच।
स्थाविरेषु-तथा हानि जलोत्पन्नेषु रत्नसु ॥३॥

मकर राशि सूर्य-चन्द्रमा का ग्रहण पड़े तो—जल के जीव जन्तुओं को पीड़ा वृद्ध जनों को भी हानि-जल से उत्पन्न धातु अथवा रत्नों की तेजी होती है।

कुम्भे चोपरागश्चेत् तिल तेलादिकं महत्
महर्घं जायते धान्यं नात्र कार्या विचारणा ॥४॥
मीनो परागे पीडयन्ते जले न चोप जीविनः ॥
जलद्रव्यं महर्घं स्यात् रसादि वस्तु जातयः। ५

जब कुम्भ राशि पर सूर्य चन्द्रमा का ग्रहण पड़े तो तिल, तेल आदि पदार्थों में सरसों, अन्डी, में तेजियाँ होती हैं मी राशि में ग्रहण जल से उत्पन्न वस्तुओं की तेजियां किया करता है। रसादि पदार्थों में भी तेजियां ही हुआ करती हैं।

व्यापार सम्बन्धि विचार धाराऐं लम्बी लाईने उतार चढ़ाव की मार्केट में कैसे संभव हों यहां मुख्यतया ये ही विचार पहिले प्रकाशित करते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेष सावधानी

व्यापार-सम्बन्धि विचार धाराऐं लाईनें हमप्र स्तुत पुस्तक में ज्यादातर दे रहे हैं क्योंकिसं० २०१२ तेजी में गया है २०१३ सं० भी पूर्वार्ध तेजी में बना हुवा रहा है सं० २०१३ विक्रमी का उतरार्ध और सं० २०१४ विक्रमी का पूर्वार्ध ज्यादा तर मन्दीयों के योगों का है। मगर इस में अनेक उतार चढ़ाव तेजी के भी बनते रहेगें, अतः हम यहां जनवरी सन् १९५७ ई० से आरम्भ होने वाले मन्दी की लाईन के व्यापार सम्बन्धि योगों को भी यहाँ छापकर बाद में सं० १०१४ विक्रमी के समस्त वर्ष के योगों का भी उल्लेख कर रहे हैं इस से व्यापारीयों को व्यापार में काफी मदद मिलेगी। फिर भी हमारे चालु अंको में भी बदलती हुई परिस्थिति से भी व्यापारिक बन्धु अवगति करेंगे तो अच्छा है। अब हम यहां सं० २०१३ विक्रमी की दीवाली से ही व्यापारिक योगों को दिखला रहे हैं तथा सं० २०१४ वि० के साथ इन चालू योगो का सम्बन्ध रहने से पहिले इन्हे ही स्पष्ट कर रहे हैं।

मन्दी के योग में अचानक तेजी के योग

शनिः - स्थानतः - केन्द्रगो - भूमिपूत्रो।
बुधः- सूर्य – युक्तो - युतः- सैंहिकेयः ॥
समे – तेऽनुलोमां – गतिं-वा – प्रयाताः।
तदा–मन्दतायां–महर्घं– विचिंत्यम् ॥१॥
यदा– वृश्चिके– सूर्य - पुत्रेण– युक्ताः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहाः - सूर्य - शुक्रेन्दुजाः - देवपूज्याः॥
युताः - वीक्षिताः - भूमिपूत्रेण - ते-स्यु।
स्तदा - मन्दतायां- महर्घं-विचिन्त्यम् ॥२॥
यदा - वृश्चिके - राहु-मन्दार्क - चन्द्राः ।
बुधेनाऽपि-युक्ताः- ग्रहाः पञ्चकाः-स्युः ॥
समुत्पीडितं - सूर्य-विम्बं - च- चन्द्रात्।
तदा मन्दतायां - महर्घं-विचिन्त्यम् ॥३॥

अर्थः-- (१) यदि शनि जिस किसी राशि में बैठा हुवा हो वहाँ मंगल केन्द्र में आ जावे, अथवा शनि-बुध-सूर्य-राहु से युक्त हो अथवा बुध-सूर्य-राहु ये तीन तीन ग्रह एक जगह हों राहु को छोड़ कर और ग्रह सब मार्गी हों तो मन्दी की बनी हुई चालू लाईन में तेजी के योग बन जाया करते हैं।

(२) यदि वृश्चिक राशि में सूर्य-शुक्र-बुध-गुरु-शनि के साथ युक्त हो और मंगल से ये सब देखे जाते हों तो मन्दी की लाईन में तेजी के योग बन जाते हैं।

(३) जब वृश्चिक राशि में राहु- शनि सूर्य चन्द्रमा-बुध के साथ में पांच ग्रह एक साथहों जाये और सूर्य विम्ब अपने ग्रहण से उत्पीड़ित हो अर्थात्-सूर्य ग्रहण वहां लगजावे तथा चालू तेजी की लाइन में मन्दी भी आजाती है।

यह योग सम्वत्सर २०१३ विक्रमी में कार्तिक सुदी में १६ नवम्बर से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन्१९५६ ई०से लगते हैं वहां वृश्चिक राशि में सूर्य द्वारा ग्रह शनि-बुद्ध राहु एक जगह होरहे हैं और कुम्भ में मंगल इन चार ग्रहों से केन्द्र में भी पड़ता है, गुरु-शुक्र यहां अलग अलग हैं जहां कहीं ये ग्रह एक जगह हों तो भी मन्दी में तेजी के योग बन जाया करते हैं। ता० २ दिसम्बर सन् १९५६ ई० को सूर्य ग्रहण है पांच ग्रह- सूर्य-शनि-राहु-चन्द्रमा बुद्ध-यहां पांच ग्रह योग कर रहे हैं जो व्यापार सम्बन्धि वस्तुओं में बड़ी घटा बढ़ी करेंगे ऐसे योगों में अपना व्यापार-सावधानी से करना चाहिए। ऐसी अवस्था में सूर्य ग्रहण तक तेजी बनी रहती है बाद में मन्दी के योग चालू हो जाते हैं। हर चढ़े भाव वायदा व्यापरिक जिन्सें बेचने से अच्छा लाभ होता है तैयारी का स्टाक भी यहाँ हर चढ़े भाव बेचते रहना चाहिए।

(४) यदा – नक्रगः सायनः सूर्य खेटः।
गुरोःपूर्ण–विम्बाच्छुभात्पूर्ण – दृष्टः॥
महीजो ऽपि–मेषे–गतः–केन्द्रयोगात्।
रसाः—धान्य मुद्गाः स्तदा–मन्दगाः–स्युः॥४॥

जब-सूर्य-मकर राशि में प्रवेश करें उस समय यदि बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि-मकर संक्रमण काल में पड़जाये। मंगल जब कि मेष-राशि में भ्रमण करता हुआ मकर स्थ सूर्य के साथ केन्द्र योग बना रहा हो तो-संपूर्ण-रस घृत-तेल-गुड़-गेहूं-चना जौ मटरा-उड़द-अरहर मूंग गुड़-सरसों-अलसी अंडी आदि व्यापारिक जिन्सों में अच्छी मन्दी को योग चालू हो जाते हैं यह योग सम्वत्सर २०१३ के माघ में बनेगें, और प्रायः प्रत्येक वर्ष जब भी मकर संक्रान्ति लगे उस समय विद्वानों को यह विचारना चाहिए कि सायन सूर्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर केन्द्रवर्ती ग्रहों का योग कैसा है बृहस्पति की दृष्टि भी सूर्य पर यदि पड़ती हो तो अवश्य चालू तेजी की लाइन में मन्दियां बनजाया करती हैं।

कुम्भे-गतो-दिनमणिः-प्रथमे-दलेऽहि।
शुक्रो-यदा-मकरगोऽस्तगतोऽपिप्राच्याम् ॥
कन्याश्रितेन-गुरुणा-च-सितो ऽपिदृष्टः
मासत्रयं-भवति-वस्तु गतं समर्घम् ॥५॥

अर्थः—जब कुम्भ की संक्रान्ति का सूर्य-सूर्य उदय के बाद दिन के पूर्वार्ध में अपना संक्रमण लेवे और मकर राशि में शुक्र उस समय चल रहा है और मकर का शुक्र पूर्व दिशा में यदि अस्त हो जाये, अस्त हुवा शुक्र शुभ ग्रह कन्या राशि में स्थित बृहस्पति ग्रह से पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध रखता हो और ४५ मुहर्ती संक्रान्ति कुम्भ की चल रही हो, तो तीन मास तक लगातार हर व्यापारिक जिन्सों में मन्दी के ही योग चालू हो जाते हैं अर्थात् जब शुक्र अस्त होता है तो करीब वह २। महिने तक अस्त रहता है जब तक वह अस्त चलता रहेगा तब तक मार्कीटों में मन्दियां ही बनी रहेगी यह योग मो सं० २०१३ वि० में फागुन से आरम्भ होकर २॥ मास तक मन्दी कारक रहेगा। आगे सम्वत्सरों में भी जब कभी भी शुक्र जिस किसी भी राशि में अस्त होवे और बृहस्पति से देखा जावे तो जब तक बृहस्पति अस्त रहता है। मन्दियां बनी रहती हैं यह योग विचारणीय सदा रहता है।

किसी अन्य संक्रांति में भी जो ४५ मुहर्ती हो तो ४५ मुहर्ती संक्रांति में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रास्त किसी राशि में ढ़ाई मास को अस्त होवे और अस्तंगत अवस्था में बृहस्पति से शुक्र देखा जाता हो तो प्रायः २॥ मास तक जब तक शुक्रास्त रहता है मार्केट धान्य-सरसों-अलसी-अण्डी-गुड़ पाट वारदाना के बराबर मंदी में जाया करते है। यह योग जो सं० २०१३ में फाल्गुन में आरहा है तो ३ मास की मन्दी बनेगी ही परन्तु अन्य स्थल में भी इस प्रकार के योगों में २॥ मास तक मन्दियां चला करती हैं यह सर्वत्र विचारणीय हो ग्रह योग हुआ करता है।

मन्दी के चालू योगों में तेजी के योग

सितः—पश्चिमाया मुदेत्स्वीयराशौ।
वृषे-वा-तुलायां-यदा सूर्य-योगः॥
शनीज्यौ-गदा-केन्द्रगौ-भिन्नराशौ।
समर्घान्महर्घं-तदा- चिन्तनीयम्॥६॥
यदा-चन्द्रवारे-गते-चोपरागे।
हिमॉशोश्च-खग्रास तामेतिबिम्बम्॥
भवेत्तत्र-चूड़ामणिश्शुभ्र- योगः।
समर्घान्महर्घं-तदा-चिन्तनीयम्॥७॥

अर्थ- (१) जब शुक्र ग्रह पश्चिम दिशा में अपनी वृष अथवा तुला राशि में उदय को प्राप्त हो जावे, और बृहस्पति तथा शनि अलग अलग राशियों में वृष राशि के शुक्र से केन्द्रवर्ती हों और सभी चौथे सातवें दशवे स्थान में गये हुए हों तो चालू मंदी की लाइन में तेजी के योग बन जाया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करते हैं।

(२) यदि सोमवार के दिन चन्द्रमा का खग्रास चन्द्र ग्रहण होवे तो यह चूड़ामणि नामक योग होता है इस योग से चालू मन्दी की लाइन में तेजी के योग चल निकलते हैं।

नोट—ये दोनों योग सम्वत्सर २०१२ के वैशाख सुदी पूर्णिमासी के आस पास को बनेंगे वहां वृष राशि में शुक्र उदय हो रहा है उसके बाद वृष की संक्रांति ज्येष्ठ वदी १ को लगजाने से सूर्य ग्रह भी वृष राशि में आजाता है शनि वृश्चिक राशि में और गुरु सिंह राशि में दोनों ही ग्रह अलग२ केन्द्रवर्ती हैं अब ज्येष्ठ मास से पूर्व ही जो सरसों, अलसी, अंडी गेहूं चना, जौ मटरा, अरहर तथा अन्य भी व्यापारिक जिंसों को जो व्यापारि खरीद करेगा वह अच्छी तेजी से फल प्राप्त करेगा।

उसी समय वैशाख सुदी पूर्णिमासी में सोमवार को चन्द्रमा का ग्रहणखग्रास ही आकर पड़ता है जिससे चूड़ामणि नामक योग बन जाता है यह चूड़ामणि योग भी व्यावहारिक जिन्सों में तेजी कारक होता है जब ऐसी स्थिति ग्रह चाल की बन जाती हो उस समय अवश्य चालू मन्दी की लाइन में तेजी के ही योग को अर्थ से अपनी बुद्धि के फैलाव से भी पकड़ना चाहिए यहां प्रसंग वश हम निकट भविष्य में घटने वाले योग का संकेत दे भी रहे हैं मगर ये योग जब तब ग्रह चाल से बनते रहते हैं तब इस प्रकार के फलों की कल्पना भी विद्वानों को करनी चाहिए। किस वस्तु में किस प्रकार के चांस बनेंगे स्पष्ट विवेचन हमारे चालू मासिकपत्र विज्ञान ज्योतिः से व्यापारियों को जानना चाहिए।

तेजी में मन्दी केयोग

आर्द्रां-गते-दिन पतौ-प्रमदा- पुमाँशौ।
योगे-सदा-मिथुनगे रवि-संक्रमे-स्यात्॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्के-सिते-क्षिति सुतेन युतेऽपिशश्वत् ।
माँद्यं सदा-विविध-वस्तुगतं-विचिंत्यम्

अर्थः—जब-आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य चल रहा हो मिथुन की सक्रान्ति में आर्द्रा नक्षत्र के सूर्य में स्त्री पुरुष का योग लग जाने सदा मन्दी के योग बन जाते हैं क्योंकि वर्षा के योग भी तब रहते हैं। कर्क राशि में ही निरंतर नाना प्रकार की व्यापार सम्बन्धि वस्तुओं में मन्दी के योग विद्वानों को विचारने चाहिये।

सम्वत्सर २०१४ में भी आषाढ मास में ये योग बनते हैं अन्य सम्वत्सरों में भी प्रायः ये योग मिथुन की संक्रान्ति के सूर्य में बराबर मिल जाया करते हैं।

मन्दी के योग में तेजी के योग

अस्तं - गते - क्षिति सुते - द्विवि सिंह राशौ ।
सोमा त्मजेन–च सितेन - युतेऽपि–सूर्ये ॥
दृष्टे युते ऽपि-शनिना-बलिना–च शश्वत् ।
ज्ञेयं - सदा-विविध–वस्तुगतं - महर्घम् ॥९॥

अर्थः—जब मंगल ग्रह-अपने विमण्डल में आकाश में सिंह राशि में भ्रमण करता हुवा अस्त हो जाये बुध-शुक्र-सूर्य के साथ योग करता हो, शनि ग्रह का उसके साथ पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध हो तो अनेक व्यापार सम्बन्धि-जिन्सों के मार्केटों में अच्छी तेजी की एक लाईन बन जाती है स्मरण रखना चाहिए कि मंगल की अस्तावस्था में तो मन्दीयाँ हो जाती हैं जैसे जैसे बुध-शुक्र- सूर्य ये ग्रह सिंह राशि पर मिलते जायेंगे मन्दी से क्रमशः तेजी बढ़ती जावेगी शनि की पूर्ण दृष्टि होने से तेजी मजबूत होगी स्मरण रखना चाहिये कि यह योग भी श्रावण सुदी १५

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्णमासी के आसपास में (भादों वदी में सं० २०१४ में बन रहा है)
अगस्त मास सन् १९५७ ई० में भी बन रहा है

बुधो - वक्रि भूतो - यदा-सिंह राशौ ।
महीं जो ऽपि- सूर्याद्वली -पृष्टगामी ॥
सधान्यं रसं तूलिका सूत्रपट्टम् ।
गुडं सर्षपं वृष्टि दोषा न्महर्घम् ॥१०॥
यदा-कन्यकायां- सितः - शीघ्रगामी ।
गुरू पृष्ट-गामी-सितात्कन्यकायाम् ॥
सधान्यं-रसं - तूलिका - सूत्रपट्टम् ।
गुड़ं सर्षपं वृष्टि दोषान्महर्घम् ॥११॥

अर्थः—(१) बुध ग्रह- वक्री होकर सिंह राशि में चल रहा है, और मंगल ग्रह सिंह पर सूर्य के साथ साथ रहता हुवा अंशो के पीछे हो तो गेहुं-चना-जो-मटरा-अरहर सभी प्रकार की चांजें - घृत - तेल रसादि पदार्थ, रूई तथा पाट-वारदाना-गुड़-सरसों अलसी अण्डी तिल सभी जिन्से तेज हो जाती हैं प्रायः वर्षा की कमी से यहां भाव इस स्थल में तेज हो जाते हैं ।

(१) कन्या राशि में शुक्र हो शीघ्र गति से शुक्र चल रहा है । वृहस्पति भी कन्या राशि में शुक्र से अंशो में पीछे हो तो भी सहयोग धान्यो-रसों में रूई पाट-वारदाना - गुड़-सरसों-में तेजी कारक ही होता है वृष्टि दोष से तेजियां आया करती हैं । ये दोनों ही योग सम्वत्सर २०१४ विक्रमी में भादों सुदी में बन रहे हैं वहां भी व्यापारिक जिन्सो में तेजीयाँ बनेगी, शास्त्रान्तरो में भी स्पष्ट लिखा है कि "अग्रे याति मही सुनुः पश्चाच्चलति भास्करः । नवर्षन्ति तदा मेघाः पृथिवीदुर्भिक्ष पीडिताः ॥१॥ ऐसा लिखा है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरूः-कन्यकायां - यदा-वा ऽस्तमेति ।
मही जो ऽपितत्र-स्थितः- सूर्य खेटः ॥
मही जात्पुरो याति सूर्यः स्वगत्या ।
तथैवापि-मान्द्यं भवे द्वृष्टियोगात् ॥१२॥
अमान्ते - यदा-सूर्य-भौमेज्य चन्द्राः ।
ग्रहाः-विद्यमा नाः यदा कन्य कायाम् ।
अमांतं च सोमस्य वारान्वितं चेत् ।
तदा स्याच्च मांद्यं वहोःवृष्टि योगात्

अर्थः—जब गुरू ग्रह-कन्या राशि में अस्त हो जाये मंगल ग्रह भी सूर्य के साथ कन्या राशि में विद्यमान हो, मंगल से आगे जैसे २ सूर्य अपनी गति से बढ़ेगा वैसे २ व्यापारिक जिन्सों में मन्दीयां भी बढ़ेगी वर्षा के योग से भी मन्दियां आवेगी, जब किसी अमावस्या में सूर्य - मंगल गुरू चन्द्रमा चार ग्रह कन्या राशि में एक जगह होवे और वह अमावस्या सोमवर्ती आकर पड़ जाये तो अच्छी व्यापक वर्षा के योग द्वारा मन्दियां मार्केट में बन जाया करती हैं ! ये दोनो ही योग सम्वत्सर २०१४ विक्रमी में भी आश्विन मास में बन रहे हैं वहां पर आश्विन् कृष्ण पक्ष में मन्दियां बन जानी पूर्ण संभव होंगी इस प्रकार के योग आगे के भी सम्वतसरों में जब जब बनेगें विद्वानों को सावधानी से विमर्श कर के फल कहना चाहिये ।

तुलायां यदा राहु देवेज्य योगः ।
तथा वृश्चि के सूर्य जो भौम युक्तः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहाःसौम्य सूर्येन्द वश्चापगाः स्युः।
महर्घं महत्स्यात् सिते नक्रगेऽपि ॥१४॥
अभान्ते गतौ सूर्य चन्द्रौ च चापे।
बुधो वक्रि भूतो गतश्चापि तत्र ॥
अभान्तं च मन्दस्य वारान्वितं चेत्
महर्घं-महत्स्यात्-सिते न क्रगेऽपि ॥१५॥

अर्थः—तुला राशि में जब बृहस्पति-राहु का योग हो तुला से अगली ही वृश्चिक राशि में शनि-मंगल दोनों बैठे हो और वृश्चिक से अगली राशि धन में बुध-सूर्य-चन्द्रमा ये बैठे हों और धन से अगली राशि मकर में शुक्र हो तो लगातार सभी ग्रहों के इस प्रकार के योग में व्यापार सम्बन्धि प्रत्येक वस्तू में बहुत अच्छी तेजी के योग बन जाते हैं ॥१४॥

यदि वा अमावस्या में सूर्य चन्द्रमा जब एक साथ योग करते हैं तो ये दोनों ग्रह यदि धन राशि में योग करें और धन राशि में ही वक्री बुध भी चल रहा हो और अमावस्या धन संक्राति की पौष मास की शनि-वारी पड़ जावे मकर के शुक्र में वहाँ बहुत ही अच्छी तेजीयां आ जाया करती हैं ये दोनों योग भी सम्वत्सर २०१४ विक्रमी में पौष वदी में बन रहे हैं इस आने वाले योग से भी व्यापारी बन्धु लाभ उठावे यह तो एक उप लक्षण मात्र है किसी भी सम्वत्सर की पौष मास की मावस में इस प्रकार के योग बनने पर शनिवार मंगल वार की अमावस्या में तेजियां बना ही करती हैं उपरोक्त जैसे योगो में अच्छी तेजी के योग बन ने से पूर्व खरीदे सौदों में अच्छा लाभ प्राप्त होता है और यह तेजी एक मास

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तक अच्छी स्थायी रहा करती है यह योग परीक्षित है व्यापारियों को ऐसे योगों से लाभ उठाना चाहिये।

यदा-माघ मासे-सिते-पश्चिमायाम्।
सितो-नक्रगेऽस्ते-गतः-सूर्य योगात्॥
भृगोरस्त योगाद तो वृष्टि-सत्वात्।
गुडं-सर्षपं-धांन्य तैलं समर्घम्॥१६॥
यदा-संक्रमो वाण चन्द्रे मुहुर्त्ते-
निशीथे-भवेन्नक्रगे- सायनार्के॥
महर्घात्समर्घ-भृगोरस्तयोगात्॥
गुड़ं-सर्षपं-धान्य तैलं समर्घम्॥१७॥

(१६) माघ शुक्ल पक्ष में मकर राशि के सूर्य के साथ शुक्र ग्रह हो और वह अस्त हो जाये तो वृष्टि के योग बनने से मन्दियां मार्केट में बन जाती हैं। गुड़-सरसों-मटरा-अरहर गुवार तेल के वायदा व्यापर में मंदी के योग हो जाते हैं।

(१७) यदि मकर कीसंक्रान्ति १५ मुहर्ती बैठी अवस्था में रात्री में लगे तो तेजी करके बाद में मन्दी कारक होती है।

तेजी की अवस्था में व्यापार सम्बन्धि वायदा जिन्सों को बेचने से लाभ होता है।

ये दोनों ही योग सम्वत्सर १०१४ विक्रमी में माघ मास में सुदी में मिलते हैं वहां वर्षा के योग भी हैं यद्यपि मकर संक्रान्ति तो माघ वदी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६ को सूर्योदय से पूर्व १४ जनवरी सन् १९५८ ई० में लगती है और हां तेजी के मार्केट रहते हैं माघ सूदी में शुक्रास्त हो जाने से मार्केट अच्छी मन्दी लेते हैं।

तेजी का योग

यदा-स्या-द्दिनेशात्मजो-मूलभेच।
धनौ-तोय-हीनां-महीं-वा विधत्ते॥
महीजोऽपि-तत्र-स्थितो-दोष कृत्स्यात्।
तुलायां-गुरौ-वक्रगे वा महर्घम्॥१८॥
अमान्ते-रवीन्दू- यदा कुम्भ गौ-स्तः।
सितो वा बुधोऽपि-समं विद्यमानः॥
अमन्तं च भौमस्य वारान्वितंचेत्॥
महर्घं च तद्विक्रियाल्लाभ कारी॥१९॥

जब शनिश्चर ग्रह-धन राशि में मूल नक्षत्र में प्रवेश करें वहां मंगल ग्रह भी विद्यमान हो तो भूमि पर वर्षा की कमी से दुर्भिक्ष का योग पड़ जाया करता है अथवा और कोई ऐसा उपद्रव उठ जाता है जिससे व्यापार सम्बन्धि मार्केट तेज हो जाते हैं जब कि तुला राशि में वृहस्पति भी वक्री हो गया हों ये योग सम्वत्सर २०१४ विक्रमी में फागुन वदी अमावस्या में बन रहे हैं, वहां अमावस्या में सूर्य चन्द्रमा-बुध-शुक्र ये चार ग्रह एकत्र हो रहे हैं और मंगल वारी मावस है उस समय अनेक व्यापारिक जिन्सो के मार्केट तेजी में जावेगें जिन भी वस्तुओ का मार्केट तेजी पकड़े उन्हे तेजी उछाले माल बेचना अच्छा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि ग्रह की चार व्यवस्था

भूमीशाः क्रोध-पूर्णाः विषधरमुदितौः
पक्षिणां-सन्निपातः
सप्त द्विप प्रकंम्पा नर पतिमरणँ
याँति मेधाः विनाशम् ॥
वैकल्यात् व्याप्यमानः सकल जनरिपुः
सर्व कार्य निहति ।
सर्वेते यांति नाशं सकल गुण विधेः
वृश्चि के सूर्य पुत्रे ॥१॥
यदा वृश्चिकगः सौरिर्मेदिनो दुखसँयुता ।
वर्ष मात्र मथो चोर्ध्व मिन्द्र प्रस्थोऽपिदोषजः,
तुला वृश्चिक चापेषु यदा याति शनिश्चरः ।
त्रिभाग शेषा पृथिवी मांस शोणित कर्दमैः ॥२॥

अर्थः—जब वृश्चिक का शनि होता है तो राजाओं में परस्पर क्रोध और संग्राम की तैय्यारी हो जाती है, सर्पों का भय बढ़े पशु पक्षियों में मनुष्यों में रोगोपद्रव बढ़े देश विदेशों में भू कम्प भी होवे जिनसे हानियाँ हो राजा की मृत्यु हो, मेडो का नाश हो, प्राणियों में विकलता हो अशान्तियाँ बढ़े, परस्पर बैर कलह बढ़े. राजधानी में हानी योग बने, जब तक शनि तुला वृश्चिक धन इन राशियों में रहते हैं कोई न कोई दैविक संकट-उत्पात-उपद्र जन धन संहार कारक योग बनता रह सकता है यह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुभूत योग है।

सम्वत्सर २०१४ वि० में भी वृश्चिक राशि में ही शनि रहेगा सं० २०१४ के फागुन में शनि धन राशि में आवेगा अतः व्यापारिक जिन्सों में अच्छी घटा बढ़ो उपरोक्त समय में बनेगी।

नोट.—धन राशि में शनि सम्वत्सर २०१४ वि० के फागुन बदी सप्तमी को होता है और यह वक्री अति चारी मार्गी चाल से सम्वत्सर २०१७ के फागुन बदी दोज तक धन राशि पर ही चलता रहेगा करीब तीन वर्ष तक धन राशि पर रहेगा जिस की स्वभाविक गति २॥ वर्ष की एक राशि पर होती है अतः शनैश्चर में वृश्चिक धन के शनि के समय में रोगोपद्रव राजविग्रह आदि उपद्रवों से आधी जनता का ह्रास तो होना संभव है।

आर्ष ज्ञान विचार

वैशाख-शुक्ल-गमिता- गुरु - रोहिणीजा-
रामातिथिः-परशुराम-सितान्विताचेत्॥
या श्रावणी-श्रवण भेन-समन्विता-स्यात्।
वर्षं- भवेच्छुभफलेनयुतं पृथिव्याम्॥१॥
या-कार्तिकी-कृ तिकया न युतातु-पूर्णा।
पौषी-कुहु स्तिथि च मूल वियोगिनी स्यात्
आर्षं-सदा-न शुभदं परितो-विशेषात्
आर्षं च- ज्ञाययति वर्ष फलं समस्तम्॥२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थः—(१) वैशाख शुक्ल तृतीया शुक्र वार या गुरुवार की हो तो परशुराम जयन्ती के दिन रोहिणी नक्षत्र के रहने से तथा श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र के रहने से वर्ष फल शुभ होता है।

कृति का नक्षत्र कार्तिक पूर्णमासी को हो पौष वदी मावस को मूल नक्षत्र हो तो ये आर्ष मान वर्ष को शुभ बनाने वाले बताये गये हैं।

(२) इस के विपरीत यदि वैशाख शुक्ल की अक्षय तृतीया पाप वार की हो और रोहणी नक्षत्र का अभाव हो तथा श्रावण शुक्ला पूर्णमासी में श्रवण नक्षत्र का अभाव हो तथा कार्तिक की पूर्णमासी में कृति का नक्षत्र का अभाव हो पौष वदी मावस में मूल नक्षत्र का अभाव हो तो ये आर्ष मान वर्ष को अशुभ बनाते हैं।

(३) तीसरी स्थिति इन चार आर्षों में दो ठीक हो और दो अभवाव वाले हो तो वर्ष मध्यम होता है। आर्षद्वये मध्यमम्"

(४) यदि तीन आर्ष खराब हो एक ठीक हो तो एक हिस्सा वर्ष ठीक होता है। "आर्षे तूर्ये नेष्टम्"

(५) यदि तीन आर्ष ठीक हो एक आर्ष खराब हो तो तीन हिस्से वर्ष शुभ रहेगा एक हिस्सा खराब रहेगा। "आर्ष त्रये शुभम्"

प्राचीन कहावत है किः—

कुहु-अमावस मूल बिनु रोहिणी बिनु अखतीज।
श्रवण - विहीना - श्रावणी-कैसे उपजे बीज ॥३॥

अर्थ साफ है कि पौष की मावस में मूल का आभाव हो, आखा तीज

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में रोहिणी का अभाव हो श्रावणी को श्रवण-नक्षत्र का अभाव हो तो शुभ नहीं है। अन्यथा फल शुभ होता ही है आर्षमान के इस सिद्धान्त के आधार पर सम्वत्सर २०१४ विक्रमी में गत वर्ष की मावस मूल नक्षत्र के अभाव वाली थी वैशाख की अक्षय तृतीया श्रवण युक्त है और गुरूवार वाली है जो शुभ है श्रावण की पूर्णिमासी भी २७ घड़ी के करीब है जो शुभ ही है तथा कार्तिक की पूर्णिमा भी कृतिका के नक्षत्र से रहित है इस वास्ते दो आर्ष तो सम्वत्सर २०१४ में ठीक पड़ते हैं और दो आर्षों का अभावही रहता है इस वास्ते सम्वत्सर २०१४ का वर्ष आधा तो उत्तम जावेगा आधा खराब रहेगा, आधा समय तेजी में आधा समय वर्ष का मन्दी में जावेगा। इसी सिद्धान्त के अनुसार विद्वानों को आर्ष का विचार सझमदारी से प्रत्येक वर्ष के लक्षण को मिलाने में भी काम लेना चाहिये।

आर्द्रा प्रवेश समय ज्ञान विचार

वराहमिहिराचार्य ने अपनी वाराही संहिता में वर्षा के आधार पर भी समय के शुभ और अशुभ लक्षण बताये हैं वर्षा के विज्ञान के आधार पर तेजी मन्दी की जानकारी तो हम व्यापार विज्ञान द्वितीय भाग में ही छापेंगे व्यापार विज्ञान जो यह पुस्तक अब हम ने निकाली है इस प्रथम भाग में वर्षा सम्बन्धि ज्ञान का कोई भी जिक्र नहीं है, यद्यपि हमारे द्वारा "वृष्टि विज्ञान" नामक ग्रन्थ स्वतंत्र लिखा हुवा है जो क्रमशः प्रकाशित होना है फिर भी वर्षा के ज्ञान द्वारा भी तेजी मन्दी की जानकारी हम "व्यापार विज्ञान" द्वितीय भाग में ही देंगे यहां तो प्रसंग वश आर्द्रा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नक्षत्र में जब सूर्य प्रवेश करते हैं तो "आर्द्रा प्रवेश कुण्डली से भी मन्दी तेजी का ज्ञान होता है, जैसा कि वराहमिराचार्य ने कहा है:—

प्रायो ग्रहाणा मुदयास्त काले ।
समागमे - मण्डल संक्रमे च ॥
पक्षक्षये तीक्ष्ण कराय नान्ते ।
वृष्टि र्गते ऽर्के नियमे न चार्द्राम् ॥१॥

अर्थ:—ग्रहों के उदय अस्त के समय संक्रान्ति के बदलने के समय में पक्ष क्षय के होने पर अयन बदलने पर - आर्द्रा में सूर्य के प्रवेश काल में भी वर्षा प्रायः नियम पूर्वक होती है अतः यह ज्ञान व्यापार विज्ञान की जानकारी में उपयोगी है विद्वानों को व्यापारियों के विचारने की वस्तु है। सम्वत्सर २०१४ विक्रमी में आर्द्रा प्रवेश कुण्डली के आधार पर उदाहरण से व्यापार का रुख बता रहे हैं।

आर्द्रा प्रवेशलग्नम्

जैसे आर्द्रा में सूर्य सम्वतसर २०१४ विक्रमी में मिति आषाढ़ वदी नौमी को ४६घ० ३५ पल पर होता है तो विद्वानों को आर्द्रा प्रवेश कालकी घड़ी पल को इष्ट मान कर लग्न निकालकर उसी समय की ग्रह स्थिति से आर्द्रा प्रवेश कालिक कुण्डली बनानी चाहिये जैसे

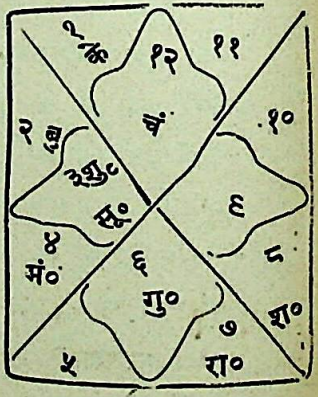

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यहां स० २०१४ विक्रमी में मीन लग्न में आर्द्रा का प्रवेश हुवा है । मीन जल चर राशि है चन्द्रमा मीन का वर्षा कारक है जब कि बृहस्पति ग्रह की पूर्ण दृष्टि भी आर्द्रा प्रवेश लग्न पर पड़ती है, पाप ग्रह की दृष्टि लग्न पर पूर्ण कोई नही है अतः

आर्द्रा-प्रवेश - लग्नं-धन-मीन - कर्कम् ।
दृष्टं - युतं - शशि-गुरुः- सित-सौमपुत्रैः ॥
शेषैः - ग्रहैः त्रिक - सुतार्थगतैः विचिन्त्यम् ।
वर्ष-शुभं - शुभ - खगैर्न-युतं शुभं नं ॥१॥

अर्थः—साफ है कि यदि आर्द्रा, प्रवेश लग्न, धन, मीन, कर्क में से कोई भी हो और उस पर बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि हो-शुक्र-बुध-चन्द्रमा का अथवा दृटि योग हो शेष ग्रह ३-६-११ स्थान में पांचवे-दूसरे स्थान में गये हों तो वर्ष - शुभ फल देने वाला होता है शुभ ग्रहों से यदि युत अथवा दृष्ट नही हो तो शुभ फल नही होता है सम्वत्सर २०१४ के आर्द्रा प्रवेश लग्न- में चन्द्रमा एवं बृहस्पति की दृष्टि अपनी मीन राशि के लग्न पर पूर्ण पड़ती है अतः इस वर्ष अच्छी वर्षा होगी फसलें अच्छी होगी मन्दीयों का बोल बाला रहेगा सुभिक्ष क्षेम कारक योग रहेगा, एसे ही प्रत्येक वर्ष में आर्द्रा प्रवेश कालिक ग्रह स्थिति से विचार मिलना चाहिये

विशेष योग सम्वत्सर २०१४ के आषाढ़ में योग आ रहा है कि:—

आर्द्रा शुभा-यदि-च-संक्रमणं शुभं स्यात् ।
जीवेन्दुः-शुक्र-शशिजाः-यदि-मञ्चवाराः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्यात्पूर्णिमा-शुभ-खगैश्च-विमिश्रिता-चेत ।
आषाढ़ कं-समिथुनं-शुभसंक्रमं स्यात् ॥२

अर्थ,—आर्द्रा शुभ होने पर - मिथुन संक्रान्ति शुभ होने पर आषाढ़ मास में गुरू-चन्द्रमा शुक्र - चन्द्रमा में से कोई भी वार पांच संख्या में होने से तथा आषाढ़ी पूर्णिमा पवन परीक्षा की तिथि शुभ उतरने पर वर्ष शुभ होता है सं० २०१४ में ये सब बातें आषाढ़ में मिल रही हैं।

वस्तु मात्र में अच्छी तेजी मन्दी के योग

जब एक सम्वत्सर बदल कर दूसरा सम्बत्सर लगता है तो विज्ञपाठक जानते है कि चैत्र मास का कृष्णपक्ष तो पिछले सम्बत्सर में आता है और चैत शुक्ल पक्ष अगले सम्बत्सर में आता है वैसे चान्द्र मास की गणना अमावस्या से अमावस्या तक ही हुवा अरती है, जिस चैत्र मास में जो चान्द्र मास की दृष्टि से चैत्र कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से लेकर मध्य चैत्र शुक्ला पूर्णिमा तक रहता है यदि पाँच शनिवार पड़ जावें और पांच ही रविवार पड़ जावें। और मंगल ग्रह वृष राशि में वृश्चिक राशि के शनि से पूर्ण दृष्टि से देखा जाता हो बुध शुक्र सूर्य तीनों एक ही मीन राशि पर योग रखते हों तो ऐसी अवस्था में व्यापार सम्बन्धि जिन्सों के मार्केट बहुत ही बढ़ी - घटा बड़ी में चलते हैं अर्थात वस्तुओं में तेजी के योग आते हैं। योग निम्नलिखित है।

यदा-चैत्र मासे शनेः पञ्चबाराः ।
रवेश्चापि वाराः भवेयुश्च पञ्च ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महीजो-वृषे - सूर्य - पुत्रेण-दृष्टः ।
रसाः-धान्य-धातुस्तिलाद्याः मर्हघाः ॥१॥
यदा-मीन-राशौ-स्थितौ-सूर्ग-शुक्रौ ।
सुरे ज्येन - कन्या-स्थितेनापि-दृष्टौ ॥
मही जेन - मन्देन-ते-स्युर्न-दृष्टौ ।
रसाः-धातु-धान्याः स्तिला द्याः समर्घा ॥२॥

अर्थ—जेसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि जिस चैत्र के चान्द्र मांस में पांच शनिवार और पांच रविवार पड़ते हों और मंगल ग्रह वृष राशी में वृश्चिक राशि के शनि से पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध रखता हो तो समस्त रसादि पदार्थ-सातों धान्य-सभी धातु-सभी तिलहन-रुई पाट वारदाने आदि व्यापारिक जिन्सों में अच्छी तेजियां आती हैं स्मरण रखियेगा कि यह योग सम्वत्सर २०१३ विक्रमी में हो चैत्र शुक्ल पक्ष से आरंभ हो कर चैत्र शुक्ल पक्ष सम्वत्सर २०१४ विक्रमी में ही समाप्त हो जाता है इस योग द्वारा यहाँ बड़ी भारी तेजी का सकेत मिलता है ॥ १॥

(२) दूसरायोग यहीं सम्वत्सर २०१३ के चैत्र कृष्ण पक्ष में ही तथा सम्वत्सर २०१४ विक्रमी के ही शुक्ल पक्ष में ही जहां कि इस उपरोक्त तेजी के योग का उल्लेख किया है वहीं इसी समय में ही यह दूसरा योग उपरोक्त ही जिन्सों में मन्दी का बनना है अर्थात्-जब मीन राशि में सूर्य बुध शुक्र ये तीनों ग्रह एक साथ हो और कन्या राशि में स्थित बृहस्पति ग्रह से पूर्ण दृष्टि से देखे जाते हो और इन सूर्य-बुध-शुक्र पर मंगल शनि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में से किसी ग्रह की भी पाप ग्रह की दृस्टि न पड़ती हो तो सम्पूर्ण रसादि पदार्थ सातों धान्य सभी धातुऐं-तिलहन ये सब जिन्सें मन्दी हो जाती है यह योग एक ही समय में शुभ ग्रह के सम्बन्ध से मन्दी कारक हुवा, एक योग यहाँ पाप ग्रह के सम्बन्ध से उन्ही वस्तुओ में उसी टाइम में तेजी कारक हुवा इसका अर्थ साफ है कि इस वर्ष सम्वत्सर २०१३ विक्रमी चैत्र कृष्ण पक्ष और सम्वत्सर २०१४ विक्रमी के चैत्र शुक्ल पक्ष में दोनों पक्षों का चैत्र चाँद्रमांस बड़ी घटा बढ़ी का अच्छी घटा बढ़ी का मांस रहेगा यहाँ ऊंचा नीचा मार्केट और वर्षों की अपेक्षा ज्यादा घटा बढ़ी का रहेगा। अतः यहाँ नजराना लगा कर व्यापार करना चाहिये। तथा तेजी के अवतरो में माल लिया हुवा बेचकर नफा कमालेना चाहिये और मन्दी की पोजीशन में माल खरीदना भी ठीक रहेगा, ऊँचा नीचा ज्यादा मार्केट रहने की अवस्था में छोटे व्यापारियों को सावधानी बरतनी चाहिये यह भी ख्याल करना चाहिये कि घटा बढ़ी के मोको पर तेजी का रुख ज्यादा हर जिन्स के व्यापार में होगा।

स० २०१४ वि० ज्येष्ठ मास का विशेष योग

ज्येष्ठमास में पांच मंगलवार पड़ते हैं और पांच बुधवार हैं। १४ मई को मंगलवार में वृष की संक्रान्ति ३० मुहूर्ती धान्य भाव सम रखती हैं रुख घटा बढ़ी के तिलहन और गल्ले का तेजी मेंही रहेगा। ज्येष्ठ के विशेष योग को हमने आरंभ में भी दिया है और व्यापार विज्ञान में दिया जा चुका है उस योग से व्यापारियों को लाभ उठाना चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वस्तु—मात्र में तेजी के योग

बुधः सूर्य - युक्तो - युतः केतुनाऽपि ।
गुरोः राहु योगात्तुलायां - प्रविद्धः ॥

महीं जेन - दृष्टः शनेश्चापि - दृष्टं ।
स्तदा-वस्तु-मात्रं-महर्घं-विचिन्त्यम् ॥१॥

यदा - चान्द्रमासे -शनेः पञ्चवाराः ।
शनौ- चेदमान्ते-दिने सूर्य रागः ॥

रवौ स्वोच्चगे-संक्रमे-सूर्य वारे ।
तदा वस्तु मात्रं महर्घं विचिंत्यम् ॥२॥

अर्थः—(१) बुध - सूर्य - केतु ये तीनों ग्रह मेष राशि में स्थित होकर तुला राशि में स्थित राहु और बृहस्पति के योग द्वारा वेधित होते हों, मंगल तथा शनि से भी दृष्टि सम्बन्ध उनका बना हुवा हो तो वस्तु मात्र में उस समय तेजी के योग बना करते हैं।

(२) जिस चान्द्र मास में पाँच शनिवार पड़ते हो अमावस्या भी शनिवारी हो और उसी दिन दिन में सूर्य ग्रहण भी पड़ जाये अपनी उच्च राशि की मेष की संक्रान्ति भी रविवार में पड़ जाये तो वस्तु मात्र में ही तेजी के योग बन जाया करते हैं ये दोनो ही योग सम्बत्सर २०१५ विक्रमी में वैशाख मासमें पड़ेगे व्यापारि बन्धु समय पर लाभ इस योग से उठावेंगे तो अच्छा होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुधो-वक्रि भूतो-युतौ सूर्य चन्द्रौ ।
अमायां गतौ-सोपरागं-यदा-तौ ॥
शनीज्यौ-विलोमां-गतिं चेत्प्रपन्नौ ॥
तदा-बस्तु-मात्रं-महर्घं-विचिन्त्यम् ॥३॥
शनौ- सूर्य-रागाच्छन्नौ चन्द्र रागे ।
दिने-पञ्चचन्द्रे पुनः स्याद्व्यतीते ॥
ग्रहाः वकिणो-मन्द-सौम्येज्य पूर्वा ।
स्तदा-वस्तु-मात्रं महर्घं विचिन्त्यम् ॥४॥

अर्थः—(३) जब बुध वक्री अवस्था में सूर्य चन्द्रामा के साथ हो और अमावस्या में सूर्य ग्रहण भी पड़ जावे, बृहस्पति और शनि दोनों हीं ग्रह वक्री चल रहे हों तो ऐसे योग में वस्तु मात्र. में ही तेजी आया करती है ।

(४) शनिवार में सूर्य ग्रहण पड़ जाये और १५ दिन बीतने पर शनिवार को ही चन्द्रमा का भी ग्रहण पड़ जाये शनि बृहस्पति बुध ये ग्रह वक्रि चल रहे हों तो वस्तु मात्र में तेजी के योग की चिन्तना विद्वान् पुरूषों को करनी चाहिये । ये दोनों योग भी सम्वत्सर १०१५ वैशाख मास में आकर पड़ेगे जहां कि व्यापारियों को पहिले से सावधानी करनी चाहिये ।

वस्तु मात्र में मन्दी के योग

यदा-कर्क-राशौ-बुधे-संक्रमः स्यात ।
शरा-वेद - संख्यात्मके वा - मुहूर्ते ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभान्ते ऽधिमा सो गतः श्रावणश्चेत्।
तदा वस्तु मात्रं समर्धं विचिन्त्यम् ॥५॥

अर्थः—जब कर्क राशि में संक्रमण बुधवार को अमावस्या में ४५ मुहर्ती लगे और अधि मास श्रावण मास का पड़ जाये तो वस्तु मात्र में ही मन्दी के योग बन जाते हैं। यह योग सम्वत्सर २०१५ में लगेगा वहां ४५ मुहर्ती संक्रान्ति कर्क की श्रावण वदी मावस बुधवार को लग जाती है। वहां मन्दी का योग बनता है व्यापारियों को सावधानी रखनी चाहिये।

यदा-चन्द्रवारे-विधोः दर्शनं-स्यात्।
बुधे वासरे-कन्य का संक्रमो ऽपि ॥
बुधे ऽस्तं गते सिंह राशौ समन्तात्।
तदा-वस्तुमात्रं- समर्धं विचिन्त्यम् ॥६॥

अर्थः—जब कभी सोमवार के दिन चन्द्रमा का दर्शन हो बुधवार को कन्या की संक्रान्ति लगे चाहे वह १५ मुहर्ती ही क्यों न हो बुध सिंह राशि में अस्त होने की अवस्था से चारों तरफ से वर्षा के योग अच्छे चालू रहने से वस्तु मात्र में मन्दी के योग बन जाते हैं यह योग सम्वत्सर २०१५ वि० क्रमी में भादो सुदी में भी मिलेगा वहां १५ मुहर्ती संक्रान्ति के रहते हुवे भी वर्ष के अच्छे बनने से मार्केट वस्तु मात्र में मन्दी के योग बनेंगे, जब जब एसे योग होते हैं मन्दीयां आती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुलायां-गताः सूर्य-सौम्येज्यशुक्राः ।
सितेज्यौ-तुलायां-समं वास्तगौ चेत् ॥
तदा-मन्दता तूलिकायां विशेषात् ।
तथा-धान्य-भावाःभवेयुःसमानाः ॥७॥
महीजो यदा-चेद्दिनेशात्मजेन ।
वृषे संस्थितः पूर्ण वेधं-विधत्ते ॥
तदा सर्षपायाः रसाः स्थु र्महर्घा ।
स्तदा-धान्यभावा :-भवेयुः समानाः ॥८॥

अर्थः—जब तुला राशि में सूर्य बुध शुक्र बृहस्पति चारो ग्रह एक साथ आकर मिल जाये और तुला में स्थित शुक्र और बृहस्पति एक साथ अस्त हो जाये तो केवल रूई का मार्केट निः सन्देह बहुत अच्छी मन्दीयाँ लिया करता है पाट बारदाने में भी मन्दी के योग बना करते हैं परन्तु - अनाज - धान्य भाव समान रूप से ही बने रहा करते है । ७॥

दूसरा योग यह है कि यदि मंगल वृष राशि में चल रहा हो और वृश्चिक राशि में स्थित शनि के साथ उसका पूर्ण वेध होता हो तो तिल इन सरसों अलसी अण्डो घृत - तेल गुड़ के मार्केट में तेजीयां आती हैं धान्य भाव फिर भी समान रूप से ही बनते हैं ये दोनों योंग सम्वत्सर २०१५ विक्रमी में आश्विन् शुक्ल पक्ष में आते है व्यापारियों का अपने चांसों को साधने के लिये यत्न शील रहना चाहिये ।

मूले-गतो-धनुषि-चेद्यदि-मन्द गत्या ।
सूर्यात्मजो-वितनुते-बहुधामहर्घम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भौमेन तत्र-गतितश्च-बिलोमगेन ।
दृष्टे-युते-शण कपास-रसं-महर्घम् ॥९॥
ईज्यो-यदा-समुदयं-सु-भ्रमन् तुलायाम् ।
शुक्ले-शुभो-व्रजति-कार्तिक मासपक्षे ॥
दीपावली-कुजदिने,च तिथेःक्षयोवा ।
शुक्ले,-रसं-शण-कपास-गुड़'महर्घम् ॥१०॥

अर्थः—(९) मूल नक्षत्र में धन राशि में मन्द गति ग्रह शनैश्चर यदि वक्री - मंगल से वेध पूर्ण करता हो अर्थात् पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो शण - कपास - पाट बारदाना रूई घृत तेल गुड़ शक्कर रसादिपदार्थ सरसों अलसी अण्डी जिन्से तेज हो जाती हैं ॥९॥

(१०) बृहस्पति ग्रह तुला राशि में भ्रमण करता हुवा कार्तिक शुक्ल पक्ष में यदि उदय को प्राप्त होवे, और दीवाली मंगल वारी आकर पड़ जाये और कार्तिक सुदी की तिथि टूट रही हो तो रसादि पदार्थों में तथा रूई, पाट, बारदाने एवं गुड़ में अच्छी तेजी के योग बना करते है ये दोनों ही योग सम्वत्सर २०१५ वि० में कार्तिक मास में बन रहे हैं इन योगों से भी व्यापारियों को लाभ उठाना चाहिये आगे सम्वत्सरों में भी जब भी एसी ग्रह चाल आकर पड़ेगी तब भी तेजियां होगी ।

बुधोऽस्तं-गतश्चेदलौ-पश्चिमायाम् ।
दिनेशः सितो ऽपि-समं विद्यमानो ।
महीजेन-मेष-स्थितेनापि-दृष्टो ।
महर्घात् समर्घं-तदा-वस्तु जातं ॥१०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थः—बुध ग्रह वृश्चिक राशि में पश्चिम दिशा में अस्त हो रहा हो। सूर्य और शुक्र दोनों ही ग्रह साथ में चल रहे हों मंगल ग्रह मेष राशि में स्थित हो कर पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो। तो प्रायः वस्तु मात्र के अन्दर तेजी से मन्दी की स्थिति साधारण रूप से जरूर बन जाया करती है यह योग सम्वत्सर २०१५ विक्रमी में मार्ग शीर्ष मास में आवेगा आगे के भी सम्वत्सरों में जब तब ये ग्रह चाल आवेगी तब इस योग में तेजी के योगों से मन्दियां बनने के संयोग बन जायेंगे। निकट भविष्य में सम्वत्सर २०१५ विक्रमी में यह योग व्यापारियों को प्राप्त होगा।

यदा पौषमासे शनेः पञ्चवारा ः।
शनिश्चेद्धनौ सूर्य शुक्रेणयुक्तः ॥
मही जो बुधः शुक्रमन्देज्य काश्चि
यदा मार्गिणस्ते-महर्घ, प्रकुर्युः ॥१०॥

अर्थः—जब पौष मास में पांच शनिवार आकर पड़ें तो शनि ग्रह सूर्य शुक्र ग्रह के साथ धन राशि में चल रहा हो और मंगल बुध शुक्र शनि बृहस्पति सभी ग्रह मार्गी हों तो ध्यान रखिये हर वस्तु के मार्केट उस समय तेज हो जाया करते हैं, पांच ग्रहों का एक साथ मार्गी होना तेजी कारक पांच ग्रहों का एक साथ वक्री होना मन्दी कारक भी हुवा करता है ये भी योग परीक्षित हैं। स्मरण रखिये पांच ग्रह मार्गी पौष मास में सम्वत्सर २०१५ विक्रमी में पड़ते हैं पोष मास में पाँच शनिवार भी पड़ते हैं सूर्य शुक्र शनि एकराशि में भी चल रहे है यहां तेजी के योग बनकर पोष सुदी में मकर संक्रान्ति लगने पर मन्दी के योग चालू होंगे रूई पाट

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बारदाना सातो धान्य तिलहन सभी प्रकार के वायदों में पहिले तेजियां बनकर बाद में मन्दीयां बनेगी।

वर्षाधिपो यदि गुरुःसचिवश्च चन्द्रः।
सूर्येन्दुनो नचभवेदुपरागदोषः॥
मित्रग्रहे सुरगुरुःश्चतथैवमन्दो।
मान्द्यं करोति वर्षे बहुवर्षणं स्यात्॥११॥
इज्यो ऽलिगो रविसुतश्च धनौ स्थितोऽपि।
भौमान्वितो यदिसितो मिथुने बलीयः॥
मन्दा गति र्यदिगुरोश्च विलोभगाऽपि।
मान्द्यं करोति वर्षे नियतं सुभिक्षम्॥१२॥

अर्थ :—जिस सम्वत्सर में वर्ष का राजा बृहस्पति होवे, चन्द्रमा मन्त्री होंवे और उस वर्ष चन्द्रमा और सूर्य का कोई भी ग्रहण आकर न पड़े मित्र की राशि में बृहस्पति ग्रह चल रहा हो शनि भी उसी प्रकार मित्र राशि में चलता हो तो उस वर्ष मन्दी का सम्वत्सर होता है अच्छी वर्षायें होती हैं।

—ये योग सं० २०१६ विक्रमी का है वह मन्दी का सम्वत्सर रहेगा। बृहस्पति यदि वृश्चिक राशि में गया हो धन राशि में शनि हो, मंगल शुक्र भी बलवान होकर एक जगह आ गये हों तो प्रायःइस ग्रह चाल में मन्दी के योग होते हैं। ये योग सं० २०१६ वैशाख मास का है वहां व्यापारियों को लाभ देगा। ऐसे योग जब भी जिस सम्वत्सर में आवें मन्दियाँ अवश्य होंगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेजी मन्दी के मुख्य बिषय

देशं-तथाऽच समयं-विविधं च पण्यम्।
स्थानं च मंडलमिति-प्रथितं-हिदेशः॥
मासं-दिनं-बुधवरै वर्षं - त्रिभेदात्।
मूलं-च-धातु-सहितं-तृतीयं हिजीव॥१॥

अर्थ—देश—समय—पण्य ये तीन प्रकार के भेद—विद्वानों ने व्यापारिक वस्तुओं के तेजी मन्दी के जानने की वास्ते रखे हैं, देश में भी अवान्तर भेद प्रदेश (प्रान्त) मण्डल (जिला) स्थान (ग्राम) आदि भेद रखे हैं। मास-वर्ष-दिन ये काल के तीनों भेद रखे हैं धातु मूल-जीव इन तीन भेदो से पण्य भी तीन प्रकार का ही माना गया है, इन भेदों को ध्यान में रखकर व्यापारिक तेजी मन्दी का ज्ञान प्राप्त होता है। कोन वस्तु किस प्रान्त में किस समय में पैदा होती है किन किन प्रान्तों में वह जाती है किस स्थिति में उसका भाव कब कैसा संभव हो सकता है यह विद्वान् दैवज्ञ को खूब विचार का फल कहना चाहिये।

गुरोः संक्रमा द्वर्षमुक्तं-सुधीभिः।
स्तथा-सूर्य-संक्रान्तितःस्याद्धिमासः
दिनं-स्याद्दिने शोदया त्प्रत्यहंतत्।
त्रिधा काल भेदो विचिन्त्यः सुधीभिः॥२॥

अर्थः—बृहस्पति की संक्रान्ति से एक वर्ष की कल्पना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आचार्यों ने बताई है अर्थात जिस समय बृहस्पति ग्रह जिस राशि में प्रवेश करें उसके बाद जितने समय में दूसरी राशि को प्राप्त करेगा उस काल की १ वर्ष संज्ञा होती है इसी प्रकार सूर्य ग्रह जब तक एक राशि पर रहेगा वह एक मास होता है और आज के सूर्योदय से अगले दिन के सूर्योदय तक के समय को एक दिन आचार्यों ने कहा है। इस प्रकार काल के तीन भेद होते हैं।

सुवर्णां त्सकाशात्तथा-मृतिकान्तम् ।
सदा-धातवस्ते तरोश्च तृणान्ता ॥
भवेयुश्च मूलाः नराद्याः सकीटा ।
त्रिधा जीवभेदो विचिन्त्यः सुधीभिः ॥

अर्थः—सोने से लेकर मिट्टी तक भूमि से उत्पन्न होने वाली वस्तुऐ खनिज पदार्थों को धातु कहा गया है, वृक्ष से लेकर तृण पर्यन्त भूमि से उत्पन्न होने वाले सस्त उद्भिज पदार्थो को मूल संज्ञा के नाम से कहा गया है मनुष्य से लेकर कीट पर्यन्त समस्त प्राणियों की कीट संज्ञा है ये तीन प्रकार का पण्य होता है खरीद बेच जो कुछ भी होती है वह-धातु-मूल-और जीव पदार्थो की ही होते हैं।

देशाधिपाः-शनि-तमो गुर वस्त्रयो ऽपि
स्युः केतु-सूर्य-सितका-किल मंडलेशाः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थानाधिपाः क्षिति–सुताबुधयामनीशाः
ज्ञेयो ग्रहोऽपि बलवान्–स सदाधिकारी ॥४॥

अर्थः—देश के स्वामी-राहु-शनि-बृहस्पति में से, मंडल का स्वामि केतु-शुक्र-में से और स्थान का स्वामि चन्द्रमा मंगल बुध में से जो ग्रह बलवान होगा वही क्रमशः देश मंडल तथा स्थान का स्वामी माना जायगा, बलवान, कौन ग्रह है इस की परिभाषा भी स्पष्ट करते हैं।

वर्षाधिपाः शनि तमश्शि खिनो ग्रहाः स्युः।
रिज्यान्विताः, क्षितिज सूर्य बुधाः स शुक्राः॥
मासेश्वराः निगदिताः ननुयो वलीयान्।
चन्द्रः सदा भवति तत्र दिनाधिपश्च ॥५॥

अर्थः—वर्ष के आधिपति ग्रहकेतु–शनि–बृहस्पति ये ही होते हैं इन में से ही वर्षाधिपति ग्रह का चुनाव होता है अर्थात् इन में से जो भी ग्रह बलवान् होगा वही वर्षाधिपति माना जावेगा। इसी प्रकार मासाधिपति ग्रह मंगल बुध सूर्य शुक्र में से चुना जावेगा अर्थात् इन में जो बली होगा वही मासाधिपति बनेगाा यहां इस स्थल में दिनाधिपति सदा चन्द्रमा ही ग्रह रहा करता है।

धात्वाधिपाः - क्षितिज-राहु शनैश्चराः स्युः।
जीवाधिपाः - बुध - शशी-गुर व: प्रशस्ताः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूलाधिपाः - शिखि- सितार्क- मुखाः भवेयुः ।
ज्ञेयो ग्रहोऽति बलवान्- स सदाधिकारी ॥६॥

अर्थः—धातु के स्वामि ग्रह शनि राहु मंगल होते हैं इनमें से ही जो बलवान होता है वही धातु का स्वामि चुना जाता है। जीव के स्वामि–ग्रह–बुध–चन्द्रमा–गुरु–ये माने जाते हैं इनमें से जो ग्रह बलवान होगा वही ग्रह जीवाधिपतिमाना जावेगा इसी प्रकार मूलाधिपति ग्रह केतु शुक्र सूर्य होते हैं इनमें से बली ग्रह ही धिपति चुना जाया करता है।

पुं० संज्ञ का क्षितिजराहु तमोऽर्क गुर वो ।
ज्ञेयाः ग्रहाः शिखियुताः; विबुधैः प्रदिष्टाः ॥
स्त्री संज्ञकौ-सित शशी - शुभदौ-स्वभावात् ।
क्लीबात्मकौ शनि बुधौ -भवतो ऽभिधेयौ ॥७॥

पुरुष संज्ञा वाले-ग्रह-राहु-केतु-सूर्य-बृहस्पति मंगल ये ग्रह होते हैं इनमें जो बलवान होता है वही अधिकारी चुना जाता है। स्त्री संज्ञा वाले ग्रह शुक्र - चन्द्रमा ही दो होते हैं नपुंसक संज्ञा वाले ग्रह-शनि-बुध-माने गये हैं।

श्वेतवर्णौ-शुक्र चन्द्रौ-रक्तौ च-सूर्य भौम कौ ।
पीतवर्णौ-बुध गुरु कृष्णौ-शिखि-शनैश्चरौ ॥८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थः—श्वेत वर्ण के स्वामि ग्रह शुक्र और चन्द्रमा होते हैं लाल वर्ण के स्वामि ग्रह मंगल सूर्य होते हैं पीले वर्ण के स्वामि ग्रह बुध बृहस्पति और काले वर्ण के स्वामि ग्रह केतु और शनि होते हैं राहु भी केतु के साथ ही काले वर्ण का ही होता है इस का नाम तम भी रखा गया है। ऊपर बताये हुवे पुरुष स्त्री नपुंसक संज्ञा के आधार पर-श्वेत वर्णादि संज्ञा के आधार पर जो ग्रह जिस भी संज्ञा में आकर अधिकारी बनेगा। वह यदि वृद्धि को प्राप्त हो रहा है बलवान होता जा रहा है तो विद्वानों को उन वस्तुओं की भी वृद्धि कहनी पड़ेगी, और यदि वह गुरू निर्बल होता जा रहा है तो उस वस्तु की उस वर्ण की हानि कहनी पड़ेगी।

अब यहां ग्रह के बल के आधार पर अधिकारी का चुनाव करने के वास्ते नियम बताते हैं।

अधिकारी निर्वाचन क्षेत्रबलम्

स्वराशौ - खगेशः सदा पाद पूर्णो ।
यदा मित्र राशौ - विपादं बलीयः ॥
समे स्यात्सः राशौ सदा पादमर्धम् ।
ग्रहे शत्रु गेहे भवेत्पादमेकम् ॥६॥
ग्रहो मध्यगश्चे तथैवं बलं स्यात् ।
पुरो वा - च - पश्चा स्थिते न्यूनमेव ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तदा न्यूनता वाऽनुपाताद्विचिन्त्या ।
सदा चिन्त कैर्वा विधि ज्ञैर्गुणज्ञैः ॥१०॥

अर्थः—क्षेत्रबल का अर्थ स्थलबल होता है जब कोई भी ग्रह अपनी राशि में स्थित होता है और उसकी स्थिति ठीक राशि के मध्य में होती है तो सम्पूर्णपाद अर्थात् चार पाद बल-वह देता है, और यदि ग्रह अपने मित्र ग्रह की राशि में स्थित होगा तो एक पाद कम बल रखेगा। अर्थात तीन चौथाई बल क्षेत्रबल वह ग्रह रखेगा। और यदि सम ग्रह की राशि में होगा अर्थात न मित्र और न शत्रु की ही राशि में यदि होगा तो आधा पाद बल रखेगा दो चरण बल वह कहलायेगा। और शत्रु ग्रह की राशि में तो केवल १ चरण ही बल रहता है। यह विद्वानों को समझदारी से ध्यान रखने की वस्तु है कि ठीक राशि के बीच में स्थित होने से ही ये ग्रह उपरोक्त क्षेत्रबल अपना रखते हैं राशि के मध्य से इधर उधर स्थिति ग्रहों की होने से अर्थात न्यूनाधिक स्थिति में त्रैराशिक गणित से अनुपात द्वारा ही बल समझना चाहिये गणित से उसका अनुपात करना चाहिये त्रैराशिक गणित की जानकारी हमारे द्वारा लिखित गणित-मुक्तावली द्वितीय भाग से करें—फिर भी साधारण संकेत यहां करते हैं कि जब ग्रह किसी राशि में जिस क्षण में पहुँचता है चाहे वह मित्र की राशि हो चाहे अपनी राशि का हो चाहे सम-राशि का हो चाहे उच्च का हो, जब भी जिस क्षण में वह किसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशि में प्रवेश करता है उस समय बल शून्य रहता है मध्य में बल पूर्ण होता है आगे पीछे अनुपात करना ठीक है जैसे मेष राशि का मंगल है, ३० अंश की एक राशि होती है १५ अंश मंगल के यदि होंगे तो चार हिस्सा बल चार पाद बल माना जावेगा १५ अंश से पीछेभी अनुपात से आधा तिहाई का जो भी बल जैसी स्थिति में ग्रह जितने अंशोंमें होगा माना जावेगा आगे भी उतना ही घटेगा जैसे ७ अंश में एकचौथाई बल होगा २२ अंश में भी एक चौथाई बल रहेगा यह बात जानने की है। इसी वास्ते अनुपात यहां करना पड़ता है।

वक्रोदये ऽपि समये सति वा व्यतीते ।
अर्धे गते ऽपि समये ग्रहमध्य कालः ॥
तत्र स्थितो गगनगो बहुधा वलीयः ।
स्त्र राशि केन तु वलं पर पूर्वभागे ॥११॥

अर्थ—जितने समय तक ग्रह-वक्री रहता है अथवा उदय को प्राप्त होने पर जब तक उदित रहता है। उसका भी आधा समय बीत जाने पर ही पूर्ण-बल होता है। और उस मध्य काल से जितना आगे पीछे रहेगा वहां भी त्रैराशिक कागणित से ही कमी वेशी वल की जाननी होगी। क्योंकी यह स्पष्ट है कि वक्री अथवा उदय होगे बत अन्त में वक्री का अथवा उदय का बल शून्य ०।० ही रहा करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उच्च वल विचारः

उच्चस्थिते-गगनगे तु- बलं -प्रपूर्णम् ।
नीचस्थिते- भवति - तत्सकलार्धमेव ॥
न्यूनाधिके- दिविचरे-भवतीह शश्वत् ।
त्रैराशि केन-विधिना-विबुधै र्विचित्यम् ॥११॥

अर्थ—जब ग्रह अपनी परम उच्च राशि पर होता है तो वह पूर्ण वाली होने से उस का बल भी पूर्ण होता है जब वह अपनी नीच राशि में होता है तो वल भी ग्रह का आधा रह जाता है। और इन दोनों के बीच में यदि कहीं भी ग्रह हो तो उसका बल त्रै राशिक गणित से ही निकालना चाहिये।

इत्थं -विचिन्त्य सुधिया सुबलं ग्रहाणाम् ।
देशादि मन्डल पृथक् वर्णाधिपानाम् ॥
वेधादि - चिन्तन - विधौ - समशत्रु मित्र -
ज्ञाना त्सदा बुध वरैः प्रविचिन्त नीयम् ॥१२॥

अर्थः—इस प्रकार विद्वानों को ग्रहों का बल देश- मण्डल वर्ण आदि के स्वामियों का चिन्तन करके - सम शत्रु -मित्र की जाकारी करके वल विचार करना चाहिये। यहां यह भी विचार अर्थ से समझ लेना चाहिये कि देश मण्डलादिका वेध कर्ता ग्रह शुभ है तो शुभ फल देगा मन्दी कारक रहेगा - स्वामी स्वयं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वेध कर्ता हो और वेध करने वाले ग्रह के साथ मित्रता रखता हो तो पोना, सम हो तो आधा, शत्रु हो तो चौथाई फल देता है। जैसा कि अन्यआचार्यो का मत है कि:—

स्वमित्र–सम शत्रूणां–वेधे राश्यादिषु क्रमात्
शुभ ग्रहः शुभंधत्ते चतु स्त्रि द्वयेकपादकैः ॥१३
स्वमित्र–सम शत्रूणां वेधे देशादिषु क्रमात्
शून्यं–दुष्ट-ग्रहः कूर्यादेक द्वि त्रिचुष्पदैः १४

अर्थः—देश एवं मण्डलादिकों का वेध कर्ता ग्रह यदि शुभ होगा तो इसी क्रम से वह शुभ फल देगा, स्वय यदि स्वामि ग्रह ही वेध कर्ता हो वा पूर्ण, वेध कर्ता का मित्र हो तो पौना फल और यदि सम हो तो चौथाई फल करता है यदि वेध कर्ता ग्रह अशुभ ग्रह हो तो अशुभ फल देता है स्वामि यदि स्वयं वेध कर्ता हो तो चौथाई, वेध कर्ता का मित्र हो तो आधा फल करता है सम होने से पौन और शत्रु होने से शून्य फल करता है।

दृष्टि के आधारपर वेध फल

विद्धो–ग्रहो भवति पूर्ण दृशा –ऽपि पश्यन्।
पूर्णं ददाति हि-फलं सुहृदादि कत्वे॥
दृष्टे तु पाद रहिते त्रिद्वयेक भेदात्।
चिन्त्यं फलं बुध वरै विर्पणौ समस्तम ॥१५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थ-अपनी पूर्ण दृष्टिसे जब ग्रह दूसरे ग्रह को देखेगा तो वह पूर्ण वेध कहलावेगा-वेध कर्ता ग्रह जिस किसी वर्ण अथवा ग्रह को अथवा राशि को पूर्ण दृष्टि से देखेतो मित्र सम शत्रु के हिसाब से पाद क्रम से तीन-दो एक आदि पाद फल जो हमने पहले बता दिया है उस क्रम से ही फल जानना चाहिये। पूर्ण दृष्टि के अभाव से ही पाद भेद बनेंगे जैसा कि चक्र से ज्ञात होता है

वेध दृष्टि वशात् वश्वा फल ज्ञानम्

	शुभ ग्रहाः				पाप ग्रहाः			
दृष्टि ज्ञानम्	स्वामि	मित्र	सम	शत्रु	स्वामी	मित्र	सम	शत्रु
पूर्ण दृष्टि	२० ०	१० ०	१० ०	५ ०	५ ०	१० ०	१५ ०	२० ०
पादत्रये	१५	११ १५	७ ४०	३ ४५	३ ४५	७ ३०	११ ४५	१५ ०
पादद्वये	१० ०	७ ३०	५ ०	२ ३०	२ ३०	५ ०	७ ३०	१५ ०
एकपादे	५ ०	३ ४५	२ ३०	१ १५	१ १५	२ ३०	३ ४५	५ ०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दृष्टि ज्ञापकं पद्यम्

तृतीये तथा कर्म गे राशि पादम् ।
नवे पञ्चमे स्याद्विपादं ग्रहाणाम् ॥
चतुर्थे ऽष्टमे स्यात्तृतीये चपादे ।
समे सप्तमे पूर्ण दृष्टि ग्रहाणाम् ॥ १६ ॥

नबे पञ्चमे स्थानगे पूर्ण दृष्टि : ।
गुरो : स्यातृतीये तथा कर्म गे च
शने : पूर्ण दृष्टि : कुजस्यापि ज्ञेयाः
चतुर्थेऽष्टमे-वा बुधैः कोविदैश्च ।

अर्थ-मेषादि बारह राशियों में स्थित सूर्यादि ग्रहों की अपने राशि स्थान से ३ ।१० तीसरे दशवे स्थान को एक पाद दृष्टि होती है, ५। ९ पाचवे नवमें स्थान को द्विपाद दृष्टि से ग्रह देखते हैं ४। ८ चौथे आठवे स्थान को द्वियाद दृष्टि से ग्रह देखते है ९।५ नवमे पांचवे स्थान को बृहस्पति ग्रह पूर्ण दृष्टि से देखता है ३।१० तीसरे दशवे स्थान को शनि ग्रह पूर्ण दृष्टि से देखता है, ४।८चौथे आठवें स्थान को मंगल ग्रह पूर्ण दृस्टि से देखता है इस प्रकार ग्रहों की दृष्टि का यह क्रम है,

———

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह दृष्टि पाद व्यवस्था

दृष्टि	सूर्य	चन्द्र	मौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
एक पाद दृष्टि	३ / १०	३ / १०	३ / १०	३ / १०	३ / १०	३ / १०	३ / १०	३ / १०	३ / १०
द्वि० पाद दृष्टि	५ / ६	५ / ६	५ / ६	५ / ६	५ / ६	५ / ६	५ / ६	५ / ६	५ / ६
त्रि० पाद दृष्टि	४ / ८	४ / ८	४ / ८	४ / ८	४ / ८	४ / ८	४ / ७	४ / ८	४ / ८
पूर्ण पाद दृष्टि	७	७	४ / ७ / ८	७	५ / ६ / ७	७	३ / १० / ७	७	७

ग्रहाः वेधिताः ये – स्वराद्याश्चवर्णाः ।
शुभै र्वाऽ शुभै र्यैः ग्रहैः राशि-बलयाः ॥
सदा - दृष्टि-वेद्याः-शुभा - वेध कर्तुः ।
स्वरादौ-तदा-वर्ण-तिथ्यादि केषु ॥१८॥

अर्थः—ये ग्रह अथवा वर्ण-अथवा स्वारादि तथा राशियाँ जिन शुभ अशुभ ग्रहों द्वारा देखी जाती हो उन वर्णों-राशियों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के जो भी ग्रह स्वामी हो उन पर अथवा वर्ण तथा राशियों पर वेध कर्ता ग्रह की जो दृष्टि होती है वही दृष्टि वर्ण स्वरादि तिथ्यादि तथा राश्यादियों पर भी मानी जाती हैं अर्थात स्वर वर्ण तिथि राशियां भी वेधित मानी जती हैं। अशुभ ग्रह अथवा शुभ ग्रह शुक्ल पक्ष में वेध करता है तो पूर्ण फल देता है। कृष्ण पक्ष में आधा फल रह जाता है।

स्वांशेऽपि पूर्ण-सफला-हि खगस्यदृष्टिः।
शुक्ले-तिथिः प्रकुरुते हि फलं प्रपूर्णम्।
कृष्णे फलं-भवति-वाऽत्र दलं - सुदृष्टः।
वेधे-फलं शुभमयं किल दृष्टि सत्वात् ॥१६॥

अर्थः—जिस ग्रह की अपने नवांश पर पूर्ण दृष्टि पड़ती हो तो वह उत्तम मानी जाती है, राशियों पर जैसे पाद क्रम से कमती बढ़ती दृष्टि होती है वैसे ही नवाँश राशियों पर भी कमती बढ़ती दृष्टि बनती है परन्तु जिस नवांश राशि का स्वामि दृष्टि करता हो और उसकी दृष्टि पाद क्रम से न्यून आकर पड़े तो वहां स्व नवांश का होने पर पूर्ण दृष्टि हो जाती है। शुक्ल पक्ष की तिथि पर यदि वेध करता ग्रह की पूर्ण दृष्टि हो तो फल पूर्ण होता है और यदि कृष्ण पक्ष की तिथि पर दृष्टि पड़े तो वह आधा फल देने वाली होती है शुभ फल जो भी होता है वह वेध दृष्टि से ही होता है।

जितनी पाद दृष्टि ग्रह की होगी उतने ही पाद वेध फल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जानना चाहिये ।

दृष्टि हीनात्फलं नास्ति ।
शुभं वा ऽशुभं क्वचित् ॥
पूर्ण दृष्टेः – फलं पूर्ण –
स्वांशे वाऽपि चपूर्णं कम् ॥२०॥

र्थअ साफ है यदि दृष्टि नही है तो फल भी नही होगा चाहे ग्रह शुभ हो चाहे अशुभ पूर्ण दृष्टि से फल भी पूर्ण होगा वर्गों तम नवांश में तो फल पूर्ण होता ही है शुभ ग्रह से शुभ फल अशुभ ग्रह से अशुभ फल समझना चाहिये ।

विश्वा वल निर्णय

सौम्यश्च पश्यति-दृशा किल वेद-विश्वात् ।
पापोऽपि पञ्च-समतान्ननु-विश्व भेदात ॥
वर्ण स्वरादि-तिथि-भेषु-यदा च दृष्टिः-
राश्यादि केषु चतथा-वल निर्णयः स्यात् ॥२१॥

अर्थः—शुभ ग्रह पांच होते हैं विंशोपक बल २०संख्या के होते हैं एक शुभ ग्रह के हिस्से में ४ विश्वा बल आता है पाप ग्रह चार होते हैं उनके हिस्से में पांच विश्वा बल आता है, व पूर्ण स्वर तिथि नक्षत्र राशि इन पांचों में से जिसनों को वेध कर्ता ग्रह वेधेगा उसकी जितनी भी पाद दृष्टि के अनुपात से वेध फल विश्वों में समझना चाहिये ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दृष्टि वशतः विश्वाज्ञनम्

तिथि-स्वर-वर्ण तत्त्वत्र-राशि-पञ्चकम्

दृष्टि ज्ञानम्	शुभ ग्रहः					पाप ग्रहः				
	एक	द्वि	त्रीवी	चत्वार	पञ्च	एक	द्वी	त्रीवी	चत्वारः	पञ्च
पूर्ण दृष्टि	१ ०	२ ०	३ ०	४ ०	५ ०	० ४८	१ ३६	२ २४	३ १२	४ ०
पादत्रये	० ४५	१ ३०	२ १५	३ ०	३ ४५	० ३६	१ १२	१ ४८	२ १८	३ ०
द्वयेपाद	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	० २४	० ४८	१ १२	१ ३६	२ ०
एकपादे	० १५	० ३०	० ४५	१ ०	१ १५	० १२	० २४	० ३६	० ४८	१ ०

शुभा शुभ ग्रहों के एक साथ सम्बंध में निर्णय

यत्र योगे - गताः सौम्याः ।
पापाः वा युग पत्स्थिताः ॥
अन्यो न्य शोधना त्तत्र ।
शेषं ज्ञेयं शुभाशुभम् ॥२२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थः—जिस प्रकार से एक साथ शुभ और अशुभ ग्रहों की उपलब्धि हो तो दोनों प्रकार के ही ग्रहों के विश्वेवल प्राप्त करने चाहिये तब उन का परस्पर अन्तर करना चाहिये उस अन्तर से बचे हुवे विश्वे यदि शुभ ग्रह के हों तो शुभ फल जानना चाहिये, अशुभ ग्रह के हों तो अशुभ फल जानना चाहिये।

विंशोपक से तेजी मन्दी ज्ञान विचार

विज्ञपाठकों ने यहाँ विंशोपक बल का जो भी ज्ञानप्राप्त किया है उस के आधार पर तेजी मन्दी के विचार को स्पष्ट रूप से यहाँ प्रकाशित करते हैं।

(१) जिस किसी वस्तु को १ वर्ष के वास्ते यह जानना हो कि इस मास में उस वस्तु का भाव कैसा वर्ष में रहेगा घटेगा अथवा बढ़ेगा।

(२) जिस किसी वस्तु को १ वर्ष के वास्ते यह जानना हो कि इस मास में उस वस्तु का भाव कैसा मास में रहेगा घटेगा यबढ़ेगा।

(३) जिस किसी वस्तु का १ दिन में यह जानना हो कि इस दिन में उस वस्तु का भाव कैसा दिन में रहेगा घटेगा या बढ़ेगा, इस जानकारी के वास्ते विंशोपक बल आप को बहुत मदद देगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्दी तेजी की परिभाषा

(१) २० से अधिक विश्वे जब वस्तु के बढ़ेंगे तो मन्दी जानना।

(२) २० से कम विश्वे होते जावेगें तो तेजी जानना।

वर्ष की तेजी मन्दी

विज्ञपाठकों को स्मरण होगा कि वर्ष का आरम्भ बृहस्पति ग्रह के एक राशि में प्रवेश के समय से आरम्भ होता है अतः जब भी बृहस्पति ग्रह जिस समय जिस राशि में प्रविष्ठ हो उस समय २० विश्वे की कल्पना करो उसके बीस भाग करके एक भाग का एक विश्वा मानो, और उस समय बृहस्पति के राशि प्रवेश काल में जिस वस्तु का जो भाव हो उसे भी निश्चय भाव समझो।

बृहस्पति के प्रवेश काल में समय जिस राशि पर बृहस्पति प्रवेश कर रहा है वहां उस राशि पर पूर्व क्रम से प्राप्त जो शेष विश्वे हैं शुभ ग्रहों के विश्वों की २० विश्वों में मिला देना चाहिये और पाप ग्रहों के जो विश्वे प्राप्त हो उन्हें घटा देना चाहिये।

ऐसा करने से २० से जितने अधिक हों उतने विश्वे वस्तु मन्दी और निकलने पर २० सें जितने कम पड़े उतने विश्वे वस्तु तेज जाननी चाहिये वर्तमान भावों से तेजी निर्णय के आखीर समय तक अर्थात् बृहस्पति की दुसरी राशि के प्रवेश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काल तक तेजी अथवा मन्दी जाननी चाहिये। क्योंकि वस्तु के विश्वों के बढ़ने सें वस्तु की वृद्धि होती है परिणाम मन्दी का बना करता है, वस्तु के विश्वे घटने पर वस्तु की हानि और मूल्य की वृद्धि हुवा करती है। परिणाम तेजी का हुवा करता है।

(२) संक्राति जिस दिन सूर्य की लगे उससें अगली संक्रान्ति तक एक मास की तेजी मन्दी जानने के वास्ते भी यही ध्यान रखना पड़ेगा कि जिस समय संक्रान्ति लगी है उस समय जिस वस्तु का जो भाव है उस समय संक्रमण काल में किस ग्रह की कैसी दृष्टि है शुभग्रहों की कितनी है अशुभग्रहों की कितनी है कितने विश्वे बल घटता अथवा कितने निश्वेबल बढ़ता है यह विचारना पड़ेगा तब आपको तेजी मन्दी का ज्ञान सुलभ हो जावेगा।

(३) इसी प्रकार सूर्योदय के समय से जिन ग्रहों का बेध जिस प्रकार का हो विश्वेबल निकाल कर दैनिक तेजी मन्दी को समझना चाहिये।

नोटः—"व्यापार विज्ञान" द्वितीय भाग में उदहारण से भी विज्ञ पाठक इस विषयको ध्यान से आगे समझ सकेंगे।

त्रिधा-पण्य- भेदास्तथार्घाश्चतुर्धाः।
यथा-सेतिका-मानतः सख्यावा।
सदा - मापकेन - समर्घ - महर्घम्।
तदा - कोविंदैः बुद्धितो वेदनीयम् ॥२८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थः—तीन प्रकार के तो भेद पण्य के बताये गये हैं और अर्थ के चार प्रकार के भेद होते हैं कोई वस्तु पण्य के आधार पर खरीदी बेची जाती हैं। कोई तोल से और कोई किसी की ले वेच संख्या से वदले में ही चलती है भाव और मूल्य के दो भेदों से ही खरीद वेच चलती है, जब देशकाल की स्थिति से किसी वस्तु की कमी पर उसकी मांग बढ़ती है तो कीमत बढ़ने से तेजी, जब वस्तु की वहुतायत से दाम कम हों तो सस्तापन होता है।

तेजी मन्दी की स्थिति

सदा–देश - कालन्तथा वस्तुनोवा।
भ वेधात्सदा-सौम्य-पा पाद्विचिन्त्यम् ॥
सदा-सौम्य - वेधे-समर्घ त्वमुक्तम्।
महर्घ- सदापाप वेधा-द्विचार्यम् ॥२६॥

अर्थः—देश-तथा-काल एवं वस्तु इन तीनों बातों को ध्यान में रख कर नक्षत्रों के आधार पर ग्रहों के वेध से तेजी मन्दी विचारनी चाहिये वहाँ सौम्य ग्रहों के द्वारा नक्षत्र और ग्रहों का वेध होने पर मन्दी और पापग्रहों द्वारा नक्षत्र वेध से अथवा ग्रह वेध से तेजी विचारी जाया करती है।

किस नक्षत्र के वेध से किस देश में क्या प्रभाव किस वस्तु पर पड़ेगा यह विचार स्पष्ट करते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदा - कृत्तिका - वेधिताः स्या च्छुभैश्च ।
तिला तण्डुला - धातवः स्युः सर्मघाः
व्यतीते सदा वाष्टमासे यमोयाम् ।
महर्घानि - रत्नानि - पापैश्चवेधात् ॥३०॥

अर्थ—कृति का से गणना ग्रहों की दशा ओं की भी होती है वेध की भी व्यवस्था कृति का नक्षत्र से ही चलती है। पाप ग्रहों का वेध तेजी कारक होता है। शुभ ग्रहों का वेध यदि कृतिका पर होगा तो चावल, जौ, मटरा, मणि, सोना, चांदी आदि धातु-हीरा पन्ना-पुखराज आदि रत्न - तिल तेल सभी उपरोक्त जिन्सें दक्षिण प्रान्तों में आठवे महीने में जाकर तेजी होतीं हैं पापग्रहो के वेध से जब भी वेध होता है तभी तेज हो जाती हैं।

रोहिण्याः वेध योगाच्च ।
रसाः धान्याश्च धातवो ॥
वस्त्राणि - चा सप्तदिनं ।
फलदानिं भवन्ति प्राग् ॥३१॥

जब रोहिणी नक्षत्र पर शुभ ग्रह अथवा पापग्रहों का वेध होगा तो सात ही दिन के अन्दर मन्दी अथवा तेज पूर्व दिशा में होती है

मृग शीर्षे-गताः गावोः सर्वत्र चतुष्पदः
मास द्वयेतु-लाद्याद्याः भवेयुः फलदायकाः ॥३२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मृगशिरा नक्षत्र पर - शुभ ग्रहों का वेध सब दिशाओं में पशुओं में मन्दी कारक पाप ग्रहों का वेध तेजी कारक जानना चाहिये। लाख तथा द्रवित पदार्थों में भी इस का प्रभाव जानना चाहिये।

आर्द्रायां-पश्चिमेज्ञेयाः सर्व-क्षाररसादयः।
तैलाधाः मासमेकंतु पश्चिमे च फलप्रदाः ॥३३॥

आर्द्रा-नक्षत्र में वेध के सम्बन्ध से लवण - क्षार - रसादि पदार्थ तेलादि वस्तुयें सभी १ मास में पश्चिम दिशा में फल-दायक होती हैं। शुभग्रहों के वेध से मन्दी और पापग्रहों के वेध से तेजी जाननी चाहिये।

पुनर्वसोः धात वावो धान्याः कापी सं स सूत्रकाः।
रसाःषष्टि दिनं यावत्-फलदा-चोतरे दिशि ॥३४॥

पुनर्व सु के वेध में - धान्य धातु सूत्र कपास रुई - पाट वारदाना रसादि पदार्थ ६० दिन में उत्तर दिशा में फल देते हैं।

पुष्यस्थे - स्वर्ण - रसं - धान्यं।
तैलाः हिंग्वादि सार्जिकाः ॥
फलदाः वाऽष्टमे मासे।
भवे युश्चो तरे दिशि ॥३५॥

पुष्य नक्षत्र के वेध में सोना चाँदी रसादि पदार्थ - धान्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तैल - हींग - सज्जी - सरसों नमक क्षार आदि वस्तुऐं आठवें मास में उत्तर दिशा में फल देने वाली होती हैं।

(३६) इसी प्रकार श्लेशा के वेध में १ मास में ही पश्चिम दिशा में खाण्ड - गुड़ - शक्कर - धान्य - चावल - मिर्च - सौठ पीपल मजीठ आदि जिन्से फल देने वाली होती है शुभग्रहों के बेधने से मन्दीयां पापग्रहों के बेध से तेजियां जाननी चाहिये।

(३७) मघा नक्षत्र के वेध से ८ महिने में दक्षिण दिशा में फल व्यापारिक जिन्सों में होता है।

(३८) पूर्वा फालगुनी के वेध से भी अन्न कम्बल तिल तेल ऊनीसूती वस्त्र धान्यादि ८ मास में ही दक्षिण दिशामें फल करते हैं

(३९) उतरा फालगुनी में २ मास में उत्तर दिशा में फल व्यापारिक जिन्सों में बनता है।

(४०) हस्त नक्षत्र के वेध से कराने की वस्तुओं में ही केवल २ मास में उत्तर दिशा में फल बनता है। शुभ ग्रहों के वेध में मन्दा पाप ग्रहों के वेध में तेजी होती है।

(४१) चित्रा के वेध में भी धातुओं में और चौपायों में २ मास में उत्तर दिशा में फल होता है।

(४२) स्वाती में भी किराने में ७ दिन में उत्तर दिशा में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फल जानना चाहिये ।

(४३) स्वाति नक्षत्र में तुला राशि का नक्षत्र होने से समस्त किराने की वस्तुओं में उसका प्रभाव बना करता है ।

(४३) विशाखा में धान्यों में केवल ८ मास में दक्षिण दिशा में फल होता है ।

(४४) अनुराधा में धान्य मात्र में सात दिन में पूर्व दिशा में फल जानना चाहिये ।

(४५) ज्येष्ठा में गुग्गुल-लाख-चपड़ा-कपूर - पारा-हींग काँसी में ७दिन में पूर्व दिशा में शुभ ग्रहों से मन्दापन और पाप ग्रहों से तेजीयाँ बनती हैं ।

(४६) मूल के वेध से १ मास में पश्चिम दिशा में धान्यों में रसों में सूतों में फल बनता है ।

(४७) पूर्वाषाढ़ में पश्चिम दिशा में १ मास में व्यापारिक जिन्सो में फल बनता है ।

(४८) उत्तरा षाढ़ा में चोपायो में धातुओं में रसादि पदार्थो में ७ दिन में पूर्वदिशा में फल होता है।

(४९) अभिजित् में - सुपारी - इलायची - जायफल - सौंठ आदि किराने में सात दिन में किराने में फल जानना।

(५०) श्रवण में भी किराने में पूर्व दिशा में सात दिन में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फल जानना।

(५१) धनिष्ठा में धातु मणि आदि को में ही पूर्व दिशा में सात दिन में फल होता है।

(५२) शतभिषा में आंवला - छाल - सुपारी तथा वृक्षों की मूल - मद्य तथा-तेलो में १ मास में पश्चिम दिशा में फल होता है।

(५३) पूर्वा भाद्रपदा में किराना धातु - तथा धान्य सभी औषधियों में दक्षिण दिशा में आठ मास नें फल होता है

(५४) उतरा भाद्रपदा में - धान्य - गुड़ - शक्कर सरसों आदि तिलहन खली चावल – घृत -धातु – आदि १ मास में पश्चिम दिशा में फल देती हैं।

(५५) रेवती के वेध में किराने की वस्तुओ में २ मास में उत्तर दिशा में फल बनता है।

(५६) अश्विनी में चोपायों में घासादि में धान्यों में २ मास उत्तर दिशा में फल होता है।

(५७) भरणी में तुषधान्य मिरचें किराने की वस्तुऐ आठ मास में दक्षिण दिशा में फल देती है।

पञ्चक से तेजी मन्दी के विचार

पञ्चक— धनिष्ठा नक्षत्र के आधा भाग बीतने पर (अर्थात उत्तरार्ध से प्रारम्भ होता हैं। पञ्चक नक्षत्र आधा धनिष्ठा,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१ शतभिषा, १ पूर्वाभाद्रपद, १ उत्तराभाद्रपदा, १ रेवती ।

पञ्चक के प्रथम अढाई दिन में मन्दी किसी वस्तु में तेजी हो तो पिछले अढाई दिन मे मन्दी आवे ।

पञ्चक के पहले अढाई दिन में यदि मन्दी आवे तो—पिछले अढाई दिन में तेजी आवे ।

पञ्चक गुरु या शुक्रवार का आरम्भ हो तो—तेजी कारक होता है ।

पञ्चक रवि, सोम, बुध तथा शनिवार को प्रारम्भ हो तो—मन्दी कारक होता है ।

पञ्चक में मङ्गलवार को तेजी हो तो शनिवार को भी तेजी हो ।

पञ्चक में शनिवार को तेजी हो तो मङ्गल को भी तेजी हो ।

पञ्चक के प्रारम्भ से पञ्चक की समाप्ति पर्यन्त यदि किसी वस्तु में तेजी रही हो तो वह तेजी एक मास पर्यन्त रहे, यदि मन्दी रही हो तो एक मास तक मन्दी रहे ।

पञ्चक के बाद दूसरे मास के अन्दर के पञ्चक तक जो शुक्रवार आवे उस दिन पञ्चक में आई हुई तेजी या मन्दी जो भी बने तो वह बुधवार तक रहा करती है ।

अशुद्धि पत्र तथा पृष्ठ १ से लेकर १८४ पृष्ठ तक श्री महिप्रकाश शर्मा द्वारा जनता प्रिंटिंग प्रैस खुरजा में मुद्रित ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खग्रास ग्रहण की स्थिति का विवेचन

भानोर्बिम्बं पृथुत्त्वादपृथु पृथिव्याः प्रभाहि सूच्यग्रा ।
दीर्घतया शशि कक्षा मतीत्य दूरं बहिर्याता ॥

इस प्रमाण से यह स्पष्ट है कि सूर्य की किरणें चन्द्रमा की कक्षा को भी पार करके आगे को चली जाती हैं और सूच्याकार में आगे जाकर एक जगह मिल जाया करती है और उस स्थल में पृथ्वी की छाया से चन्द्रमा का बिम्ब आच्छादित हो जाने पर ग्रहण होता है जब अपनी कक्षाओं में चन्द्रमा और सूर्य चलते हुए ६ राशियों के अन्तर पर होते हैं, अपनी गति से पूर्व की ओर चलता हुआ चन्द्रमा जब भूमि की छाया में प्रविष्ट होता है तो एक सीध में तीनों कक्षाओं के पड़ जाने से चन्द्रमा को भूमि की छाया ढक लेती है।

चन्द्रमा के ग्रास की स्थिति कब रहती है कब नहीं रहती। कब खग्रास होता है इसका परिलेख भी विज्ञपाठकों के सामने उपस्थित कर रहे हैं यह चित्र ग्रहण का जो हम नीचे दिखा रहे हैं यह पहिले भी प्रसंग वश छापा जा चुका है।

भूभा से चान्द्रमा का पूर्व में स्पर्श और पश्चिम में मोक्ष होता है। सूर्य के ग्रहण में इसके विपरीत होता है जैसा कि भास्कराचार्य ने कहा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पश्चाद्भागाज्जलदवदधः संस्थितोऽभ्येत्यचन्द्रो ।
भानोर्बिम्बं स्फुरदसितया छादयत्यात्म मूर्त्या ।
पश्चात्स्पर्शो हरिदिशि ततो मुक्तिरस्यातएव,
क्वापिच्छन्नः क्वचिदपिहितो नैषकक्षान्तरत्वात् ॥१॥

सूर्य की कक्षा से नीचे चन्द्रमा की कक्षा है। जैसे मेघ नीचे में पश्चिम दिशा से आकर सूर्य को ढक लेते हैं। उसी प्रकार चन्द्रमा भी शीघ्र गति द्वारा पश्चिम भाग से आकर सूर्य के नीचे आजाने से ढकने में आजाता है और अमावस्या में १ राशि में एक सूत्र में ऊपर नीचे हो जाने से सूर्य ढका हुआ होने से सूर्य ग्रहण के रूप में हो जाता है तभी तो सूर्य बिम्ब को चन्द्रमा का बिम्ब आच्छादित अरता है तो सूर्य ग्रहण का होना लिखा गया है।

अतः पश्चिम दिशा में सूर्य के ग्रहण का स्पर्श, पूर्व दिशा में मोक्ष हुआ करता है, इसी वास्ते कक्षा भेद से कहीं सूर्य ढका हुआ दिखाई देता है कहीं नहीं भी दिखाई देता है, जैसे सूर्य से नीचे बादल आजाने पर कहीं के मनुष्य तो सूर्य को देखते हैं कहीं के मनुष्य बादल के बीच में आजाने से सूर्य को नहीं देख पाते हैं।

इसी प्रकार जब भूमि की छाया से चन्द्रमा का बिम्ब पूरा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ढकने में आ जाता है तो खग्रास चन्द्र ग्रहण होता है, सूर्य बिम्ब

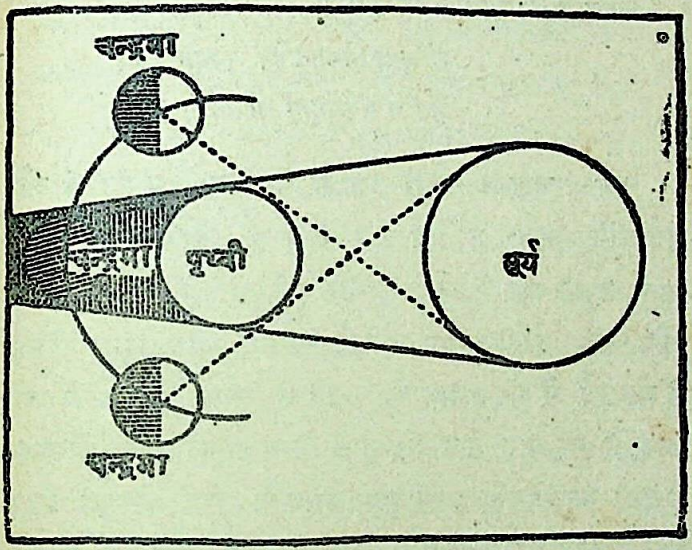

भूमा बिम्ब चन्द्रमा के बिम्ब तीनों की स्पर्श रेखायें सूच्याकार में एक सीध में आजाने पर खग्रास का स्थल होता है, ग्रास का मान रहने की अवस्था में ऊपर नीचे चन्द्रमा के बिम्ब अपनी कक्षाओं में रहते हैं सूर्य बिम्ब के भूमि बिम्ब की छाया उन के अन्तर्गत रहती है जितनी अन्तर्गत रहती है उतना ही ग्रास का प्रमाण बना रहा करता है अतः छाया चन्द्रमा विम्ब को छादक भूभाबिम्ब जब पूरा २ ही ढक लेगा तब खग्रास चन्द्रमा का ग्रहण होता है।

भास्कराचार्य ने खग्रास चन्द्रग्रहणों के विषय में लिखा है कि:—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यच्छाद्य संछादक मण्डलैक्य ।
खण्डं शरोनं स्थगित प्रमाणम् ॥
तच्छाद्य बिम्बादधिकं यदास्यात् ।
ज्ञेयं च सर्वग्रहणं तदा नीम् ॥२॥

अर्थ— चन्द्रमा अपनी कक्षा में विमन्डल में घूमता है और सूर्य क्रांति मण्डल में, सूर्य से ६ राशि के फर्क से पृथ्वी की छाया अपनी कक्षा में रहती है और पूर्णिमासी में भूमि की छाया और चन्द्रमा दोनों समान रहते हैं, चन्द्रमा और भूभा बिम्बों के योगार्ध में शर प्रमाण को घटाने से व्यास का प्रमाण आ जाता है, वह ग्रास जब चन्द्रमा के बिम्ब से भी अधिक हो जाता है तभी खग्रास चन्द्र ग्रहण हुआ करता है, जिसे सम्पूर्ण ग्रहण कहा जाता है इस अवस्था में भूमि की छाया चन्द्रमा को पूरा २ ढक लेती है, तब खग्रास ग्रहण हो जाता है, यह प्रसंगवश ग्रहण की खगोलीय विशेषता इस वास्ते बताई गई है कि गुण-ग्राही विज्ञपाठकों को इससे कुछ ज्ञान विज्ञान की भी उपलब्धि होती चले, विज्ञान ज्योतिः का प्रकाशन विज्ञान पर प्रकाश डालते हुये खगोलीय विज्ञान को प्रकाश में लाते हुवे ही, ज्यौतिषागम द्वारा व्यापार पर उसके प्रभाव और फल को बताने के उद्देश्य को भी लिए हुवे है, यह खगोलीय गणितागम की वस्तु का विवेचन है, चन्द्रमा के ग्रहण में पौराणिक लोग राहु का चन्द्रमा को ढकना अथवा डसना जो बताते हैं यह पौराणिक सिद्धांत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ही है जैसा कि भास्कराचार्य ने कहा है—

दिग्देश कालावरणादि भेदाच्च छादको राहुरिति ब्रुवन्ति ।
यन्मानिनः केवलगोलविद्यास्तत् संहिता वेदपुराणबाह्यम् ॥३॥
राहुः कुभामण्डलगः शशांकं शशांक गश्छादयतीन बिम्बम् ।
तमोमयः शंभुवर प्रदानात् सर्वागमानामविरुद्ध मेतत् ॥४॥

अर्थात राहु के विषय में छादक होने की कल्पना जो पुराणों में बताई गई है। वह वास्तव में वेदपुराण और संहिता मतानुसार गणित और खगोल के साथ भी मेल इस वास्ते अपना बना लेती है कि 'तमस्तुराहुः स्वर्भानुः' कोषा गम मे राहु अन्धकार का ही नाम है भूमि की छाया भी तो अन्धकार ही रूप है भूमि छाया को ही राहु कहना चाहिये जब भूमि को छाया गणित सिद्धांत से चन्द्रमा को आच्छादित करेगी तो राहु ने ही चन्द्रमा को आच्छादित किया। यह विषय ही यदि माना जाय तो दो प्रकार के मत भेद अपना मतैक्य ही स्थापित कर ले जाते हैं। अतः राहु पृथ्वी की छाया है अथ ा राहु भूमि मण्डल में छाया रूप में प्रष्टि है और इस तरीके से चन्द्रमा को ढकता है। तब राहु द्वारा चन्द्रमा का ग्रहण हुआ तो समस्त आगम पुराण खगोल एवं गणित के मतों में मत भेद न रहने से एक वाक्यता हो जाती है। क्योंकि ग्रहण के समय में दान-हवन-पूजन अर्चन गंगा स्नान किये जाते हैं गायत्री मन्त्र का हवन होता है इसमें क्या वैज्ञानिक रहस्य है। यदि इस विषय पर प्रकाश डालूंगा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो मेरा लेख बढ़ जायगा मुझे अभी व्यापार पर बहुत विषय बताना बाकी है। मुझे तो छपाई में खास व्यापारिक विषय देने पड़ते हैं। व्यापारियों के चांसों पर ही प्रकाश डालना है जिससे उन्हें कुछ लाभ हो। अतः मुझे कलेवर ज्यादा बढ़ाना नहीं है मुझे तो गागर में ही सागर भरने का ख्याल रखना है।

मेषादि राशियों में मङ्गल का फल

मेषे-स्थितः-क्षिति-सुतश्च-सुभिक्षकारी ।
माँद्यं-तनोति-नियतं-किल-धान्यकेषु ॥
धात्वादिकं-रस कपास-शणं-महर्घम् ।
क्षोभान्विताः-नृपतयो-जनविग्रहोऽपि ॥१॥

अर्थ—जब मेष राशि में मंगल जाता है तो वह सुभिक्षकारी होता है सातों धान्यों में उस समय मन्दियां होती हैं परन्तु समस्त धातुऐं तथा रसादि पदार्थ, रुई, कपास, पाट, वारदाने में तेजी होती है राजाओं में क्षोभ एवं क्रोध बढ़ता है जनता में भी विग्रह हो जाता है।

महीजेवृषे-स्याच्च-धान्यं-महर्घम् ।
सदा-चन्दनं-कुंकुमं-वस्त्र-पट्टम् ॥
कपासं-स-तैल-तथा-धातवोऽपि ।
शुभैः-संयुते-न्यूनमेवं—महर्घम् ।२।

अर्थ—जबकि मंगल ग्रह वृष राशि में होता है तथा लाल,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्दन, रोली, लाल वस्तुऐं, लाल वस्त्र, तथा पाट, वारदाना, बोरे कपास, तेल तथा सोना, चांदी, तांबा, जस्ता आदि धातुऐं शेयर्स आदि में तेजियां आती हैं शुभ ग्रहों के योग से कुछ तेजी कम पड़ जाया करती है। पाप ग्रहों के योग से तेजी अच्छी भी बन जाती है यह अर्थ से ही विचारना चाहिये।

मिथुनगश्च-यदा-धरणी-सुतः।
प्रबल-वृष्टिकरो-भुविमण्डले॥
शुभखगैश्चयुतोबहु—सौख्यदो।
बहु-महर्घ--करोऽशुभसंयुतः॥३॥

अर्थ—जब मिथुन राशिमें मंगल ग्रह होता है तो वर्षा कारक हुआ करता है शुभ ग्रहों के संयोग से मन्दी कारक होता है पाप ग्रहों के योग से तेजियां करता है लाल वस्तुओं में अच्छी तेजियां होती हैं।

महीजो-यदा-कर्क-राशौ-गतः-स्यात्।
समस्तं-च-धान्यं-महर्घं-करोति॥
गुड़ं-शर्करा घृतं-रसं-सर्षपाद्यम्।
सदा-स्यान्महर्घं-युतैः-पापखेटैः॥४॥

अर्थ—जब मंगल ग्रह कर्क राशि में आता है तो समस्त धान्यों में तेजी ही होती है गुड़, शक्कर, चीनी, घृत, तेल, सरसों अलसी, अण्डी तथा अन्न सभी महंगे होते हैं पाप ग्रहों के योग से खासकर तेजियां होती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदा-सिंहराशौ-गतो-भूमिपुत्रः ।
समे-धातवो रक्त-वस्त्राणि-यानि ॥
तथा-शस्त्र-लोहादि-यन्त्राणिधीमन् ? ।
महर्घाणि-सर्वाणि-वेद्यानि-तावत् ॥५॥

अर्थ--जब सिंह राशि में मंगल जाता है तो समस्त धातुओं में लाल वस्त्रों में शस्त्र तथा लोहादि पदार्थों में अच्छी तेजियाँ बनती हैं पाप ग्रहों के योग से और भी अच्छी तेजियां बन सकती हैं शुभ ग्रह के योग से तेजि कम होती हैं ।

यदा-कन्यकायां-महीजो-व्रजेच्च ।
तदा-चन्दनं-पट्ट-वस्त्रं-महर्घम् ॥
समस्तानि-द्रव्याणि-काऽऽरक्तकानि ।
महर्घाणि-सर्वाणि-वेद्यानि-तावत् ॥६

जब कन्या राशि में मंगल जाता है तो चन्दन, पाट, वारदाना, हैशयन, लाल वस्त्र और रेशमी, ऊनी, सूती कपड़े तथा समस्त धात्वादि द्रव्य लाल वस्तुऐं बराबर तेज ही होती हैं पाप ग्रहों के योग से खास तौर पर ऐसा होता ही है ।

तुलायां-गते-भूमि-पुत्रे -समन्तत् ।
सदा-माष-मुद्गाः-सधान्याः-महर्घाः ।
रसाः-धातवो-च-तूलिका-सूत्र-काद्याः ।
सपापै-र्विशेषात्-च्छुभैर्न्यूनमेव ॥७

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थ—जब तुला राशि में मङ्गल ग्रह आता है तो उड़द, मूंग समस्त धान्य रसादि पदार्थ सभी धातुऐं, एवं रुई, कपास; पाट वारदाना तेज हो जाते हैं पाप ग्रहों के योग से विशेष तेजियां होती हैं शुभ ग्रहों का योग यदि तुला राशि में होता है तो कम तेजियां आती हैं।

यदा-वृश्चिके-भूमिपुत्रो गतश्चेत्
तदा-स्यान्महर्घ-सदा-वस्तुजाते ॥
नृपाः-दोषजाः-स्युः-जना-रोग-युक्ताः।
भवेयुः-सपापैः- खगैर्वा--विशेषात् ॥८॥

अर्थ—जब वृश्चिक राशि में मङ्गल ग्रह होवे तो वस्तु मात्र में तेजी के योग बन जाते हैं। राजा भी दोष पूर्ण होते हैं प्रजा भी रोग युक्त हो जाती है पाप ग्रहों के योग से विशेषकर तेजी के योग होते हैं।

धनगते-च-यदा-पृथिवीसुते ।
भवति-धान्य-तृणं-घृत-मूलकम् ॥
रस-कपास-शणं-पशु-धातुकम् ।
वहु-महर्घकरं-प्रथितं-बुधैः ॥९॥

अर्थ—जबकि धन राशि में मंगल ग्रह जाता है तो धान्य, तृण, घृत; मूलादि पदार्थ रस कपास; रुई शण पशु, धातुऐं सभी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकार की जिन्से तेज होती हैं।

मकरगे-भवति-क्षितिजे-सदा।

घृत-रसादि-युतश्च-महर्घकम् ॥

भवति-धान्य-यवादि-समर्घकम्।

शुभयुते-च-महद्धि-सुभिक्षकम् ॥१०॥

जब मकर राशि में मंगल जावे तब घृत रसादि पदार्थ तो महँगे होते हैं और धान्य सब सस्ते होते हैं शुभ ग्रहों के योग से विशेष सुभिक्ष होता है।

कुम्भे-गते-क्षितिसुते-बहुधा-महर्घम्।

मीनेऽपि-वस्तु-निवहं-ग्रथितं-तथैव ॥

कुम्भे-शुभै-र्युति-वशाद्भवतीह-मान्द्यम्।

मीने च- पाप-युतितो-ऽतिसमर्घमेव ॥११॥

अर्थ-जब कुम्भराशि में मंगल आता है तो प्रायः तेजी करता है मीन राशि में भी तेजीकारक ही होता है परन्तु कुम्भ राशि में शुभ ग्रहों के योग से मन्दापन और मीन राशि में पाप ग्रहों के योग से भी मन्दा ही देखा गया है।

नक्षत्र भोगवश से मङ्गल ग्रह की तेजी मन्दी

पीडाकरोऽश्विनौ-भौमः-सर्वधान्यं-महर्घकम्।

भरण्यां-महर्घ-ज्ञेयं-कृतिकायां-च-विग्रहः ॥१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोहिण्यां-पशुनाशं-च-महर्घं-सर्वधान्यकम् ।
कार्पासं-सूत्रपट्टं-च-मृगे-मेघस्यनाशनम् ॥२॥
आर्द्रायां-वृष्ट्रिबाहुल्य-मदितेः-पशुनाशनम् ।
पुष्येकुजे-चौरभयं-पापे-वृष्टि-विं-नाशनम् ॥३॥

अर्थ—अश्विनी नक्षत्र में मंगल के रहने से पीड़ा जनता में बढ़ती है सातों धान्य महँगे होते हैं, भरणी में भी तेजी रहती है कृति का में भी विग्रह कारक है रोहिणी में पशु नाश कारक होता है तथा तेजियां रहती हैं कपास, रूई, पाट, वारदाना तेज होते हैं मेघ वर्षा कम करते हैं, आर्द्रा में वृष्टि अच्छी होती है पुनर्वसु में मँगल के रहने से पशुओं को पीड़ा होती है व्यापारिक वस्तुओं में तेजियां ही बनती हैं। पुष्य में मंगल ग्रह रहने से चौर भीति तथा तेजि कारक होता है श्लेषा में भी हानिकारक तेजी कारक ही हुआ करता है।

पैत्र्येण-धान्य-तिल-माष-विनाशनं-स्यात् ।
वृष्टेश्चदोष-जनितेऽपि-महर्घकत्वम् ॥४॥
स्याद्योनिजे,-भवति-चोत्तरकेऽपितोवान् ।
दोषो-भवेद्करगते-च-कुजे-महर्घम् ॥५॥

मघा में मंगल धान्य, तिल, उड़द, मूंग की हानि करता है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृष्टि दोष से त्रुटियां आती हैं यही फल पूर्वा फाल्गुनी में भी बना करता है उत्तरा फाल्गुनी में भी प्रायः तेजीयां ही बना करती हैं हस्त के मंगल में भी तेजी होती है।

चित्रां-गतेक्षितिसुते-ऽपि-रुजार्तिं दोषो ।
धान्येषु-स्याद्रसकसादिषु-वा-महर्घम् ॥
स्वातौ-द्विदैव-गमिते-च-कुजे-समस्तम् ।
कार्पास-शालि-यव-वस्त्रमितं-महर्घम् ॥६।

अर्थ—जब चित्रा में मंगल होता है तो रोग बढ़ता है धान्य रस कसादि पदार्थ तेज होते हैं स्वाति विशाखा में भी रुई कपास, पाट वारदाना वस्त्रादि तेज हो जाते हैं।

मैत्रे-सुभिक्षं-बहुधासमर्घम् ।
ज्येष्ठाकुजे-स्वल्प-पयोमहर्घम् ॥
मूले-महर्घं-तुष-धान्य-धातोः ।
नित्यं-विचिन्त्यं विबुधैः-समस्तम् ॥७॥

अर्थ—अनुराधा में मंगल सुभिक्ष कारी होता है मन्दी करता है ज्येष्टा में मंगल वर्षा की कमी तथा तेजि कारक होता है। मूल में भी धान्य चावल, धातुओं में तेजी करता है इसप्रकार विद्वानों को समझदारी से तेजी-मंदी का विचार करना चाहिये।

पूषांगते-क्षितिसुते-बहुवृष्टियोगाः ।
मान्द्यं-सदा-भुवि-तथोत्तरषाढ़-केऽपि ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्याद्वासवे-श्रुति-कुजे-बहुधा-सुभिक्षम् ।
ज्ञेयं-कुजे-शतभिषां-गमिते-महर्घम् ॥८॥

अर्थ—पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र पर मंगल रहने से वर्षा के योग बनते हैं और मन्दा होता है उतराषाढ़ा में भी मन्दियां बनती हैं। श्रवण धनिष्टा में भी सुभिक्ष होता है शतभिषा में जबकि तेजियाँ ही होती हैं।

पूर्वा-गते-क्षितिसुते-तिल--वस्त्र-रूप ।
कार्पास-पूग-जनितानि-महर्घकानि ॥
ज्ञेयं-तथोत्तर-गते-ऽपि-महर्घमेव ।
मान्द्यं-भवेत्सतिकुजे-च-गतेऽपि-पौष्णे ॥९

अर्थ—पूर्वाभाद्र नक्षत्र में मंगल रहने से तिल, तेल, वस्त्र कपास, सुपारी, रुई, पाट, वारदाना, ये सब महँगे होते हैं उतरा भाद्र पदा में भी ऐसा ही फल होता है। रेवती में मंगल के आने से मन्दा पन व्यापारिक वस्तुओं में बनता है।

वर्ष के राजा से तेजी मन्दी विचार

विक्रमी सम्वत्सर जिस वार में लगता है वही वर्ष का राजा माना जाता है, यहां सूर्यादि ग्रहों के राजा (नृपतिः) का वर्षेश का फल कहते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्यफलम्

सूर्ये-नृपे-स्वल्प-जलाश्च मेघाः ।
स्वल्प-पयो-गोषु-जने-षुपीडा ॥
स्वल्पं-सुधान्यं-फलमल्प-वृक्षा ।
श्चोराग्नि-बाधा-निधनं-नृपाणाम् ॥१॥

अर्थ-जिस सम्वत्सर में सूर्य राजा होता है मेघ वर्षा कम करते हैं पशुओं में पीड़ा होती है धान्य यद्यपि उस वर्ष कम ही होता है वृक्ष में भी कम ही फल होते हैं। चौर अग्नि की बाधा देश में होती है बीमारियां भी होती हैं, इन सब बातों के होते हुए भी कभी कभी सूर्य के राजा होने की अवस्था में अन्न काफी मन्दा हो जाता है यह योग सम्वत्सर २०११ विक्रमी में बना था वहां सूर्य राजा था ४॥) मन की बेझड़ बिकी थी सभीजिन्सों में भारी मन्दी आई थी मंगल उस साल मन्त्री था ।

चन्द्रमा के राजा होने का फल

चन्द्रे-नृपे-मंगल-शोभनानि ।
प्रभूत-वृष्टिः-प्रचुरं-च-धान्यम् ॥
सौख्यं-जनानामुदयो-नृपाणां ।
प्रशाम्यति-व्याधि-जरानृपाणाम् ॥२॥

अर्थ—जब चन्द्रमा वर्ष का राजा हो; तो मंगल शुभ कार्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्ष में होते हैं वर्षा भी अच्छी देश में समय के अनुकूल होती है धन धान्य की उत्पत्ति काफी होती है मनुष्यों को सुख मिलता है राजाओं का भी अभ्युदय होता है मनुष्यों में रोग यदि होता भी है वह भी दूर हो जाता है। ये योग सम्वतसर २०१४ वि० में आवेगा सुभिक्षकारी सम्वत्सर रहेगा।

वर्ष का राजा मंगल हो तो फल

भौमे-नृपे-वह्निभयं जनक्षयः।
चौरा कुलं पार्थिव-विग्रहंच॥
दुःख-प्रजा-व्याधि-विभोग पीड़ा।
स्वल्पं-पयो-मुंचति वारि वाहाः॥३॥

अर्थ-जब राजा मंगल होता है तो अग्नि काण्ड ज्यादा उस वर्ष होते हैं मनुष्यों की हानि भी होती है चोरभीति बढ़ती है-राज विग्रह भी हो जाता है दुःख प्रजा में बढ़ता है। रोग-तथा-वियोग एवं पीड़ा बढ़ती है अर्थात् जीवों की मृत्यु ज्यादा होती हैं। और मेघ वर्षा भी कम करते हैं।

राजा बुधस्तत्फलम्

बुधे-नृपे-वृष्टिः सुवद्रः जगत्यां।
प्रभूतधान्यं--प्रचुटरा-समृद्धिः॥
सौख्यं:--पथूनां---बहुगोप्रसूतिः।
प्रशाम्यति-व्याधि जराजनानाम्॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थ—बुध के राजा होने से भी भूमि पर वर्षा अच्छी होती है। धन-धान्य की उत्पत्ति अच्छी होती है। पशुओं को जीवजन्तुओं को सुख मिलता है गायों की बैलों की वृद्धि होती। मनुष्यों में रोग व्याधि का नाश होता है।

राजा गुरुस्तत्फलम्

गुरौ–नृपे–वर्षति कामदं जलं।
महीतले–कामदुघाश्च धेनवः।
यजन्ति–विप्राः बहवोऽग्निहोत्रिणो।
महोत्सवं–सर्व जनेषु वर्तते ॥५॥

अर्थ—जब बृहस्पति राजा होता है तो वर्षा अच्छी होती है भूमि पर पशुओं की वृद्धि होती है यज्ञया गाआदि अच्छे होते हैं सब जगह उत्सव बढ़ते हैं बृहस्पति का राजा होना शुभ है।

राजा शुक्रस्तत्फलम्

शुक्रस्य राज्ये–बहु सस्य संकुला।
स्व तीव्र वेगाः सरितोऽभ्वु राशिभिः ॥
फलन्ति वृक्षाः बहुगो प्रसूतिः।
वसुन्धरा–पार्थिव सौख्यासंयुताः ॥६॥

अर्थ—जब शुक्र राजा होता है तो वर्षा अच्छी होती है। धान्य उत्पन्न खूब होते हैं, चारे को वृद्धि होती है, वृक्षों में फल खूब लगते हैं। भमि पर जीव जन्तु सुखी होते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजा शनिस्फलम्

शनौ-नृपे--कष्टभयं--जनेषु ।
वृष्टिश्च स्वल्पा-धनधान्यमल्पम् ॥
दोषो--नृपाणां--बहुविग्रहः स्यात् ।
प्रजासुपीड़ा बहु व्याधि दोषाः ॥७॥

अर्थ---जब शनि राजा होता है तो जनता में कष्ट बढ़ता है वृष्टि कम होती है धान्योत्पति भी कम होती है, राजाओं के दोष से, बिग्रह बढ़ जाती है प्रजा में पीड़ा और ब्याधि दोष बढ़ता है ।

वर्ष के मंत्री पद का फल कहते हैं

मंत्री-सूर्यस्तत्फलम्

नृपभयं—गदतोऽपि-हितस्करात् ।
प्रचुर-धान्य-धनादि-महीतले ।
रसचयं-हिसमधंतः मन्दता ।
रविरमात्य पदं हि-सभागतः ॥१॥

अर्थ—मन्त्री यदि वर्ष का सूर्य ग्रह होता है, राजा से-रोग-से-चोरों से भय होता है परन्तु-धान्योत्पति अच्छी होती है मन्दी भी काफी आता है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्त्री चन्द्रस्तत्फलम्

शशिनि-मन्त्रिगते-बहु-सस्यव ।
त्यपि-धरा-रमतेसु-खमण्डिता ॥
वियति-वारिधरा -बहु-वर्षिणो ।
जनपदा-सुख-राशिसुशोभिताः ॥२॥

अर्थ—जब मन्त्री चन्द्रमा होता है तो भूमि पर चारा खूब पैदा होता है मनुष्य सुखी होते हैं आकाश में मेघ खूब बनते हैं वर्षा भी अच्छी होती है मनुष्यों में सुख समृद्धि बनती है।

मन्त्री भौमस्तत्फलम्

अवनिजो-ननु-मन्त्रिपदं-गतो ।
भवति-दस्यु-गदाविजवेदना ॥
जनपदेषु-जयं-सुखसंचयं ।
न-बहुगोषु-पयोद्विजकर्म-च ॥३॥

अर्थ—जब मंगल मन्त्री होता है चौरों का उपद्रव बढ़ता है फिर भी जनता में सुख भी रहता ही है अन्न भी काफी उत्पन्न होता है गौ दूध कम देती हैं दूध की कमी रहा करती है।

मन्त्री बुधस्तत्फलम्

शशि-सुते-शुभमन्त्रि-समागते ।
स्वपतिना-कुरुते-मदन-क्रियाम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहुधनं-बहुवारिसमन्वितम् ।
यव-मसूर-चणाद्यमहर्घता ॥४॥

अर्थ—जब मन्त्री बुध होता है तो स्त्रियां विलासवती ज्यादा होती है धन धान्य की उत्पतिः काफी बढती है जल भी खूब वर्षता है फिर धान्य भाव तेज ही रहते है।

मन्त्री गुरुस्तत्फलम्

विविध-धान्ययुता-खलु-मेदिनी ।
प्रचुर-तोयघना-मुदिता-भवेत् ॥
नृपतयो-जनपालन-तत्पराः ।
सुरगुरौ-ननु-मन्त्रि-समागते ॥५॥

अर्थ—गुरु के मन्त्री होने से भूमिपर धान्य की उत्पति अच्छी होती है वर्षा काफी होती है राजा ओं में भी धार्मिक भाव बढ़ता है यज्ञ तथा याज्ञादि भी काफी होते हैं समय मन्दी का भी काफी रहता है।

मन्त्री शुक्रस्तत्फलम्

भृगुसुते-ननुमंत्रिपदं-गते ।
शलभ-मूषकरावथ-माहिषैः ॥
भवति-धान्य-समर्घ-तमथाभयम् ।
जनपदेषुजलं-सरितोऽधिकम् ॥६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थ—यद्यपि शुक्र के मन्त्री होने से ईति दोष बढ़ जाता है टिड्डी, मूसे, तथा जंगली जानवरों का भी भय बढ़ता है जल की वर्षा काफी होती है धान्य भाव मन्दे हो जाते हैं।

मंत्री शनिस्तत्फलम्

रविसुते यदि मंत्रिणि पार्थिवाः ।
विनय—संरहिताः बहुदुः खदा ॥
न जलदाः जलदाः जनतापदा ।
जनपदेषु सुखधनंदं क्वचित् ॥७॥

अर्थ—जब शनि मन्त्री होता है तो उद्दण्डता बढ़ती है, वर्षा की कमी रहती है, धान्यभावमहंगे हो जाते हैं।

नोट :— यह तो स्पष्ट बता ही दिया गया है कि जिस दिन सम्वत्सर नया लगता है उस दिन जो बार होता है वही ग्रह उस वर्ष का राजा होता है और मेष संक्रान्ति जिस दिन लगती है वह ग्रह मन्त्री होता है राजा ग्रह की मन्त्री ग्रह के साथ मित्रता होती है तो दोनों के शुभ ग्रह होने से सम्वत्सर में मन्दापन आता है पाप ग्रहों के होने से तेजियां आती हैं पापग्रहों के अधिकारियों में भी मित्रता से खास मन्दापन नहीं होता है, एक शुभ ग्रह हो एक पाप ग्रह हो तो भाव सम बने रहा करते हैं और भी आठ अधिकारी ग्रहों का प्रभ व भी वर्ष पर पड़ता है जिनकी बावत व्यापार विज्ञान—द्वितीय भाग में विचार प्रकाशित

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करेंगे। यहां तो व्यापारियों को चाहिये कि वे राजा और मन्त्री ग्रहों की स्थिति को समझकर सम्वत्सर के फल पर ध्यान देकर अपने व्यापार का दृष्टिकोण वर्ष भर का बनावें।

बुध ग्रह का मेषादि राशियों में फल

बुध का बिम्ब स्वर्ण तथा तोते एवं नीलमणि के समान स्निग्ध बड़ा यदि होता है तो शुभ फल देता है अन्यथा अशुभ रहता है जैसाकि बराह महिराचार्य ने कहा है।

हेमकान्तिरथवा शुकवर्णः-सस्यकेन-मणिना-सदृशोवा ।
स्निग्धमूर्तिरलघुश्च हिताय-व्यत्ययेनशुभकृच्छशिपुत्रः ॥१॥

अतः बुध ग्रह का स्निग्ध नील वर्ण के समान दिखाई देना शुभ है।

मेष राशि में बुध का फल

यदा-मेषराशौ-स्थितः-सौमपुत्रो ।
महर्घ-महत्स्या-त्सदाजीव-घातौ ॥
रसाः-वा-घृताद्याः-गुडाद्याः—समर्घाः ।
यवाद्याः-सगोधूमकाः-स्युर्महर्घाः ॥१॥

जब मेष राशि में बुध आता है तो जीव सभी प्रकार के चौपाये तथा सभी प्रकार की धातुऐं तेज हो जाती हैं। रसादि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पदार्थ गुड़, घृत सभी सस्ते होते हैं जौ, गेहूं का भाव तेज होता है।

वृष राशिस्थ बुध फलम्

वृषे—सोमपुत्रे—यवाद्यं—सधान्यम् ।
तिलं—सूत्रकं - तण्डुलं—तूलिकाद्यम् ।
जनेषु—प्रपीडां—क्षितौ—रोगशोकम् ।
सपापे—महर्घं—महत्स्यात्तदानीम् ॥

अर्थ—जब बुध ग्रह वृष राशि में पहुंचता है और वह पाप ग्रह के साथ हो तो तिल, तेल, सूत, कपास, रुई, तण्डुल, गेहूं, चना, जौ, मटरा आदि धान्यों में तेजी करता है पाप ग्रहों के योग से मनुष्यों में पीड़ा होती है और तेजी भी अच्छी बढ़ जाती है।

मिथुने—च-बुधोयाति—महर्घं-सर्वधान्यकम् ।
चतुष्पदां-महर्घत्वं—वायुश्च प्रबलोभवेत् ॥३॥

अर्थ जब मिथुन राशि में बुध जाता है तो धान्यभाव तेज हो जाते हैं चौपाये भी महँगे होते हैं वायु काफी चलती है वर्षा की कुछ कमी रहती है शुभ ग्रहों के योग में बुधग्रह वर्षा अच्छी भी किया करता है। पाप ग्रहों के योग से वर्षा के योग कम बनते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्कराशिस्थिताः—सौम्याः—महर्घं—च—रसादिकम् ।
सुमिक्षं स्वल्पकं ज्ञेयं—क्वचिदेवहि—वर्षणम् ॥४॥

अर्थ—कर्क राशि में बुध के जाने से रसादि पदार्थ, धान, गुड़, दूध-दही, तेल आदि महंगे होते हैं सुमिक्ष थोड़ा होता है वर्षा कहीं कहीं होती है।

सिंहराशौ—बुधोयाति—महर्घं—सर्वधान्यकम् ।
धात्वादिकं पटाद्यं चं महर्घं—तत्रजायते ॥५

अर्थ—सिंह राशि में बुध ग्रह आवे तो समस्त धान्य तेज हो जाते हैं धातु तथा कपड़ा वस्त्र-ऊनी सूती वस्त्र तेज होते हैं।

कन्याराशिं—स्थितः—सौम्यः—कांचनं—रजतं—महत् ।
शर्कराद्यं—कपासाद्यं—वस्त्राद्यं—चे—महर्घकम् ॥६

अर्थ—कन्या राशि में बुध—सोना चांदी धातुवाने में तेजी करता है कपास, गुड़, शक्कर चीनी खांड आदि को में तेजी कारक है।

तुलायां—सौमपुत्रश्चेत्—तदा—स्याच्चमहर्घकम् ।
धान्यं—सतैलं—मिष्टान्नं— तूलिकाद्यं—महर्घकम् ॥७

अर्थ—तुला राशि में बुध, धान्य, तेल, मिष्टान्न, कपास रुई में तेजियां किया करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदा-वृश्चिके--सोमपुत्रः-स्थितः_स्यात् ।
सपापोमहर्घं—घृतादौ—करोति ॥
समर्घ—च_धान्येषु_मुद्गेषु-ज्ञेयम् ।
शुभैः-संयुतः स्यात्सुभिक्षं तदानीम् ॥८॥

अर्थ—जब वृश्चिक राशि में बुध आता है तो वह पाप ग्रहों के योग से घृतादि वस्तुओं में तेजी करता है। धान्यादिकों में उड़द मूंग में मसूर में शुभ ग्रहों के योग से मन्दी कारक होता है।

गुरुक्षेत्रेबुधः दोषान्—करोतीहमर्घकम् ।
सपापो-_वा-रसाद्यं—च—द्विगुणं—वस्त्रादिकम् ॥९

अर्थ—बृहस्पति के घर का बुध-पाप ग्रह के साथ तेजियों को ही बढ़ाता है वस्त्रादि में रसादि पदार्थों में खास कर तेजि करता है।

शनिक्षेत्रेबुधोयाति--समभावः—प्रवर्तते ।
सुखंदुखं—तथा व्याधिं फलंस्याच्च शुभाशुभम् ॥१०

अर्थ—शनि के घर में बुध-सुख दुःख तथा शुभ अशुभ दोनों फलों को ही देता है। तेजि मन्दियां दोनों होती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(१)सूर्यात्मजो - व्रजति चेद्दिवि - वक्र - गत्या।
भौमेन-दृष्टि - रहितो यदि वृश्चिकांशैः ॥
सिंहे - व्रजेद्यदि - गुरूः - स्वविलोम-गत्या।
कन्यां - विहाय तनुते बहुमान्द्यमेव ॥

यदि शनि वक्री होकर वृश्चिक राशी में चल रहा हो और मंगल ग्रह का दृष्टि सम्बन्ध उससे हट जाये, कन्या राशी को छोड़ कर बृहस्पति भी वक्री होकर सिंह राशी में पहुचे तो बहुत मन्दी के योग बना करते हैं।

सरसों, अण्डी अलसी, गल्ला अच्छी मन्दी में जाता है। यहयोग सम्वत्सर २०१४ के बैसाख में पड़ेगा, उस समय हमारे चालू विज्ञान ज्योतिः में विवरण देखियेगा।

(२) गुरोः-स्थानतः-केन्द्रगे-सूर्य शुक्रे ।
द्वितीये - शनिः - भोम - युक्तो-भवेच्च ॥
तदामन्दता - धान्य - तैलादि-केषु।
तथा-सर्षपादौ - भृगोरस्तगेऽपि ॥

यदि बृहस्पति ग्रह से केन्द्र स्थान में सूर्य तथा शुक्र का योग हो और द्वितीय स्थान में शनि मंगल का योग हो तो धान्य सातों तेल तिल सरसों अलसी अण्डी में भारी मन्दी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आती है यह योग सं० २०१४ के माघ मास में भी आवेगा व्यापारी इस योग से लाभ उठा सकते हैं स्मरण रहे माघ मास सं० २०१४ में तुला राशि में बृहस्पति ग्रह है शुक्र और सूर्य १४ जनवरी के आस पास में मकर में रहेंगे जो केन्द्रवर्ती हो जावेंगे और १५ महूर्त मकर की संक्राति उस समय जो सरसों अलसी अण्डी गेहूं चना आदि धान्यों को तेज करती है इस वास्ते तैयारी तथा वायदों के धान्य तथा तेल तिलहन के सौदों में मार्केट अच्छी तेजी उस समय ले चुके होंगे माघ सुदी में शुक्र अस्त हो रहा है अतः मोटी मन्दीयां यहां से धान्य तेल तिलहन में चालू हो जावेगी ज्येष्ठ वायदा की जिसों को बेचने से मोटा नफा भी मिलेगा, जब जब ये योग पहिले बनें हैं आगे भी जब जब बनेंगे तेजी से एक दम मन्दी की लाईन चालू हो जाती है।

३ गुरोः - वक्रगे भौम - युक्तेच - शुक्रे ।
शनौ - वास्तगे - शुक्रभौमार्कि - योगे ॥
तदा - मन्दता - धान्य - तैलादि-केषु ।
तथा-सर्षपादौ - घृतादौ - विचिन्त्या॥३॥

जब बृहस्पति ग्रह वक्रीहोवे-मंगल ग्रह शुक्र के साथ योग कर रहा हो, शनि ग्रह अस्त हो रहा हो अथवा शुक्र-मंगल और शनि तीनों ग्रह एक साथ हों तो सातों प्रकार के धान्यों में तेल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिल-घृत्त- सरसों-गुड़- अण्डी अलसी रसादि पदार्थों में अछी मन्दी के योग बना करते हैं।

४ गुरोरस्तगे - कन्यकायां - च- माने।
बुधे - चन्दयोगे गुरोश्शुक्रयोगे ॥
दिनेशेऽपियुक्ते-तथाव्यत्ययेन।
तदा-मन्दता - धान्य-तैलादिकेषु ॥४॥

जब वृहस्पति ग्रह- कन्या अथवा मीनराशि मे अस्त हो जाता है, अथवा जब कभी वृहस्पति ग्रह के साथ चन्द्रमा बुध-शुक्र-सूर्य एक साथ योग करें अथवा व्यत्यय से योग करें अर्थात वृहस्पति चन्द्रमा गुरू चान्द्रीयोग बनाकर-सूर्य शुक्र-बुध की युति के साथ दृष्टि सम्बन्ध रखकर योग बनावें तो गेहूं चना जौ मटरा अरहर- सरसों अलसी अण्डी तेल तिलादिकों में मन्दी कारक योग बनजाते हैं।

यदा-वृश्चिके-सौमपुत्रः-स्थितः-स्यात्।
तथा-तत्र-शुक्रोऽपि - योगं-विधत्ते ॥
यदा-कुम्भ राशौ - गुरूरस्तगश्चेत्
तदा-चन्द्रयोगाद्ध वेन्मन्दता — ऽपि ॥

अर्थ—जब वृश्चिक राशि में बुध ग्रह शुक्र ग्रह के साथ योग करता है और जब कुम्भ राशि में वृहस्पति अस्तहोता है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इनदोनों स्थितियों में चन्द्रमा के योग से सरसों-अलसी अण्डी गेहूँ चना जो मटरा आदि धान्यों में बड़ी अच्छी मन्दीयां आती हैं स्मरण रहे कि चन्द्रमा के योग में तो सवा दो दिन ही मार्केट मन्दी लेता है परन्तु चन्द्र के अतिरिक्त स्थल में भी उपरोक्त ग्रह चाल की अवस्था में मन्दीयों के योग को समझना चाहिये

बुधः - कन्यकायां - बिलोमां - गतिंच ।
कुजः - शीघ्रगां-वा -समाश्रित्य-याति ॥
तदा—मंदता - धान्य— तैलादिकेषु —
तथा -सर्षपादौ-घृतादौ -विचिंत्या ॥ ६ ।

जब बुध ग्रह कन्या की अपनी उच्चराशि में वक्री हो कर अथवा शीघ्रगति को धारण कर के अपनी द्रुत गति को पकड़े तो सरसों अलसी अण्डी में विशेष कर मूंगफली मक्का बाजरा एवं मोटा अनाज घृत तेल तिलहनादि में मन्दी के योग बना करते हैं।

(७) बुधो-भौम - युक्तो - धनौ - कर्कटे- च ।
यदा -मीनगशौ-युतौ-तौ भवेताम् ॥
तदा-मन्दता-धान्य-तैलादिकेषु ।
तथा-सर्षपादौ-सुधीभि-विचिंत्या ॥

यदि बुध ग्रह मंगल के साथ धन अथवा कर्क अथवा मीन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशि में अपना योग बनावें तो भी रसादि पदार्थ विशेष कर धान्य सरसों आदि में मन्दी होती है।

८ गुरु-भौम-युक्तो-दिनेशात्मजोऽपि ।
यदा-मीनराशौ-धनौ-कर्क टेच ॥
भवेन्म दता-धान्य-तैलादिकेषु ।
तुलायां-सिते-भौम-युक्तेऽपिज्ञेया ॥३॥

जब बृहस्पति ग्रह शनिश्चर तथा मंगल के साथ में योग करता है कर्क अथवा मीन तथा धन राशियों में यह योग होने सेगल्ला आदि सातों धान्य तेल तिलहन में मन्दीयां होती है तुला राशि में शुक्र मंगल के योग में भी मन्दियाँ आया करती हैं।

(९) गुरोश्चंद्रयोगात्-भवेद्-भौमयुक्तात् ।
पुरो-वा-महर्घं-समग्रं-च-धान्यम् ॥
युतेः -कालतो-मंदता-बोधनीया ।
सदा-सर्षापादौ-सुधीभि-र्विचित्या ॥ ४ ॥

जब बृहस्पति चन्द्र और मंगल का योग किसी राशि में बन जाय तो योग से पहिले समस्त प्रकार के धान्य तेज रहा करते हैं योग होते ही मार्केट की लाइन सरसों अलसी अण्डी गेहूं-चना जौ मटरा अरहर तेल आदि पदार्थ मन्दी में जाने लगते

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं ऐसी अवस्था में तैयारी माल के पेटे में चालू वायदों का अथवा आगे के वायदों का सौदा जरूर बेचान कर देना चाहिये।

धान्य तथा तिलहन में तेजी के योग

[१] कर्के-गतोयदि-गुरूः-क्षितिजस्तु-लायाम् ।
मीने-शनि, वृषगतोः-शनि-सूर्य-भौमाः ॥
मेषे-सिते, क्षितिसुवः-शनि-सूर्य-योगे ।
ज्ञेय - महर्घमतुलं - तिलजं - सधान्यम् ॥१॥

जब कर्क राशि में बृहस्पति रहता है, मंगल तुला राशि में रहता हो, शनि मीन राशि में चल रहा हो शनि सूर्य मंगल वृष राशि में होवे, शुक्र मेष राशि में जब रहता है, अथवा मेष राशि में शुक्र-मंगल-सूर्य शनि योग करें अथवा अलग ये ग्रह भी मेष राशि में आवें तब गल्ला तेल और तिलहन के मार्केट में तेजी के योग ही बना करते हैं शुक्र राहु के मेष राशि के योग से भी धान्य तिलहन तेज होते हैं।

मीने - भवेद्यदि-शनि - र्धनुषि - स्थितो वा ।
राहुः - सवक्रगतिगः - क्षितिजोऽपितत्र ॥
योगोऽशुं मान्-जनयति-क्षितिजे-महर्घम् ।
धान्यं—तदा-सतिलजं-द्विगुणं-करोति ॥२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थ— जब मनिराशी में अथवा धनराशी में शनि हो राहु का भी योग हो, अथवा वक्री मंगल से योग बन रहा हो तो धान्यतथा तेल तिलहन में अच्छी तेजीयों के योग बन जाते हैं। यह भी अंशुमान् नामक योग होता है इसमें कई भेद होते हैं, मनिराशी में शनि मंगल राहु के योग से अथवा धनराशी में शनि मंगल राहु के योग से यहयोग तेजी कारक हुआ करता है धान्य तथा तिलहन में अच्छी तेजी होती है।

३ कर्के-गतो-यदि-गुरुः-शनिःवृश्चिके च।
राहु-सवक्रगतिगः; क्षितिजोऽग्रगश्चेत् ॥
योगोऽशुमान्-जनयति-क्षितिजे-महर्घम्।
धान्यं-तदा-सतिलजं-द्विगुणं-करोति ॥ ३ ॥

जब वृहस्पति ग्रह कर्क में हो, वृश्चिक राशि में शनि और राहु हों, मंगल आगे धन राशि में गया हुवा वृश्चिक राशि से आगे हो यह भी अंशुमान योग होता है, जो धान्य तिलहन सरसों अलसी अण्डी के भावों में द्विगुणा भाव बढ़ा देता है यही योग सम्वत्सर २०१२ के फागुन में आया था जिस का उल्लेख हमने स्पेशल सूचना के रूप में विशेषाङ्क २०१३ के अंक में किया था स्मरण रहे कि उस समय कर्क राशि में तो गुरु था और शनि राहु का योग वृश्चिक में था, मंगल वृश्चिक से आगे धन और मकर में गया था मकर के मंगल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तक काफी तेजियां गल्ले और तिलहन में आई थी, कुम्भ राशि में मंगल के जाने पर मन्दीयां आरम्भ हुई थीं जो अंशुक योग की मन्दियां थी जिसका उल्लेख जून और जूलाई सन १९५६ के अंक में हमने किया था।

भौमार्की-गुरुशुक्राश्चेत् । एक - राशौ - समाश्रिताः ॥
महर्घं - जायते - धान्यं । तिलजं - सकलं - बहु ॥४॥

सितार्की - भूमि पुत्राश्च । राहु - योगेन - संयुताः ॥
अनावृष्टिं - महर्घं - च । धान्यं-च द्विगुणं - भवेत् ॥५

एकराशौ यदत्यान्ति । चत्वारः पञ्चखेचराः ॥
प्लावयन्ति महीं सर्वां । रुधिरेण जलेन वा ॥६

जब मंगल गुरु शनि शुक्र एक राशि में एकत्र हो जावे तो तेजियां धान्य और तिलहन में बनती है। और जब मंगल शुक्र शनि राहु एक जगह होते हैं तब भी अनावृष्टि होती है वर्षा की कमी होती है धान्य तथा तेल तिलहन में अच्छी तेजी आती है। एक राशि में चार या पाँच ग्रहों का योग भी त्रुटि करता है।

(५) सूर्यार्कि - सौम्य - गुरु-मिश्रितराहुयोगात् ।
पञ्चग्रहात् - भवति - संकट - काल - योगः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुर्दैव-पीडित-जनाः - पशवोऽपि-जीवाः।
ज्ञेयं - महर्घमतुलं - भुवि-सस्य - नाशः ॥६॥

[६] पञ्चग्रहेऽपि - जनिते - किलकाल - योगे।
योगं-करोति च-शशिः-क्षितिजेन-युक्तः ॥
सप्तैश्च-तत्र - वलिभिः - किलगोल-योगात्।
दुर्भिक्षकं - बहुखगै - र्भुवि-कम्पकं -स्यात् ॥७॥

अर्थ—जब किसी राशि में सूर्य-शनि-बुध गुरु एक जगह एकत्र हो जाते हैं तो पांच ग्रहों के एक जगह मिल जाने से संकट कारी काल नामक योग होता है इस योग में पशु पक्षि जीव जन्तु सभी पीड़ित होते हैं अति वृष्टि-अनावृष्टियों से बड़ी भारी हानि होती है। घास, धान्य, सरसों आदि सभी जिन्सों में तेजियां हो जाती हैं।

(६) यह जो पांच ग्रहों के एकत्र हो जाने से काल नामक योग बताया गया है इन्हीं पांच ग्रहों के साथ किसी भी राशि में जब कभी किसी भी अमावस्या में चन्द्रमा और मंगल ग्रह दोनों और आकर मिल जावें तो सात ग्रहों के योग से गोल नामक योग बन जाया करता है,यह प्रजा में अशान्ति अतिवृष्टि अथवा अनावृष्टि से बहुत भारी क्षति किया करता है ज्यादातर सातों ग्रहों के योगों में भूमि पर भूकम्प से बहुत बड़ी हानि होती है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तब गेहूं, चना, जौ मटरा, तेल, तिलहन में भी अच्छी तेजियां आया करती हैं ये योग सन् १९३४ई. में आया था जिस में बिहार में मुंगेर, मुजफ्फर पुर में जमीन फट गई थी बड़ा भारी भूकम्प हुआ था जब हम आचार्य कक्षा में काशी जी में पढ़ते थे क्वेटा में भी बड़ी भारी क्षति उस समय हुई थी हमें अच्छी तरह से स्मरण है यह योग भी अनेक व्यापारिक जिन्सों में बराबर तेजी किया करता है मगर जमीन फटने से द्रवित पदार्थ ऐसा निकलता है कि उससे कपास की फसल बहुत अच्छी बाद में हुआ करती है फिर धीरे धीरे अच्छी मन्दियां ही बन जाती हैं।

[७] ज्येष्टां-गतो-यदि-गुरुः-शनिः-वृश्चिकेऽपि।
भौमोऽथवा-वृषगतो-सहितोऽपि-राहुः॥
धान्यं-महर्घमनिशं-शनिराहुयोगे।
आर्द्रांगते-यवचणा-पि-महर्घयन्ति॥८॥

जब ज्येष्ठा नक्षत्र में गुरु ग्रह हो शनि भी वृश्चिक राशि का हो विशेषकर अनुराधा में हों, अथवा मंगल राहु का योग वृष राशि में हो, अथवा शनि राहु का योग वृष राशि में हो अथवा आद्रानक्षत्र में शनि राहु का योग बन गया हो तो भी व्यापारिक धान्यादि जिन्सों में गेहूं, चना, जौ, मटरा अरहर में अच्छी तेजी के योग बन जाया करते हैं। वृष्टि का अभाव हुआ करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[८] रोहिण्यां-सित-भौमर्किश्चन्द्रेणसमन्वितः ।
महर्घं-जायते-धान्यं, श्रवणेऽपिबुधेऽस्तगे ॥९॥

रोहिणी नक्षत्र में शुक्र मंगल शनि और चन्द्रमा का योग बन जाये अथवा श्रवण नक्षत्र में बुध अस्त हो जावे तो गेहूं चना जौ मटरा के भाव तेज हो जाते हैं,

[८] भौमशुक्रसमयोगे-मेषे-राहुश्च-संस्थितः ।
प्रबलोऽपिभवेद्योगः-महर्घं - सर्वधान्यकम् ॥१॥

यदि मेष राशि में मंगल शुक्र राहु का योग हो तो यह प्रबल तेजी कारक होता है। धान्यों की हानि हुआ करती है धान्यों में यहां तेजी का योग बना करता है।

[१०] चन्द्र-ग्रहाच्चखग्रासात्पश्चात्सूर्यग्रहो-भवेत् ।
महर्घं-जायते-धान्यं-नाऽत्रकार्या-विचारणा ॥११

जब कभी खग्रास चन्द्रमा के ग्रहण से सूर्य का ग्रहण १५ दिन बाद ही हो जावे तो व्यापारिक जिन्सों में तेजियां होती हैं धान्यभाव तेज हो जाते हैं। ग्रहण से पूर्व चांदी में तेजी बाद में मन्दी हुआ करती हैं।

[११] बैशाखमासे-चन्द्रस्य-ग्रहणं-यदि-जायते ॥
कार्पा-सादीनि-सूत्राणि-महर्घाणि-भवन्तिहि ॥ १२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बैशाख मास में चन्द्रमा का ग्रहण धान्यों में भी तेजी किया करता है परन्तु रुई, सूत, पाट वारदाने में भी तेजियां हुआ करती हैं।

ये तेजी के योग बताये गये हैं फिर भी देश काल की परिस्थिति से भी विद्वानों को तेजी के योगों को समझना चाहिये।

रुई की तेजी मन्दी के कुछ योग

(१) गुरोः-शुक्र-योगेऽथवा-भौम-सूर्ये।
शनौ-भौम-युक्ते-ऽथवा-राहु-चन्द्रे ॥
विलोमानुलोमां-गतिं-वा-प्रपन्ने।
तदा-तूलिकायां-महर्घं-विचिन्त्यम् ॥१॥

जब कभी भी किसी भी राशि में गुरु तथा शुक्र का योग एक जगह बने अथवा मंगल और सूर्य दोनों एक राशि पर पहुंचे अथवा शनि तथा मंगल का योग एक जगह हो अथवा राहु और चन्द्रमा एक जगह हों वे उपरोक्त ग्रहों के योग चाहे मार्गी ग्रहों के हों अथवा वक्री अवस्था के हों तब रुई कपास में तेजियाँ ही हुआ करती हैं व्यापारियों को पञ्चांग में देखने से स्पष्ट पता चल जायेगा कि उपरोक्त ग्रहों का योग किस ग्रह के किस दिन मिलने पर बन रहा है जब आगे यह योग बनने वाले हों तो पहिले ही तेजी रुई कपास के सौदों में तेजी लगानी चाहिए अथवा पहिले ही स्टाक रुई कपास का कर लेना चाहिए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(२) तुलायां-विलोमां-गतिं च-प्रपन्नो।
महीजो-यदा-शीघ्र-गामी-शनिश्च ॥
बुधः-शुक्रयोगात्प्रथक्तां-विधत्ते।
तदातूलिकायां-महर्घं-विंचिन्त्यम् ॥२॥

जब तुला राशि में वक्री होकर मंगल ग्रह चल रहा हो वहां शनि की गति तेज हो जाय। मंगल शनि के योग से जैसे तेजी के अवसर बताये गये हैं काफी समय तक यह तेजी रहा करती है क्योंकि मंगल वक्री होकर तुला राशि में ५—६ मास तक का टाईम ले लेता है तब रुई में तेजी के योग बना करते हैं।

बुध शुक्र के योग से जब ये दोनों ग्रह अलग अलग होते हैं तब भी रुई कपास में तेजी के योग बना करते हैं।

(३) गुरौ-मीन-राशौ-गते-वक्रिभूते।
महीजेऽनुलोमां-गतिं-वा-प्रपन्ने ॥
शनौ-पूर्ण-दृष्टे-ऽथवा-संयुतेऽपि।
तदा-तूलिकायां-महर्घं-विंचिन्त्यम् ॥३
शनौ-वृश्चिवके-भौम-युक्तेऽपि-राहौ।
गुरौ-वक्रगे-सं-युतेवाऽपि-दृष्टे ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विलोमानुलोमां गतिं-वा-प्रपन्ने ।
तदातूलिकायां-महर्घं-विचिन्त्यम् ॥४

जब बृहस्पति ग्रह मीन राशि में चलता हुआ वक्री होकर चलता है और मंगल मीन राशि में अथवा किसी और राशि में शीघ्र गति गामी होकर चल रहा हो शनि से मंगल अथवा बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखे जाते हों अथवा युक्त हों, तो रुई में अच्छी तेजी के योग बना करते हैं ये योग बड़े ही परीक्षित हैं और पक्के हैं व्यापारियों को ध्यान से इन योगों से लाभ उठाना चाहिये। इसी प्रकार जब शनि ग्रह वृश्चिक राशि में हों मंगल और राहु का योग किसी दूसरी राशि में हो अथवा शनि के साथ ही हो। बृहस्पति ग्रह उसी समय वक्री हो चाहे वह किसी भी अन्य राशि में ही क्यों न हो अथवा वक्री गुरु के साथ शनि मंगल राहु में से कोई भी ग्रह होवे, अथवा सब तीनों ही युक्त हों अथवा दृष्ट हों चाहे वहां शनि मंगल मार्गी हों अथवा वक्री हों तो रुई कपासमें अच्छी ही तेजीके योग बना करते हैं।

[४] तेजी कारक कोई भी ग्रह किसी भी राशि पर आवे तो उसी राशि के उसी ग्रह पर किसी भी बलवान् शुभ ग्रह की दृष्टि पूर्ण रूप से पड़ती हो तो तेजी के बजाय मारकेट में अच्छी ही मन्दी आ जाया करती है रुई में तो आती ही है और भी जिन्सों में ये योग लागू होते हैं। अशुभ ग्रहों की दृष्टि से तेजी ही बनी रह जाती है यह ध्यान रखने की चीज है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभः-कोऽपि-खेटो-बलि र्यत्रराशौ ।
बलीभिश्च-दृष्टो-यदा-पाप-खेटैः ॥
तदा-मन्दतायां-भवेद्वा-महर्घम् ।
शुभैः-दृष्टियोगात्सदा-मन्दतैव ॥५
खलः-कोऽपि-खेटो-बलि-र्यत्र-राशौ ।
शुभै-र्वा-स-दृष्टो-बलीभि-र्बहुभिः ॥
महर्घं-विधाय-क्षणे-तत्समर्घम् ।
तदा-विक्रियाद्वस्तुनो-लाभ-कृत्स्यात् ॥६

कोई भी शुभ ग्रह बलवान् होकर जिस किसी भी राशि में बलवान् पाप ग्रहों से देखा जाता हो तो मन्दी की चालू लाईन में अच्छी तेजी के योग बना करते हैं रुई में ये योग अच्छे मिलते देखे गये हैं शुभ ग्रहों के दृष्टि योग में तो मन्दी ही बनी रहा करती हैं और पाप ग्रह कोई भी बलवान होकर किसी भी राशि में कई शुभग्रहों के योग से जो कि बलवान् हैं देखा जाता हो तो तेजी के चालू योगों में मन्दी के योग बन जाया करते हैं, उसमें तो हरचढ़े भाव वायदा भी जो चालू हो और तैयारी रुई का माल भी बराबर बेचते ही रहने में अच्छा नफा मिलता है व्यापारी बन्धुओं को ये योग समझदारी से समझकर और उन से देश काल की मांग खपत और स्थिति को ध्यान में रखकर प्रयोग में लाकर लाभ उठाना चाहिये ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[५] क्षणे-यत्र-सूर्ये-व्रजेद्यत्र-राशौ ।
शशी-वासमायाति-यत्र क्षणे-वा ।
शुभे-मित्र-दृष्टे च युक्ते-तदानीम् ।
तदा-विक्रियाद्वस्तुनो-लाभकृत्स्यात् ॥७॥

[६] शशी-सूर्य-युक्तो-व्रजेद्यत्र-राशौ ।
शनिश्चेत्तदा-राहु-युक्तोऽपिभौमः ॥
महर्घ-विधाय-क्षणेतत्समर्घम् ।
तदा-विक्रयाद्वस्तुनो-लाभकृत्स्यात् ॥८॥

[७] जिस भी क्षण में सूर्य ग्रह जिस किसी भी राशि में प्रवेश करे अर्थात संक्रान्ति जब सूर्य की किसी भी राशि में जिस क्षण में लगे अथवा चन्द्रमा ग्रह जिस भी क्षण में किसी राशि में बदले, उस समय सूर्य अथवा चन्द्रमा की शुभ ग्रह अथवा बलवान एक भी ग्रह और कई शुभ ग्रह देखते हों और मार्केट में रुई कपास में तेजी चल रही हो तो सूर्य के तथा चन्द्रमा के बदलने पर मन्दी ही आरम्भ हो जाती है। उस समय चढ़े भाव माल तैयार अथवा वायदा बेचना ही बुद्धिमानी होगी।

[८] जब कभी सूर्य अथवा चन्द्रमा एक राशि में ही हो अथवा किसी भी मास के अमावस्या के आस पास के समय में शनि अथवा राहु का अथवा मंगल का योग बना हुआ भी हो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और तेजी के योग चल रहे हों तो अमावस्या के आस पास के समय से ही मन्दियां चालू हो जाया करती हैं। ऐसा अवसर पर रुई के मार्केट में अधिकतर मन्दी बनती है जबकि और जिन्सों में भी जिनके भाव अच्छे तेज बने हुए हों; मार्केट मन्दी में ही बन जाते हैं उस समय तेजी उछाले माल बेचने से व्यौपारियों को अच्छी लाइन मन्दी की मिला करती है।

[६] रुई की राशि मिथुन होतीहै;मिथुन राशि के आधार पर रुई को तेजी मन्दी के योग मिलाने चाहियें, इस वास्ते यहां मिथुन राशि से कौन ग्रह कहाँ पड़ा हुआ कैसी मन्दी तेजी करेगा यह विचार यहां लिखा जा रहा है।

रुई की मिथुन राशि का संकेत

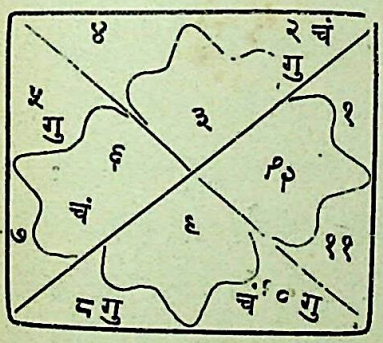

यदा-तूलिकायाश्चराशेः-
शशी चेत्।
चतुर्थेऽष्टमे-द्वादशे-विद्य-
मानः ॥
तृतीयेऽष्टमे-द्वादशे-षष्ट-
भावे-गुरौ-विद्यमाने-
महर्घं-विचिन्त्यम् ॥९॥

अर्थ साफ है कि मिथुन राशि से चन्द्रमा चौथे आठवें बारहवें स्थान में गया हुआ हो। अथवा बृहस्पति ग्रह तीसरे आठवें, बारहवें, षष्ट स्थान में गया हुआ हो तो रुई के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मार्केट में अछी तेजी के योग बना करते हैं।

[१०] यदा-तूलिकायाश्चराशेः-शनिश्चेत्।
चतुर्थेऽष्टमे-द्वादशे-वाऽपिभौमः॥
तृतीयेऽष्टमे-द्वादशे-षष्टभागे।
गुरौ-वा-चशुक्रे-स्थिते-स्यान्महर्घम्॥१०॥

मिथुन राशि से चौथे, आठवें, बारहवें मंगल हो अथवा शनि हो तीसरे आठवें बारहवें, षष्ट स्थान में वृहस्पति अथवा शुक्र स्थित हों तो तेजी होती है।

मन्दी के योग कहते हैं

[११] यदा-तूलिकायाश्च-राशेः-बुधश्चेत्।
द्वितीयेऽस्तगे-पञ्चमे-विद्यमानः॥
तदा-मन्दता-स्वीय-राशेः-सकाशात्।
चतुर्थेऽष्टमे-द्वादशेवा-महर्घम्॥११॥

जब मिथुन राशि से बुध ग्रह-दूसरे और सातवें और पांचवे स्थान में बैठा हुआ हो तो रुई की मन्दी होती है क्योंकि रुई की मिथुन राशि का ग्रह स्वामी बुध ही होता है उसकी स्थिति अपनी राशि से ठीक रहने पर मन्दी के योग बन जाते हैं। चौथे आठवें बारहवें स्थान में बुध रहने से तेजियां ही बना करती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[१२] यदा-तूलिकायाश्च-राशे-र्महीजः ।
त्रिकोणे-गुरुः-केन्द्रगे-विद्यमानः ॥
तदा-मन्दता-तूलिकायां-विचिन्त्या ।
चतुर्थेऽष्टमे-द्वादशे-चा-महर्घम् ॥१२॥

जब रुई की मिथुन राशि से मंगल त्रिकोण में गुरु भी त्रिकोण में और केन्द्र में बैठा हुआ हो तो मन्दा चौथे आठवें में होते हुए तेजी होती है।

एक चान्द्रमास में सूर्यादि वारों का फल

[१] जिस चान्द्र मास में पांच रविवार पड़ जायें तो वर्षा की कमी रहे प्रजा राजा में मत भेद होते हैं। खुश्की से फसल को नुकसान रहता है रोग अशान्ति एवं प्रजा में भय कारक समय रहता है।

[२] जिस मास में पांच सौमवार पड़ते हैं तो वर्षा ठीक होती है उपज भी अच्छी बनती है धान्य वृद्धि ठीक होती है मन्दी कारक समय रहता है। व्यापारिक जिन्सों में अच्छी घटा बढ़ी के साथ रुख मन्दी के बन जाते हैं।

[३] जिस चान्द्रमास में पांच मंगल पड़ जाते हैं तो जनता में आपस में विक्षोभ लड़ाई झगड़ा होता है रक्त विकार से प्रजा में हानि बच्चों में चेचक और स्त्रियों में रक्त विकार प्रदर का रोग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बढ़ जाता है। राजा प्रजा में भी मत भेद होते हैं लाल वस्तुओं में तेजी आती है धान्य भाव भी तेज हो जाते हैं।

[४] जिस मास में पांच बुधवार पड़ जाते हैं तो ये भी शुभ शान्ति कारक होते हैं व्यापारिक जिन्सों के भावों में साधारण घटा बढ़ी रहकर समभाव प्रायः पड़े रहते हैं ऊंची तेजी मन्दी कम चला करती हैं किसी प्रान्त में वर्षा अच्छी और किसी प्रान्त में काम चलाने लायक वर्षा होती है।

[५] जिस मास में पांच गुरुवार पड़ जाते हैं तो पश्चिम प्रान्तों में राज विग्रह एवं अशान्तियां रहा करती हैं। व्यापारिक जिन्सों में घटा बढ़ी के साथ रुख मन्दी का ही बना करता है, रसादि पदार्थों में तेजी का स्वर रहता है।

[६] जिस मास में पांच शुक्र वार पड़ जाते हैं तो वर्षा जहाँ तहां अच्छी होती है प्रजा में सुख शान्तियां रहा करती हैं हर वस्तु केमारकेट में घटा बढ़ी के साथ मन्दियों का रुख बना करता है श्वेत वस्तुओं में रसादि पदार्थों में मन्दी का रुख घटा बढ़ी के साथ होता है प्रजा में आपस के मत भेद दूर हो जाते हैं।

[७] जिस मास में पांच शनिवार पड़ जाते हैं तो हर वस्तु के मारकेट में तेजियों का वातावरण बना करता है प्रजा में अराजकता और धान्यभाव तेज हों। ईरान देश में भंग होने के योग बन जायेंगे। फल शुभ नहीं माना गया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल ग्रहकी व्यापार सम्बन्धि फल व्यवस्था

मंगल ग्रह एक राशि पर १॥ मास ही रहा करता है, परन्तु कभी कभी वक्रीमार्गी अतिचारी होकर ६ महीने तक भी एक राशि पर वह भ्रमण करता है। मंगल ग्रह जब किसी राशि पर अस्त हो जाता है तो अस्त हो जाने के बाद ४ मास में जाकर ही वह उदय होता है, उदय होने के बाद दस मास पीछे वह वक्री होता है और वक्री होने के दो मास बाद मार्गी हो जाता है जैसा कि शास्त्र में कहा है—

भौमस्यास्तादुदयकुटिलर्जत्वमौढ्यं क्रमात्स्यात् ।
मासैर्वेदैरथदशमितैर्लोचनाभ्यां च दिग्भिः ॥

अर्थ - साफ है कि अस्त होने के ४ मास बाद वह उदय होता है। यह कोई जरूरी नहीं है कि जिस राशि पर अस्त हो उसी राशि में उदय भी हो, किसी भी राशि पर जब मंगल अस्त होगा तो ४ मास बाद ही आप उसे उदय हुआ आकाश में देख सकेंगे और उदय होने के दस मास बाद ही वह वक्री होगा। वक्री होना चाहे जिस भी राशि पर मंगल का आकर पड़े; और वक्री होने के दो मास बाद ही वह मार्गी होता है और मार्गी होने के दस मास बाद ही वह अस्त होता है। इस प्रकार मंगल ग्रह की चाल चलती है, यह गणित सिद्धान्त का मत है; वैसे सामान्यतः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१।। मास तक ही एक राशि पर भोग मंगल का बना करता है, यद्यपि वक्री मार्गी उदय अस्त होने की चाल अपने नियमानुसार ही है जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, किन्तु १ राशि पर भी ६ मास तक मंगल की चाल तीसरे चौथे वर्ष गणित के नियमानुसार ही बनती रहती है। उसका कारण यह है कि जब मंगल किसी राशि में प्रवेश करता है तो वहां से उसकी चाल यदि धीमी पड़ जाती है तो पर्याप्त समय उसमें चला जाता है और फिर उस राशि में मन्दी चाल घटते घटते कम होकर फिर वक्र गति बन जाने से उसी राशि पर पीछे हटने लगता है। और उसी राशि में फिर मार्गी होता है तब फिर काफी समय एक ही राशि पर बीत जाता है जैसा कि इस वर्ष सन५६ में२२ मई को मंगल कुम्भ राशि मेंप्रविष्ट हुआ। उस समय मंगल की चाल ३० कला ५० विकला प्रतिदिन की थी, मध्यमागति मंगल की "असृग्न इन्दुरामास्तर्कोश्विनः" ३१ कला २६ विकला स्वभाविक होती है, स्पष्टागति का अर्थ "अद्यतन स्पष्टग्रह श्वस्तनस्पष्टग्रहयोरन्तरं स्पष्टागतिः" अर्थात आज का उदय के समय का स्पष्ट ग्रह और कल के दिन का औदयिक स्पष्ट ग्रह का अन्तर ही स्पष्टागति हुआ करती है, यह पचांगकर्ता विद्वान् ज्योतिष के जानने वाले इस प्रकार की चाल की उपपत्ति को अच्छी प्रकार समझते हैं।

गणित सिद्धान्त के नियमानुसार इस वर्ष भी जब मंगल ग्रह २२ मई को कुम्भ राशि में आया था तो उसकी स्पष्टागति ३०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कला ५० विकला थी, वह चाल बराबर घटती गई और २८ अगस्त मिती भादों बदी सप्तमी जन्माष्टमो पर शून्य कला ४५ विकला के करीब रह गई है और २८ अगस्त को फिर मंगल बक्री हो गया, वहाँ मंगल की स्पष्टी १० राशि २६ अंश ५६ कला कुछ विकला थी, जो कुम्भ राशि के ही अंश थे बाद को मीन राशि पर मंगल चला जाता किन्तु वह वक्री चाल में चला वहां ३० सितम्बर को ही वह हो गया है २१ नवम्बर को मंगल मीन राशि में पहुँचा है, अतः अपनी मान्द्यगति एवं चाल से जब कभी ऐसा हो जाता है कि एक राशि पर ही कमती बढ़ती ६ मास तक अपना योग बना लें तो उस पर मार्केट में भी काफी उथल पुथल बन जाया करती है, इस २२ मई से २१ नवम्बर के ६ मास में कुम्भ राशि के मंगल के टाइम में बृहस्पति भी सिंह राशि पर ही चल रहा है, जबकि सिंहस्थ बृहस्पति के कुम्भ राशि के मंगल के साथ पूर्ण वेध बना हुआ है, सिंह का गुरु भी मन्दी कारक होता है—जैसा कि हमने व्यापार विज्ञान में स्पष्ट लिखा है।

जब मंगल कुम्भ में हों सिंहस्थ गुरु भी उस पर दृष्टि हो तो फसल तेज रहा करती है, और जब मंगल का अंकुश योग लग जाता है तो मार्केट में फसल के माल में तेजियां रुक कर रुख मन्दी का ही बन जाया करता है, ठीक २२ मई को जब मंगल ग्रह कुम्भ में आया तभी से गल्ला, सरसों, अण्डी के मार्केट ने अपने ऊंचे से ऊंचे भाव बना लिये थे और २२ नवम्बर से अंशुक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

योग लगने पर मन्दी का वातावरण धीरे धीरे चलने लगेगा।

अंशुक योग जब आषाढ़ी की फसल समाप्त होने के बाद लगता है तो फसल में मक्का, तिलहन के भाव ऊंचे से ऊंचे स्तर के रहा करते हैं। अंशुक योग के लगने पर मार्केट का रुख मन्दी में पड़ जाया करता है और धीरे धीरे मन्दियां चला करती हैं, जो कि तेजियों चे उछाले लेते हुए ही मार्केट मन्दियों में जाया करता है। लाइन तेजी की इस नियम में २५ मई को गल्ले, तिलहन की समाप्त होकर मन्दी की तरफ बनी है जिसको बाबत मैंने ८ जून तक मन्दी की वार्ते भी लिखीं थीं। अब यह लाइन गिरते चढ़ते २१ नवम्बर तक तो विशेष मन्दी में नहीं आवेगी परन्तु रुख ऊंची तेजी का नहीं होगा। जब मंगल ग्रह मीन राशि में २१ नवम्बर को होगा तो अंशुक योग की मन्दी तो समाप्त हो जावेगी।

मीन राशि का मंगल बृहस्पति के घर में ही तो रहेगा, कन्या-राशि में बृहस्पति की दृष्टि रहेगी, बृहस्पति की दृष्टि का मंगल पर रहना भी मार्केट में तेजियों को रोकेगा. यह चाल भी काफी समय तक जावेगी, जिसका विवरण अगले अंकों में करेंगे फिर भी व्यापारियों को यह ध्यान रखना होगा कि मार्केट में इन ऊंचे भावों में गल्ला, सरसों, अलसी, अण्डी का माल खरीदा हुआ स्टाक किया हुआ जिन लोगों के पास है उसमें नुकसान न लगे तैयारी पेटे माल वायदा भी बेचा जाये, अरहर, गुवार, चना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वायदा बेचने में आवेगा जिसकी सावधानी व्यापारियों को रखनी है। अरहर, गुवार, अण्डी, मूँगफली, रुई, वारदाना, सरसों, तेल, चना आदि वायदों को तैयार पेटे बेचने पर भविष्य में २०१३ के उत्तरार्ध में जो मन्दियां होंगी उनका चांस व्यापारियों को साधना चाहिये।

अंशुक योग का फल

कुम्भ का मंगल जो इस समय २२ मई को आ चुका है, यह १॥ मास की एक राशि की चाल को छोड़कर २१ नवम्बर तक कुम्भ राशि में ही वक्री अतिचारी रहता हुआ चक्कर काटता रहेगा, २२ मई से २१ नवम्बर तक मंगल की एक ही कुम्भ राशि पर गतिविधि ६ मास तक मारकेट को बड़ी विचित्र स्थिति में बनावेगी, यहां समझदारी से चांस साधने की जरूरत है, जब जब मंगल ऐसी चाल बनाया करता है तो फसल गल्ले की सरसों अलसी, अन्डी की तेजी में ही रहा करती है,।

कुम्भे गतः क्षितिसुतश्च विलोम-गामी
सिंहाश्रितेन गुरुणाऽपि विलोक्यमानः।
मान्द्यं करोति नियतं प्रथमं महर्घम्
ज्ञेयोऽशुंकः कुज गुरौ शनिराहु दृष्टेः ॥१॥

अर्थ—जबकि कुम्भ राशि में मंगल ग्रह चल रहा है और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिंह राशि के बृहस्पति के साथ उसका पूर्णवेध है अर्थात् कुम्भ राशि में स्थित मंगल ग्रह को बृहस्पति ग्रह पूर्ण दृष्टि से देखता हो और शनि राहु के योग से भी मंगल देखा जाता हो, तो अंशुकनामक योग होता है इस योग में व्यापारिक वस्तुओं में बड़ी भारी मन्दियां आया करती हैं और पहिले तेजी हो लेती है बाद में मन्दी आया करती है, व्यापारी बन्धुओं को हमारे द्वारा सम्पादित 'व्यापार विज्ञान' के इस अंशुक नामक योग को खास तोर पर इस समय के वास्ते सावधानी से समझना चाहिए। ठीक अब २२ मई से २१ नवम्बर तक यह अंशुक नामक योग चलेगा जो मंगल ग्रह सदा एक राशि पर डेढ़ महीना ही रहा करता है वह यदि विचित्र गति द्वारा ६ मास तक एक ही राशि का भोग करता रहे और बृहस्पति से उसका बराबर बेध भी बनता रहे तो शनि राहु के योग की दृष्टि से मारकेट में बड़ी भारी उथल पुथल होती है।

अँशुक योग में मङ्गल की चाल

अंशुक नामक योग में भी बीच बीच में मंगल की अश्रु मुखी चाल बनती रहती है इस चाल में भी बहुत सी व्यापारिक जिंसों में बहुत ऊंचे भी भाव हो जाते हैं।

मंगल ग्रह की यह अश्रुमुखी चाल भी विचित्र तेजी का कारण बनती है अश्रुमुखी चाल में मंगल जिस नक्षत्र में अस्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होकर ग्यारहवें नक्षत्र में उदय को प्राप्त होता है तब भी वह बड़ी भयानक तेजियां किया करता है।

मंगल की चाल एक राशि पर अथवा दो राशियों के सम्बन्ध से ७ अथवा आठ मास तक भ्रमण करने की स्थिति मेंभी चलती हैं तो भी अच्छी तेजियां मारकेट में बन जाती हैं. सम्वत्सर २०१६ में आगे आश्विन् मास में भी जब मंगल कर्क राशि में पहुंचेगा वह शनिवार में कर्क राशि में प्रविष्ट होगा वहांसे मंगल कर्क राशि में चलता हुआ पौष मास में १ मास के वास्ते सिंह राशि में पहुंचेगा बाद में सिंह राशि में १ अंश पर ही वक्री होकर वह फिर कर्क राशि पर ही आ जाता है वहां सम्वत्सर २०२० विक्रमी में ज्येष्ट बदी दशमी तक कर्क पर ही रहता है वहां से सिंह राशि में पहुंचेगा। इतने लम्बे टाईम में राहु का योग मंगल को प्राप्त रहेगा और मकर राशि के शनि के साथ लम्बे टाईम के वास्ते ही उसका वेध चलेगा ऐसी अवस्था में व्यापार सम्बन्धि जिन्सों के मारकेट बराबर भयानक तेजि में चलेंगे।

मङ्गल ग्रह की मुख्य जिन्सें

गुड़, शक्कर, चीनी लाल रंग की वस्तुओं में तथा घृत, तेल रसादि पदार्थ धान्य, गेहूँ, चना, जौ, मटरा, एवं लाल मिर्च, लालरंग की धातु इत्यादि जिंसों पर मङ्गल का प्रभाव पड़ता है। मंगल का ग्रह स्वयं बहुत निर्मल लाल वर्ण का स्पष्ट किरणों वाला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तांबे जैसी कान्ति वाला होता है। जैसा कि बराह मिहिरा चार्य ने मंगल का स्वरूप बताया है।

विपुल-विमलमूर्तिः-किंशुकाशोकवर्णः ।
स्फुट-रुचिरमयूखस्तप्त-ताम्र-प्रभाभः ॥
विचरति-यदिमार्ग-चोतरं-मेदिनीजः ।
शुभकृदवनिपानां-हार्दिदश्च-प्रजानाम् ॥१॥

यदि यह मंगल उत्तर वीथिका के नक्षत्रों पर जिन का वर्णन पहिले किया जा चुका है निकले अथवा उनसे भी उत्तर में निकले तो सुवृष्टि आदि से प्रजा एवं राजा दोनों के वास्ते शुभ रहता है उस समत वस्तु मात्र में मन्दी के ही भाव बन जाया करते हैं यदि वह मंगल श्याम वर्ण के आकार में रुक्ष-ज्वाला सदृश,शिखा वाला क्रूर होते हुए दक्षिण मार्ग के नक्षत्रों में अथवा उस से भी दक्षिण में निकले तो प्रजा तथा राजा दोनों के वास्ते हानि कारक रहा करता है अनावृष्टि कारक होता है एसी अवस्था में प्रत्येक जिन्सों में व्यापार-सम्बन्धि जिन्सों के मारकेट तेज हो जाते हैं।

विशेष चांस मंगल ग्रह द्वारा किन किन वस्तुओं में कैसे बनने संभव हो सकते हैं ये विचार भी हम आगे "व्यापार विज्ञान" नामक इसी ग्रंथ के दूसरे भाग में भी करेंगे। प्रथम भाग में जो विषय हमें देना वही यहां स्पष्ट कर रहे हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मङ्गल ग्रह का अन्य ग्रहों के साथ सम्बन्ध

जब मंगल ग्रह पाप ग्रह के साथ योग करता है और पाप ग्रहों से ही दृष्टि सम्बन्ध रखता है शुभ ग्रह से दृष्टि सम्बन्ध उसका जब कभी नहीं होता है तो प्रत्येक व्यापार सम्बन्धि मार्केट, तेज हो जाते हैं। जब कभी मंगल ग्रह शुभ ग्रहों के साथ होता है अथवा शुभ ग्रहों से दृष्टि सम्बन्ध बनाता है तो तब मार्केट भी मन्दी में ही जाते हैं यह विषय व्यापारियों को ध्यान में रखने का है।

महीजो-यदा-पापदृष्टो-युतो-वा ।
महर्घं-तदा-स्यात्सदा-वस्तु-जाते ॥
यदा-स्याद्धि-भौमश्शुभैः-पूर्णदृष्टः ।
युतो-वा-शुभैः-मंदता-वेदनीया ॥२॥

अर्थ साफ है शुभ ग्रहों के योग से मंगल मन्दी में ही सहयोगी होता है पाप ग्रहों के योगों में तेजी कारक ही होता है।

दुतर्फा घटा बढ़ी के योग

यदा-कन्यकायां-महीजः-सराहुः ।
धनस्थेन-सूर्यात्मजेनापि-दृष्टः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सितोऽस्तं-गतोवा-विलोभिः सद्वर्यः ।
समर्घं-महर्घं-द्वयं-स्यात्तदानीम् ॥१॥

यदा-स्यात्सितस्य-क्षयत्वांद्वलस्थ ।
तिथेश्चत्रयो-त्रा-दशस्थास्ति पक्षः ।
शनिः स्याद्यदा-मन्दगामिश्च-मार्गी ।
समर्घं-महर्घं-द्वयं-स्थात्तदानीम् ॥२॥

अर्थ—जब कन्या राशि में मंगल ग्रह राहु के साथ हो और धन राशि में स्थित शनि से पूर्ण दृष्टि से देखा जाता हो शुक्र ग्रह वक्री अवस्था में सूर्य के साथ हो वैसे भी अस्त हो तो व्यापार सम्बन्धि जिन्सों के भाव दुतर्फा अच्छी घटा बढ़ी में बनते हैं ॥१॥

जब कभी भाद्रपद महीने के शुक्ल पक्ष का क्षय दो तिथियां टूट जाने से हो जाय तो त्रयोदश दिन का ही पखवाड़ा हो जाने से शनि ग्रह मन्दी गति को धारण करके मार्गी हो तो दुतर्फा घटा बढ़ी के भाव मार्केट में रहते हैं वैसे तेरह दिन का पखवाड़ा होने से खराब माना जाता है "त्रयोदश दिने-पक्षे-तदासंहार्ते-जगत्" तेरह दिन के पखवाड़े में संसार में हानियां होती हैं। फिर भी ग्रह चाल मन्दी की भी बनती हैं अतः दुतर्फा मार्केट चलेंगे। ये दोनों ही योग सम्वत्सर २०१६ विक्रमी के भाद्र पद मास में आवेंगे वहां मंगल राहु का योग कन्या राशि में ही चल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहा है शनि भी धन में है और भादों सुदी का पखवाड़ा भी वहां तेरह ही दिन का पडता है अतः प्रत्येक व्यापार सम्बन्धि वस्तुओं के मारकेट वहां दुतर्फा घटा वढ़ी में ही चलेंगे।

विशेष योग

यदा-वाऽश्विजि-चेद्गता-पञ्चवाराः ।
गुरोर्वा-सितस्य-शुभाचान्द्रमासे ॥
बुधो-राहु-युक्तो-महीं-जः-ससूर्यो ।
सदा-कन्यकायां-समर्घं-विधत्ते ॥१॥
बुधोऽस्तं-गतः कन्यकायां-जवेन ।
ततो-वा-तुलायां-प्रती-च्यामुदेच्च ॥
यदा-तत्र-भौमः-सराहुः-श्चसूर्यः ।
तदा-मन्दतायां-भवेद्वा-महर्घम् ॥२॥

अर्थ जब आश्विन् के महीने में पांच शुक्रवार और पांच गुरुवार पड़ जायें और सूर्य, बुध, राहु, मंगल एक जगह कन्या राशि में मिल रहे हों तो अच्छी मन्दी के योग बन जाया करते हैं। साथ के साथ कन्या राशि में बुध अस्त होकर शीघ्र गति द्वारा तुला राशि में यदि उदय को प्राप्त हो जावे तो जब भी वह तुला में उदय को प्राप्त होता है तभी से सरसों अण्डी, अलसी रुई पाट; वारदाना, गल्ला, गुड; रसादि पदार्थ तेज होने लगते

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं। ये दोनों ही योग सं० २०१६ विक्रमी में आश्विन् मास में बन रहे हैं अतः उस समय व्यापार सम्बन्धि जिंसों में मन्दियां रहेंगी और आश्विन् शुक्ला में फिर व्यापार सम्बन्धि सिन्सों के मारकेट तेजी में बन जावेंगे।

भौमोयुतो-यदि-दिवाकर-राहु-योगे ।
मन्देन-तत्रधनराशि-गतेन-दृष्टः ॥
पीडा करो-जनपदेषु-प्रजा-जनेषु ।
व्यापार-वस्तुषु-तदा-कुरुते-महर्घम् ॥३॥

अर्थ जब मंगल सूर्य राहु एक जगह कन्या राशि में हों शनि धन राशि को उन्हें देखता हो तो जनता में पीड़ा करता है प्रजा में रोग अशान्ति व्यापारिक वस्तुओं में तेजी कारक योग बनता है यह योग भी सम्वत्सर २०१६ विक्रमी के आश्विन् शुक्ला पक्ष में रहेगा।

यदा-मार्ग-शीर्षे-शराः-सोमवाराः ।
शराः-भौमवाराः, ग्रहाः-पञ्च-योगाः ॥
बुधेनापिसूर्येण-भौमेन-युक्ताः ।
गुरोस्तत्र-योगान्महर्घ महत्स्यात् ॥४॥

अर्थ—जब मार्ग शीर्ष मास में पांच सौमवार और पांच मंगलवार पड़े और पांच ही ग्रहों का योग एक जगह हो जाये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध सूर्य चन्द्रमा मंगल ये ग्रह एक जगह हों गुरु भी उनके साथ हो तो मारकेट हर वस्तु के बड़ी घटा बढ़ी में बनते हैं उस समय आरम्भ में मन्दियां रहती हैं वहां खरीदना चाहिये फिर व्यापारिक जिंसें तेजी में जाती हैं, बाद में बेचना चाहिये खरीद कर माल बेचने की नीति उस समय अपनाने से लाभ होता है।

यह योग सम्वत्सर २०१६ विक्रमी में मार्ग शीर्ष मास में भी बनेगा जब भी कभी ऐसे योग आवें मारकेटों में बड़ी उथल पुथल होती है पहिले मन्दे भाव होकर बाद में तेजियाँ आ जाती हैं।

यदा-भौम-सौम्य-ग्रहाः-शुक्र-गुरवो ।
समे-मार्गिणो-वृश्चिकांशैः स्थिताः-स्युः ॥
धनस्थेन-मन्देन-सूर्येण-सा-कम् ।
समं-राशि-कूटान्महर्घं-प्रकुर्युः ॥१॥

अर्थ—मंगल, बुध, शुक्र, गुरु ये ग्रह एक ही वृश्चिक राशि में मार्गी होकर स्थिति रखते हों और धन राशि में स्थित शनि-सूर्य से उनका राशि कूट योग बन रहा हो, तो तेजी कारक होते, हैं। यह योग सम्वत्सर २०१६ विक्रमी के पौष मास में भी बनेगा जब भी ऐसा योग बने व्यापार सम्बन्धि वस्तुओं के भावों में अच्छी तेजियां आया करती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनस्थौ-शनीज्यौ-मृगेशुक्र-भौमौ ।
दिवानाथ-सौम्यौ-घटे-विद्यमानौ ॥
यदः-फाल्गुने-मन्द-वाराश्चपञ्च ।
तदा-वस्तुमात्रे-भवेत्स्यान्महर्घम् ॥२॥

जब धन राशि में वृहस्पति और शनि हों, और मकर राशि में शुक्र और मंगल ग्रह हों तथा सूर्य बुध ये दोनों ग्रह कुम्भ राशि में ही विद्यमान हों, तो वस्तु मात्र में तेजी के योग बना करते हैं यह योग सम्वत्सर २०१६ विक्रमी में फाल्गुन मास में बन रहा है व्यापारियों को वहां सावधानी से अपने व्यापार को करने की दृष्टि रखनी चाहिये, जब भी ऐसे योग बनेंगे सभी प्रकार के मारकेट तेज हो जाया करते हैं।

राहु केतु सञ्चार व्यवस्था

राहु जिस राशि पर रहता है केतु उस से सातवीं राशि पर रहता है पाप ग्रह दोनों ही माने गये हैं, एक राशि पर १॥वर्ष तक का भोग काल राहु का रहता है। उतना ही सातवें स्थान पर केतु का समझना चाहिए ।

मेषादि बारह राशियों पर राहु स्वतन्त्र क्या. फल करता है शुभ ग्रहों तथा पाप ग्रहों के साथ उसकी स्थिति कैसी रहती है। यह विचार यहां स्पष्ट करते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदा-राहु-मेषे-गतो-दोष-कर्ता ।
स्थितो-वा-शुभैः-शोभनं-तत्फलं-स्यात् ॥
स-पापैः-सदा-हानि-मित्येव-कूर्यात् ।
महर्घ-पणौ-वस्तु-जाते-समस्तम् ॥१॥

अर्थ—जब मेष राशि में राहु होगा पाप ग्रह मंगल की राशि में रहने के कारण वही शुभ फल देने में स्वतन्त्र रूप से असमर्थ होता है यदि अधिकांश शुभ ग्रहों के साथ योग कारी होगा तो शुभ फल देगा और यदि पाप ग्रहों के साथ बैठा हुआ होगा तो हानि कारक तेजी कारक रहेगा वस्तु मात्र में तेजीयां होंगी लाल वस्तुओं में धातुओं में भी राहु का प्रभाव पड़ता है। क्रूर ग्रहों के साथ राहु का योग मेष राशि में होने से दुर्भिक्ष कारक ही हुआ करता है।।१॥

वृषे-स्याद्र-तश्चे-ज्जेनेषु-प्रपीडाम् ।
तथा-धान्य-तैलादिषु-स्यान्महर्घम् ॥
शुभैः-संयुतैः-स्यात्समर्घ-तदानीम् ।
भवेद्वामहर्घ-खगै-पाप-युक्तैः ॥२॥

अर्थ—जब वृष राशि में राहु होता है जनता में रोग अशान्ति और अराजकता बढ़ती हैं। सातों, धान्य, रसादि पदार्थ तेज हो जाते हैं यदि शुभ ग्रहों के साथ राहु का योग होता है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो तेजियाँ कम होती है पाप ग्रहों के साथ विशेष तेजियां बढ़ जाया करती है, अतः वृष राशि में स्वतन्त्र राहु का फल तो मध्यम ही है मगर शुभ ग्रह तथा पाप ग्रहों के योग से फल तेजी मन्दी का समझदारी से जानना चाहिये ॥२॥

यदा-युग्म-राशौ-भवेद्राहुयोगो ।
घृतं-सर्वधान्यं-रसं-स्यात्समर्घम् ॥
शुभैः-संयुतैः-स्यात्समर्घं-विशेषात् ।
भवेन्न्यूनमर्घं-खगैः-पापयुक्तैः ॥३॥

अर्थ—जब राहु ग्रह मिथुन राशि में रहता है तो घृत सातों धान्य रसादि पदार्थ मन्दे होते हैं शुभ ग्रहों के योगों से विशेष मन्दियां बनती हैं पाप ग्रहों के योग से विशेष तेजी नहीं बनती हैं। मिथुन का राहु शुभ होता है ॥३॥

यदा-कर्क-राशौ-भवेत्सैंहिकेयः ।
समर्घः-स्वर्णे-तथा-लोहधातौ ॥
महर्घं-भवेत्षष्टमासे-व्यतीते ।
शुभैश्चापि-पापैः,-समर्घं-महर्घम् ॥४॥

अर्थ—जब कर्क राशि में राहु होता है तो सोना चांदी शेयर्स लोहा आदि धातु समस्त रसादि पदार्थ एवं धान्यों में वह अपने कर्क राशि में रहने के स्वभाव से मन्दापन लाता है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और छः मास बीतने पर फिर तेजियां उपरोक्त जिन्सों में काफी चमकती हैं शुभ ग्रहों के योग से भी मन्दापन बढ़ता है पाप ग्रहों के योग से साधारण तेजियां ही बढ़ती है ॥४॥

यदा-सिंह-राशौ-गतः-सैंहिकेयः ।
समर्घं-समस्तं-तदा-वस्तु-जातम् ॥
गते-पञ्चमासे-व्यतीतेऽपि-षष्टे ।
भवेल्लाभपूर्णं-चतुस्त्र्यागुणश्च ॥५॥

अर्थ—जब सिंह राशि में राहु लगे उस समय वस्तु मात्र में मन्दी के योग होते हैं, उस समय की व्यापार सम्बन्धी वस्तुयें खरीदने से पांच अथवा छः मास बीतने पर बेचने से चौगुना लाभ होता है। पाप ग्रहों के साथ यदि राहु होगा तो तेजी बहुत अच्छी बनेगी शुभ ग्रहों के साथ होगा तो मन्दा कम ही होगा। किराने की वस्तुओं में खास तौर पर सिंह के राहु में तेजी आया करती हैं। जैसाकि अन्य आचार्यों का भी मत है ॥५॥

यदा-सिंह-गतो-राहुः-श्रृंगवेरकुट्टन्नयम् ।
षष्टे-मासिव्यतीते-च-लाभश्चैव-चतुर्गुणः ॥१॥

अर्थात सिंह राशि के राहु में सोंठ, मिरच, पीपल, अदरख खरीदने से षष्ट मास में चौगुना लाभ होता है।

यदा-कन्यकायां-भवेद्राहुयोगो ।
महर्घं-भवेद्वस्तुमात्रं-च-स्वल्पम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सपापैः-महर्घं-महत्स्यात्तदानीम् ।
शुभैः-स्यात्समर्घं-तदा-न्यूनमेव ॥६॥

अर्थ—जब कन्या राशि में राहु का योग बने तब वस्तु मात्र में अच्छी घटा बढ़ी होती है रुख साधारणतया तेजी का रहता है यदि पाप ग्रहों के साथ योग होता है तो अच्छी तेजियां बन जाया करती हैं। यदि कन्या राशि का राहु शुभ ग्रहों के साथ होता है तो साधारण ही मन्दियां आती हैं किराने की वस्तुओं में खास तोर पर कन्या के राहु में तेजियां हुआ करती हैं जैसा कि शास्त्रों में लिखा है ॥६॥

यदा-कन्यास्थितो-राहुः-धात्री-फलं-च-पिप्पली ।
मासमेकं-द्वयं-चैव-महर्घं-त्रिगुणं-भवेत् ॥

अर्थ साफ है कि कन्या के राहु में आंवला पिपली में दो मास बीतने पर बड़ी अच्छी तेजी आती है।

यदा-स्यातुलायां-भवेद्राहुयोगो ।
महर्घैः-तदा-वस्तु-मात्रे-प्रकुर्यात् ॥
सपापैः-महर्घं-महत्स्यात्तदानीम् ।
शुभैः-स्यात्समर्घं-तदा-न्यूनमेव ॥७॥

अर्थ—जब तुला राशि में राहु का योग हो तो वस्तु मात्र में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेजी के योग बना करते हैं यदि पाप ग्रहों का योग उस समय होगा तो विशेष तेजियां बना करती हैं,शुभ ग्रहों के योगसे मन्दी बल्के कम आती है यथा शास्त्रान्तरों में भी लिखा है कि-

यदा-राहु-स्तुलां-याति-क्रूरः-क्रूर-समन्वितः ।
मेदिन्यां-सस्यनाशः-स्यादुर्भिक्षं-तत्रदारुणम् ॥८

अर्थ साफ है कि पाप ग्रहों के योग से खेतियों का नाश होने से सातों धान्य तेज हो जाते हैं जनता दुखी रहती है ॥ ८॥

यदा-वृश्चिके-राहुः-योगं-विधत्ते ।
तदा-तत्रयोग-क्षणे-स्यात्समर्घम् ॥
महर्घं-व्यतीते-भवेत्पष्टमासे ।
तदा-वस्तुजाते-ग्रहाणां-हि-योगात् ॥९

अर्थ—जब वृश्चिक राशि में राहु का योग बने तो उस समय तो वस्तु मात्र में मन्दी के योग रहा करते हैं तब हर वस्तु की खरीददारी कर लेना बुद्धिमानी होती है षष्ट मास व्यतीत होने पर वस्तु मात्र में तेजियां चमक उठती हैं पाप ग्रहों का योग यदि और भी होजाये तो वस्तु मात्र में चौगुना लाभ होता है शुभ ग्रहों के योग से मन्दियां फिर भी कम ही रहती हैं।

धनौ-राहु-योगो-यदा-स्यात्समर्घम् ।
समर्घे-क्रये-स्यात्कृते-लाभपूर्णम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यतीते-यदा-पञ्चमासे-ऽपि-षष्टे ।
हयानां-क्रयात्-कुञ्जराणां-वृषाणाम् ॥१०॥

अर्थ—जब धन राशि में राहु लगता है उस समय चौपायों का भाव मन्दा रहता है हाथी, घोड़ा, बैल, भैंस, गाय, बकरी भेड़ आदि चौपायों को खरीदने से पांचवें षष्ठवें मास में बेचने से अच्छा नफा मिलता है अन्य जिन्सों की भी खरीद लाभ देती है।

यदा-नक्रगो-लाभदः-सैंहिकेयः ।
क्रये-धातुनो-विक्रये-मास-तूर्ये ॥
तृतीयेऽथवा,-पाप-योगान्महर्घम् ।
शुभैःस्यात्समर्घं-तदा-न्यूनमेव ॥११॥

अर्थ-जब मकर राशि में राहु आता है सब प्रकार से सातों धातुओं में मन्दा बना रहता है लोहा, सोना, चांदी, कपास, तांबा, पीतल, की उस समय की खरीद करने से चौथे तथा तीसरे माह में उसे बेचने से बहुत अच्छा लाभ होता है यह योग भी पूर्ण परीक्षित है यदि मकर के राहु के साथ पाप ग्रहों का योग बन जाये तो इण्डस्ट्रियल शेयरों में बड़ी चमक आती है सभी प्रकार की मशीनरी तथा धातुओं के सामान तेजी पकड़ जाते हैं शुभ ग्रहों के योग में जबकि मन्दीयां कम ही आती हैं। बारदाने में भी बड़ी अच्छी तेजियां बन जाती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदा-कुम्भ-राशिं-गतः-सैंहिकेयः ।
सपापः-सदा-धान्य-सुत्रादिकेषु ॥
महर्घात्तदा-लाभदः-षष्टमासे ।
शुभैः-स्यात्समानं-खगैः-लाभदं स्यात् ॥१२॥

अर्थ—जब कुम्भ राशि में राहु होता है तो धान्य तथा सूत्र, रुई, पाट, वारदाने में खरीदने का अवसर देता है। इस खरीदे माल को फिर ६ मास बीतने पर बेचने से अच्छा लाभ होता है शुभ ग्रहों के योग में समान ही लाभ होता है।

मीनेगते-सति-च-राहु-शुभाधियोगे ।
धान्यस्यसंग्रह कृते-द्विगुणं-फलं-स्यात् ॥
दुर्भिक्ष-पीडितजनाः-प्रभवन्ति-देशाः ।
पापग्रहै-र्युतिकरैश्चमहर्घकं स्यात् ॥१३॥

अर्थ—जब मीन राशि मे राहु के साथ शुभ ग्रहों का योग हो तो धान्य संग्रह करने से कालान्तर में लाभ होता है पाप ग्रहों के योग से देश में दुर्भिक्ष हो जाता है व्यापार सम्बन्धि वस्तुओं में अच्छी तेजियां आती हैं यह भी योग परीक्षित है।

केतु विचार विमर्श

सूर्यास्त होने के बाद आकाश मण्डल में जो अग्नि की शिखा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के समान लपटें दिखाई दिया करती हैं। उनको केतु के नाम से पुकारा जाता है, केतु एक नवां उपग्रह ही है राहु जिस राशि पर रहता है उस से सातवीं राशि पर केतु रहा करता है। केतु एक प्रकार के उत्पात सम्बन्धि योग ही होते हैं. उल्कापात होना दिग्दाह होना भूकम्प होना ये सब केतु के उत्पात सम्बन्धी ही लक्षण होते हैं। अनावृष्टि,अति वृष्टि विशेष हिमपात होना विशेष गर्मी होना महा मारी रोगोप द्रव फैलना ये सब भी केतु जन्य उत्पातों के द्योतक होते हैं, इसकी पहचान यह होती है कि जब किसी नक्षत्र में कई पाप ग्रह एक जगह आ जावें तो वह नक्षत्र क्षत अथवा आहत कहलाता है नक्षत्र के आहत होने से अवश्य उत्पात की संभावना बनती है। यह भी विद्वानों के विचारने की बात है कि विभिन्न ऋतुओं में जैसी भी जो ऋतु होती है उसी ऋतु के अनुरूप ही उत्पात भी होते हैं। वर्षा ऋतु के अति वृष्टि, अनावृष्टि ये उत्पात हैं शरद ऋतु में विशेष हिमपात होना झन्झावात चलना उत्पात है गर्मी में विशेष गरमी पड़ना भी उत्पात ही माना गया है, ये सब विभिन्न ऋतुओं के उत्पात केतु जन्य उत्पात कहलाते हैं, श्रावण तथा भाद्रपद मास में जो केतु होते हैं वे वारुणनाम के हैं जो वर्षा कारक होते हैं पाप ग्रह से पीडित होने की अवस्था में वारुण नामक केतु उत्पात कारक बन जाते हैं शुभ ग्रहों के सम्बन्ध से वे शुभ वर्षा कारक ही रहते हैं।

येकेतवो-नभसि श्रावण-मासिजाता।
स्ते-वारुणाः-सपदि-वृष्टिकराः-पृथिव्याम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धान्यादिकं भवति तूलिकया समेतम् ॥
पट्टादिभिर्गुड रसादियुतं समर्घम् ॥१॥

अर्थ—जो केतु भाद्रपद तथा श्रावण मास में उत्पन्न होते हैं वे वारुण संज्ञक कहलातें हैं भूमि पर अच्छी वर्षा उस समय होती है सातों धान्य रुई, कपास, सूत्र, पाट, बारदाना, गुड़ रसादि पदार्थ सब ही सस्ते हो जाते हैं। यदि पाप ग्रहों से पीडित होंगे तो अनावृष्टि अतिवृष्टि कारक होने से भी त्रुटियां हो जाती हैं। ये केतु दश होते हैं।

ये केतवोऽश्विजि च कार्तिक मासिजाता ।
ते सूर्यजाः पशु विनाशकराः हि तैस्फाः ॥
दुर्भिक्षदाः मृति करोः बहु शोकदाः स्युः ।
वस्तूँनि वा विपणिगा नि महर्घयन्ति ॥२॥

अर्थ—जो केतु आश्विन् और कार्तिक मास में उत्पन्न होते हैं वे सब सूर्य के पुत्र कहलाते हैं जो 'तैस्फ' नाम से प्रसिद्ध होते हैं ये पशुओं, चौपायों में बीमारी फैलाते हैं। मृत्यु रोग महामारी दुर्भिक्ष तथा शोक कारक, हानि कारक होते हैं पाप ग्रहों के सम्बन्ध से विशेष हानि के संकेत जानने चाहिए उस समय वस्तु मात्र जो भी बाजार में बिकती है तेजी कारक ही होती हैं। ये केतु चौदह होते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदा-पौष-मासे-तथा-मार्ग शीर्षे-
चतुस्त्रिंशदः-केतवो-वह्निपुत्राः ॥
सदा-तेऽग्निदाहं-तथा-चौरभीतिम् ।
समन्तादनावृष्टि-दोषं-प्रकुर्युः ॥३॥

अर्थ—जब पौष तथा मार्ग शीर्ष मास में ३४ संख्या के केतु उदय होते हैं तो वे अग्नि के पुत्र कहलाते हैं अग्नि काण्ड चौर भय अनावृष्टि तथा रोग कारक होते हैं, व्यापार सम्बन्धी योगों में तेजियों का वातावरण एसी अवस्था में बनता है।

यदा-माघ-मासे-तथा-फाल्गुने-च।
यमस्यात्मजाः-केतवश्चोदयन्ति ॥
तदा-धान्य-नाशं-तथा-विग्रहं-च।
प्रकुर्यु-र्विनाशं-महर्घं-महत्स्यात् ॥४॥

अर्थ—जब माघ तथा फाल्गुन मास में केतु उदय को प्राप्त होते हैं तो यम पुत्र कहलाते हैं उनकीसंख्या नौ होती हैं उस समय धान्य का नाश राजाओं में विग्रह, दुर्भिक्ष कारी होते हैं तथा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी के योग बनाया करते हैं।

ये-केतव-समुदिताः-धनजाः-वसन्ते।
अष्टादश-भमितयो-बहु-सौख्यदाः-स्युः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्मङ्गलानि-परितः-परिवर्द्धयन्ति ।
सर्वं-च-वस्तु-निवहं-हि-समर्घयन्ति ॥५॥

अर्थ—जब चैत्र, बैशाख मास में बसन्त ऋतु में केतु उदय होते हैं तो वे कुबेर के पुत्र कहलाते हैं वे १८ संख्यात्मक होते हैं बहुत सुख देने वाले सुभिक्षकारी चारों तरफ से मंगल कार्य कराने वाले वस्तु मात्र में मन्दी कारक होते हैं ये शुभ माने गये हैं।

यदा-ज्येष्ठमासे-तथाऽऽषाढ़-केऽपि ।
सदा-केतवो-विंशतिर्वायु-पुत्राः ॥
प्रचण्डा-स्स-वातात्-वहोः-वृष्टिदोषात् ।
महर्घं-विनाशं-तदा-तेऽर्पयन्ति ॥६॥

अर्थ—जब ज्येष्ठ तथा आषाढ़ मास में केतुओं का उदय होता है तो वे २० संख्यात्मक होते हैं वायु के पुत्र वे केतु कहलाते हैं तब प्रचण्ड वायु बड़े वेग के साथ झन्झावात तूफान चला करते हैं जिधर को भी वायु का वेग बढ़ जावेगा मकान वृक्ष आदि सभी पदार्थों को नष्ट करता हुआ विनाश करता हुआ चलता है और व्यापार सम्बन्धी जिन्से तेज हो जाती है इस प्रकार केतु के उदय से भी तेजी मन्दी के संकेत विद्वानों को जानने चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावी आकर्षण

प्रिय पाठक महोदय !

यह व्यापार विज्ञान का पहिला भाग है इसकी रचना तथा शैली से आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि किस प्रकार से यह लोकोपयोगी विषय प्रकाश में लाया जा रहा है, इस विषय में हम इतना कहना भी आवश्यक समझते हैं कि आरम्भिक रचना में प्रथम संस्करण में अशुद्धियां भी बहुत सी जगह रह जाती हैं तथा विषय संकलित होने पर बाद में सूझ भी काफी बनती हैं जिसको हरेक विद्वान् दूसरे ही सन्स्करण में अपनी रचना को सर्वांग सुन्दर बनाया करते हैं कुछ विषय भी दूसरे संस्करण में ही बढ़ाया जाया करता है अतः इस प्रथम भाग में जो भी त्रुटियां अथवा कमी रह गई हों विद्वान् गुणी हितैषी सज्जनों से हमारा निवेदन है कि वे अपना सुझाव हमें अवश्य भेजें जिससे हम बहुत सी कमी को तो दूसरे भाग में पूरा कर देंगे तथा भावी आकर्षण को भी अच्छा बनाने में सफल हो सकेंगे।

व्यापार विज्ञान द्वितीय भाग का भावी आकर्षण

१—१ वर्ष के ३६५ दिनों की स्थितिवश तेजी मन्दी ज्ञान।

२—६४ प्रकार के सम्वत्सरों पर व्यापार की तेजी मन्दी जानना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३—वर्षा के योगों की जानकारी से वृष्टि विज्ञान द्वारा तेजी मन्दी विचार।

४—नेपच्युन हर्षल सहित नवग्रहों का व्यापार पर प्रभाव तथा ग्रहों के पिण्डों का पूरे परिचय द्वारा व्यापार की जानकारी।

५—उत्पात उलका पात आदि विषयों की जानकारी द्वारा व्यापार के भावी रुख को जानना।

६—रुई, पाट, वारदाना, रसादि पदार्थों में किन किन ग्रहों द्वारा कोन कौन उल्लेखनीय योग पहिले किन किन सम्वत्सरों में बन चुके हैं आगे भविष्य में कब कब उस चाल के योग होंगे।

७—अनावृष्टि तथा देश में उत्पातादि उपद्रवों की उपस्थिति में देश की रक्षा के वास्ते प्रजा और राजा के कर्तव्य।

८—कृषि जन्य पदार्थों की तेजी मन्दी का ज्ञान देश काल की परिस्थिति से कैसे समझने में आवेगा यह जानकारी।

९—संकट काल में अन्नादि के स्थायी रखने के उपाय संकट काल का निवारण एवं भावी संकट को पहिले से ही जानने के सरल उपाय।

नोट—उपरोक्त भावी आकर्षणों के अतिरिक्त ग्रंथ रचना के अवसर में जहां जैसी सूझ समय पर बनती रहेगी तथा यह भी सम्भावना पूर्ण है कि व्यापार विज्ञान को दो भागों से भी ज्यादा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भागों में लाना पड़ सकता है मगर हम ज्यादा विषय बढ़ाना नहीं चाहते फिर भी आवश्यक विषयों का निवेश जरूर करेंगे जिससे जनता का तथा देश का हित होस के हमारी भारत सरकार भी इस प्रकार के प्रकाशन का स्वागत करती है ।

१—वृष्टि विज्ञान २-भूस्तर विज्ञान ३—वास्तु विज्ञान तथा ४—खगोल विज्ञान ५ टेलिस्कोप आदि यंत्रों की जानकारी के ग्रन्थ भी जिन यंत्रों के द्वारा ग्रहों का वेध होगा हम निकट भविष्य में भारत सरकार द्वारा हमारी प्रस्तुत की हुई योजना के कार्यान्वित होने से हम जन्तर मन्तर सम्बन्धि ग्रन्थ भी प्रकाशित करेंगे जिस से खगोल विज्ञान की हमारी भारतवर्षीय विशेषता से भी जनता परिचित हो सके।

आभार प्रदर्शन

व्यापार विज्ञान के लिखने में बहुत से व्यापारियों का भी आग्रह मेरे लिए आभार की वस्तु रही है साथ साथ में अपने गुरु जनों का भी विशेष आभारी हूं जिन की ज्ञान गरिमा के संस्कार से ज्यौतिष शास्त्र सम्बन्धी वैज्ञानिक साहित्य इस समय की आवश्यकता वाला हम बना रहे हैं।

[१] खगोल विज्ञान का साहित्य स्वर्गीय श्री १०८ गुरुवर्य श्री गेनालाल जी चौधरी हाभी भोआड जि० दरभंगा निवासी महोदय की कृपा द्वारा हमने सात वर्षों में उनके श्री चरणों में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहकर सन् ३० ई० से सन् १९३६ ई० तक प्राप्त किया है और ज्यौतिष मध्यमा परीक्षा से लेकर शास्त्री आचार्य कक्षा के ३ खण्ड आपके ही नाम से हमने उतीर्ण किये हैं श्री चौधरी जीमहामहोपाध्याय श्री सुधाकर जी द्विवेदी जी के शिष्य थे भारत वर्ष के बड़े ऊंचे गणितज्ञ हो चुके हैं।

[२] नवीन गणित तथा फलित शास्त्र का अध्ययन मैंने पं० श्री बलदेव मिश्र जी ज्यौतिषाचार्य जी मु० बन गांव पो० बरिआही जि० भागलपुर [बिहार] निवासी विद्वान् महोदय से काशी जी में ही सन् ३० ई० से ३६ ई० के ही समय में प्राप्त किया है पूज्य मिश्र जी अब भी जायसवाल रिसर्च इन्स्ट्रिस्यूट पटना में अनुसन्धान विभाग के विशेष कार्य कर्ता हैं।

[३] कुल गुरु हमारे स्वर्गीय पण्डित परमानन्द जी शास्त्री विद्या वाचस्पति प्रिंसिपल श्री राधाकृष्ण संस्कृत कालेज खुरजा थे, जो करीब ३० वर्ष तक प्रिंसिपल रहे हैं मैंने भी करीब १२ वर्ष श्री राधा कृष्ण संस्कृत कालेज खुरजा में ही अध्यापन भी कराया है और संस्कृत साहित्य का अध्ययन भी वहां किया है। व्यापार सम्बन्धी ज्ञान की प्रेरणा भी पण्डित परमानन्द जी से प्राप्त हुई।

[४] व्यापार सम्बन्धि ग्रन्थ लिखने की सूझ समय की आवश्यकता से हुई [दरभंगा] बिहार निवासी ज्योतिषाचार्य पन्डित मिश्रीलाल जी द्वारा भी मुझे व्यापार सम्बन्धी साहित्य के लिखने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की प्रवृति बनी है पण्डित मिश्रीलाल जी बड़े योग्य वयो वृद्ध विद्वान् हैं मेरे गुरु जी श्री गेनालाल जी चौधरी जीं के सम कालीन हैं व्यापार सम्बन्धी ज्ञान से कलकत्ता से कुछ लाभ प्राप्त करते हैं।

कलकत्ता में हमारे अभिन्न मित्र पण्डित हुकमचन्द जी पं० रामचन्द्र जी गौड़ खुरजा निवासी मालिक फर्म मक्खनलाल हुकमचन्द जी द्वारा पण्डित मिश्री लाल जी की व्यापार सम्बन्धी विशेषता का परिचय मुझे मिला; यद्यपि पण्डित मिश्री लाल जी योग्य विद्वान है परन्तु युग के अनुसार तत्परता के साथ साहित्य सृजन देश के वास्ते करने में वयो वृद्ध होने के नाते से असमर्थ हैं। हम आशा करते हैं कि वे अपना नाम भी स्थायी बनवाने में अपने ज्ञान का उपयोग जैसा जितना भी कर सके कर देवें तो हम उन्हें सहयोग देने की भी भावना रखते हैं। और भी भारत वर्ष के विभिन्न प्रान्तों में ज्यौतिष सम्बन्धी साहित्य जैसा भी जहां भी छिपा पड़ा हो उसे जो सज्जन हमारे कार्यालय में भिजवावेंगे हम भारत सरकार द्वारा तथा उसे अपनी परिषद् द्वारा भी प्रकाशित कराने का प्रयास करेंगे।

निवेदक—

विशुद्धानन्द गौड़, ज्यौतिषाचार्य

मन्त्री—
अखिल भारतवर्षीय
ज्यौतिष परिषद्

प्र० मन्त्री—
उत्तर भारतीय ज्यौतिष परिषद्

अध्यक्ष—
विज्ञान ज्योतिः कार्यालय खुरजा जि० बुलन्दशहर [उ० प्र०]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

❀ हार्दिक-धन्यवाद ❀

हमारे प्रकाशन में कुछ सहयोगी फ़र्म हैं जिनके भी नाम और पूरे पते हम छाप रहे हैं हम उनका भी हृदय से स्वागत करते हैं और उनके प्रति कृतज्ञता प्रकाशित करते हुये यह लिखना उचित समझते हैं कि आप सज्जनों का सहयोग प्रशंसनीय है यह सहयोग न केवल मुझ को अथवा पत्र को बल देगा बल्कि ज्योतिष सम्बन्धि साहित्य के प्रकाशित होने से देश सेवा भी उनकी बनेगी हम निःसन्देह देश की समृद्धि में सहयोगी साहित्य का ही प्रकाशन बढ़ा रहे हैं।

॥ अब तक के हमारे प्रकाशन के संरक्षक गण ॥

(१) पं० दुर्गादत्त जी दधिमथि ज्योतिषाचार्य काहू कोठी कानपुर।

(२) श्री हीरालाल जी मु० पो० धरंगधरा सौराष्ट्र गुजरात।

(३) मैनेजर—जगदीश भंडार अपर बाजार रांची
मु० पो० रांची बिहार।

(४) पं० बिहारीलाल जी दधिमथि,
मालिक फ़र्म—नथमलदास बिहारीलाल खुरजा (बुलन्दशहर)

(५) ला० भगतराम ओमप्रकाश जी मु० पो० संगरिया (राजस्थान)

(६) पं० जयानन्द जी अवस्थि, मैनेजर अवस्थिवाच कम्पनी
मैस्टन रोड कानपुर।

(७) ला० नन्दकिशोर जी, मालिक फ़र्म श्री रामजीलाल गिरधारीलाल
भटिण्डा (पंजाब)

उपरोक्त महानुभावों के प्रति हम हार्दिक धन्यवाद प्रकाशित करते हुये निवेदन करते हैं कि वे सदैव की भांति अपनी शुभ कामनाएँ हमारे प्रकाशन में बनाऐ रखें जिससे हम उत्साह के साथ ज्योतिष सम्बन्धि प्रकाशन को बढ़ा सकें,

न गुणी-गुणिनं-वेत्ति-गुणी गुणीषु मत्सरी
गुणी च गुणि सेवी च दुर्लभः किलभूतले ॥१॥

अतः गुणग्राही होने के नाते से हम उपरोक्त सज्जनों के प्रति कृतज्ञता प्रकाशित करते हैं।

—सम्पादक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लेखक की अन्य पुस्तकें

तथा

मिलने के पते

हमारे द्वारा प्रकाशित साहित्य

निम्नलिखित स्थानों से प्राप्त किया जा सकता है।

(१) व्यापार विज्ञान पहला भाग।
(२) भविष्य फल सं० २०१४ विक्रमी।
(३) भविष्य फल सं० २०१३ विक्रमी।
(४) विज्ञान ज्योतिः मासिक पत्र।
(५) चिन्ता दलन जन्त्री।
(६) ज्योतिष-विज्ञान।

[१] गर्ग एण्ड कम्पनी खारी बावरी देहली।
[२] श्री इण्डियनमार्केट रिपोर्ट कोरोनेशन होटल फतहपुरी देहली।
[३] देहाती पुस्तक भण्डार बड़ शाहबूला देहली।
[४] श्री कृष्ण पुस्तकालय चौक बाजार कानपुर।
[५] भगवत बुकडिपो-डिप्टीगंज बुलन्दशहर।
[६] खेलाड़ीलाल बुकसेलर कचौड़ी गली वाराणसी।
[७] विज्ञान ज्योतिः कार्यालय—नवलपुरा खुरजा।

पृष्ठ संख्या १८५ से २५८ तक, आरम्भ की भूमिका आदि के ८ पृष्ठ तथा टाईटिल के ३ पृष्ठ श्री युधिष्ठिर कुमार के प्रबन्ध से सुदर्शन प्रिंटिङ्ग वर्क्स खुरजा से मुद्रित।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh